hindi book “kiya quran ishwariya granth he? By: Dr. Zakir Nayak
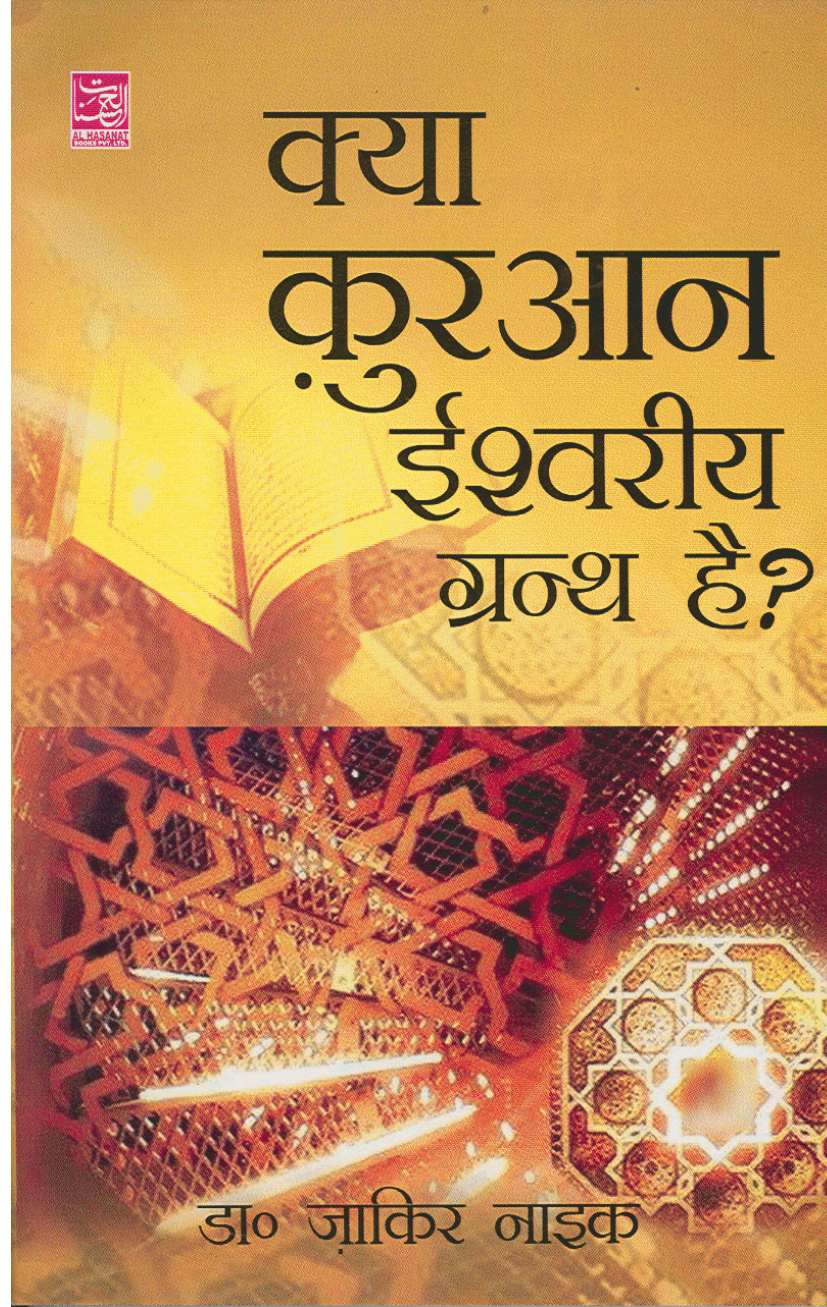
e-book by : umarkairanvi@gmail.com
islaminhindi.blogspot.com

KIYA QUR'AN
ISHWARIYA GRANTH HAI?
(Dr. ZAKIR NAIK)

संस्करण 2010

प्रकाशक:
ए०एम०फ़हीम
अल हसनात बुक्स प्रा० लि०
3004/2, सर सय्यद अहमद रोड
दरिया गंज,नई दिल्ली-110002
TeL: 011-23271845,011-41563256
E-mail:alhasanatbooks@rediffmail.com
faisalfaheem@rediffmail.com

मुद्रक
एच0 एस0 ऑफसेट प्रेस
दरिया गंज दिल्ली-2

मूल्य:
60/-

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

सम्बोधन

डॉ० ज़ाकिर नाइक

महोदय मुख्य अतिथि श्रीमान रफ़ीक़ दाद साहब, और दूसरे महमान, श्रीमान बुज़ुर्गो, भाईयों और बहनों! में आपका इस्लामी तरीक़े से स्वागत करता हूं।

अस्सलामु अलैकुम वरहमतुल्लाह वबराकातुहु!

हमारी आज की बातचीत का विषय है:

क्या क़ुरआन ईश्वरीय ग्रंथ है?

बहुत से लोग इस ग़लत फ़हमी में मुब्तला (ग्रस्त) हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम (स.अ.व.) इस्लाम धर्म के बानी (स्थापक) थे जबकि हक़ीक़त यह है कि इस्लाम तो उस समय से मौजूद है जब पहले इंसान ने इस पृथ्वी पर क़दम रखा था। अल्लाह सुब्हानहु व तआला ने ज़मीन पर कई अंबिया-ए-कराम (नबी) भेजे और उनके द्वारा अपना पैग़ाम "वही" के रूप में हम तक पहुंचाया। पिछले तमाम अंबिया-ए-कराम किसी ख़ास जाति या इलाक़े के लिए भेजे गए थे और उनका पैग़ाम ज़माने के लिहाज़ से भी एक ख़ास समय के लिए था।

यही वजह है कि इन नबियों को ख़ुदाई करिश्मे दिये गए, मिसाल के तौर पर समुद्र में रास्ता बन जाना मुर्दे को ज़िन्दा कर देना, इन ख़ुदाई करिश्मों की अवस्था भी ऐसी है कि यह उस दौर के लोगों के लिए तो सुबूत बन सकते हैं लेकिन आज यह सम्भव नहीं कि इन

करिश्मों की जांच-परख करके उन्हें साबित किया जा सके।

हज़रत मुहम्मद रसूल अल्लाह (स.अ.व.) अल्लाह तआला के आख़िरी पैग़म्बर थे। जिन्हें पूरी मानवजाति की रहनुमाई के लिए भेजा गया था। उनकी नबुव्वत हमेशा हमेशा के लिए थी। क़ुरआन मजीद की सूर:अंबियां में अल्लाह तआला फ़रमाता है:

وَمَا اَرۡسَلۡنٰکَ اِلَّا رَحۡمَةً لِّلۡعٰلَمِیۡنَ ۝ (الانبیاء-۱۰۷)

"ऐ नबी! हम ने तुम को दुनिया वालो के लिए रहमत बना कर भेजा है।"

चूंकि हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) अल्लाह तआला के आख़िरी पैग़म्बर थे और चूंकि उनका पैग़ाम पूरी मानवजाति के लिए और हर दौर के लिए था, अत: उन्हें ख़ुदाई करिश्मा भी वह दिया जाना चाहिए था जो हमेशा बाक़ी रहने वाला और हर ज़माने के लिए हो।

यही कारण है कि नबी करीम (स.अ.व.) ने कभी अपने चमत्कारों पर ज़ोर नहीं दिया हालांकि उनसे बहुत से चमत्कारों का होना साबित है जिनका विवरण हदीसों में मौजूद है। हम मुसलमान उन चमत्कारों पर ईमान रखते हैं लेकिन हम एक ही चमत्कार को फ़ख़्र के तौर पर बयान करते हैं जो अल्लाह तआला ने नबी करीम (स.अ.व.) को क़ुरआन के रूप में दिया। यह एक लगातार रहने वाला चमत्कार है। 1400 वर्ष से इसका अनोखापन आज तक क़ायम है। आज भी यह ख़ुदाई करिश्मा हमारे समाने है, आज भी इसे परखा जा सकता है, और आगे भी।

एक बात जिस पर मुसलमान और गैर-मुस्लिम दोनों ही सहमत हैं वह यह है कि क़ुरआन मजीद को एक मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह (स.अ.व.) नाम के व्यक्ति ने 7वीं सदी ई० में पहली बार मक्का नाम के शहर में बयान किया था।

क़ुरआन-ए-मजीद का साधन किया है? इस बारे में बुनियादी तौर पर तीन दृष्टिकोण पाए जाते हैं।

☆ पहला दृष्टिकोण यह है कि हज़रत मुहम्मद स.अ.व. क़ुरआन के

लेखक हैं और क़ुरआन ज्ञानता या अज्ञानता के आधार पर उनकी अपनी ही रचना है।

☆ दूसरी कल्पना यह है कि हज़रत मुहम्मद स.अ.व. ने क़ुरआन दूसरे इंसानी साधनों की मदद से या दूसरे धार्मिक ग्रंथों की सहायता से लिखा है।

☆ तीसरा दृष्टिकोण यह है कि क़ुरआन इंसानी रचना नहीं बल्कि यह "वही" की सूरत में अल्लाह सुब्हानहु तआला की ओर से उतारा हुआ है। आईए हम इन तीनों दृष्टिकोण का विश्लेषण करते हैं।

पहली कल्पना यह है कि क़ुरआन ज्ञानता, अज्ञानता या अक्ल की बुनियाद पर खुद नबी अकरम स.अ.व. की रचना है और उन्होंने खुद यह पुस्तक लिखी है। पहली बात तो यह है कि अगर कोई व्यक्ति किसी बड़े और महान काम की रचना से अलग होता है तो उसके इस दावे को झुटलाना वैसे ही एक ग़ैर ज़रूरी बात बन जाती है, लेकिन अल्लाह का इन्कार करने वाले आम तौर पर क़ुरआन के हवाले से बात करते हुए यही करते हैं। वह क़ुरआन की असल पर संदेह का इज़हार करते हुए यही दावा करते हैं कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा स.अ.व. ही क़ुरआन के लेखक हैं।

हालांकि नबी अकरम स.अ.व. ने कभी ऐसा कोई दावा नहीं फ़रमाया। उन्होंने हमेशा यही कहा है कि क़ुरआन "वही" खुदावंदी है, मंज़िल मिन अल्लाह तआला है। इसके उलट दावा करना एक सही हक़ीक़ी ज्ञान को झुटलाने वाली बात है और यह कहना है कि (नऊज़ू बिल्लाह मिन ज़ालिक) रसूल अल्लाह सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम सच नहीं बोल रहे थे।

तारीख़ हमें बताती है कि रसूल अल्लाह सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने अपनी पूरे पवित्र जीवन में कभी झूट नहीं बोला। नबुव्वत से पहले उनका जीवन 40 वर्ष के समय पर घेराव करता है। और इस पूरे समय के दौरान उन्हें एक नेक, परहेज़गार, शरीफ़ और चरित्रवान व्यक्ति के रूप में माना जाता था।

यही वजह थी कि मक्का वाले उन्हें सादिक़ (सच्चा) अमीन के लक़ब से पुकारते थे, दोस्त दुश्मन सब उनकी सच्चाई और अमानतदारी से सहमत थे।

यहां तक कि वह लोग, जिन्होंने उनके दावा-ए-नबुव्वत को नहीं माना था वह भी अपनी अमानतें उन्हीं के पास रखवाया करते थे। नबुव्वत के ऐलान के बाद भी आप स.अ.व. की अमानतदारी पर उनका विश्वास इसी तरह बरक़रार था।

इस सूरत में यह मुम्किन ही किस तरह है कि इस हद तक ईमानदार और सच्चा व्यक्ति एक झूटा दावा करे (नऊज़ू बिल्लाह) और कहे कि वह पैग़म्बर है, इस पर वही नाज़िल होती है, हालांकि वास्तव में ऐसा न हो। भला वह ऐसा क्यों करेंगे।

कुछ पूर्वी भाषाओं के जानने वालों का दावा है कि उन्होंने ऐसा प्राकृतिक लाभ की प्राप्ति के लिए किया था। दुनियावी लाभ हासिल करने के लिए नबुव्वत का दावा किया था। (नऊज़ूबिल्लाह) यक़ीनन कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो दौलत और फ़ायदों को हासिल करने के लिए नबव्वुत का झूटा दावा कर सकते हैं। ऐसे लोग बहुत आराम की ज़िन्दगी गुज़ारते हैं। ऐसे उदाहरण दुनिया भर में मौजूद हैं। ख़ास तौर से हमारे देश भारत में तो ऐसी मिसालें बहुत ही अधिक हैं।

लेकिन हज़रत मुहम्मद रसूल अल्लाह स.अ.व. का मुआमला यह है कि वह एलान-ए-नबुव्वत से पहले एक बेहतर आर्थिक जीवन गुज़ार रहे थे। उनका निकाह एक अमीर कारोबारी ख़ातून हज़रत ख़दीजा रज़ि अल्लाह तआला अन्हा से हुआ था। निकाह के समय आप स.अ.व. की उम्र सिर्फ़ 25 वर्ष थी। यानी एलान-ए-नबुव्वत से पंद्रह साल पहले।

एलान-ए-नबुव्वत के बाद आप स.अ.व. के आर्थिक हालात कभी अच्छे नहीं रहे।

इमाम अलनोवी रह० की किताब 'रियाज़ुस सालेहीन' की हदीस नम्बर 492 में कहा गया है:

"उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़िअल्लाह तआला अनहा फ़रमाती हैं कि कुछ समय ऐसा भी होता था कि दो-दो माह तक हमारे चूल्हे में आग नहीं जलती थी।"

यानी दो-दो माह तक हज़रत नबी करीम (स.अ.व.) और आप (स.अ.व.) के घर के लोग पका हुआ खाना नहीं खाते थे और सिर्फ़ पानी और खजूरों पर गुज़ारा फ़रमाया करते थे या कभी बकरी का दूध जो मदीना वाले पेश कर दिया करते थे, उस से गुज़ारा करते थे। ऐसा भी नहीं है कि किसी सीमित और कुछ समय के लिए ऐसा हुआ हो। बल्कि हज़रत मुहम्मद स.अ.व. की जीवन शैली ही ऐसी थी। रियाज़ुस सालेहीन की एक और हदीस है:

"हज़रत बिलाल रज़िअल्लाह तआला अनहु फ़रमाते हैं कि जब भी रसूल अल्लाह स.अ.व. को तोहफ़े वुसूल होते थे तो आप (स.अ.व.) तुरन्त ग़रीबों और ज़रूरतमंदों में बांट दिया करते थे, कभी अपने लिए कुछ बचाकर नहीं रखते थे।"

इस सूरतेहाल में नबी करीम स.अ.व. के हवाले से यह किस तरह सोचा जा सकता है कि "नऊज़ू बिल्लाह" आप (स.अ.व.) ने प्राकृतिक लाभों की प्राप्ति के लिए झूट बोला होगा।

क़ुरआन-ए-मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है।

فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ يَكْتُبُوْنَ الْكِتٰبَ بِاَيْدِيْهِمْ ثُمَّ يَقُوْلُوْنَ هٰذَا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ لِيَشْتَرُوْا بِهٖ
ثَمَنًا قَلِيْلًا فَوَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا كَتَبَتْ اَيْدِيْهِمْ وَوَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا يَكْسِبُوْنَ ۝ (البقرة:٧٩)

"पस हलाकत और तबाही है उन लोगों के लिए जो अपने हाथों इस्लामी क़ानून लिखते हैं, फिर लोगों से कहते हैं कि यह अल्लाह के पास से आया हुआ है ताकि इसके बदले में थोड़ा सा फ़ायदा हासिल करलें। उनके हाथों का यह लिखा भी उनके लिए तबाही का सामान है और उनकी यह कमाई भी उनके लिए मौत का कारण है।"

यह आयत उन्हीं लोगों के बारे में है जो अपने हाथों से लिख कर यह दावा करते हैं कि वास्तव में यह बात "वही" इलाही है। या वह अल्लाह की "वही" में किसी तरह की तबदीली करते हैं।

अगर इस बात की ज़रा सी भी संभावना होती कि कुरआन नबी करीम स.अ.व. की रचना है, या उसमें नबी करीम स.अ.व. ने कोई बदलाव भी किया है (नऊज़ुबिल्लाह) तो किया यह आयत कुरआन में मौजूद होती? हरगिज़ नहीं, क्योंकि इसका अर्थ तो यह होता कि हज़रत मुहम्मद रसूल अल्लाह स.अ.व. खुद अपने आप को बुरा कह रहे हों।

कुछ लोगों का दावा यह है कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा स.अ.व. ने नबुव्वत का दावा, शान व शौकत और रुत्बे व हुकूमत के लिए किया था।

लेकिन वह लोग जिन्हें रुत्बे, शान व शौकत और शक्ति व दौलत की इच्छा होती है, उनका जीवन किस तरह का होता है? वह लोग आलिशान महलों में रहते हैं, चमकीली व क़ीमती पौशाके पहनते हैं। उनके चारो ओर दरबान होते हैं। नौकर चाकर होते हैं।

और रसूल अल्लाह स.अ.व. का जीवन भी हमारे सामने है कि वह अपनी बकरी का दूध भी खुद दोहते थे। अपने कपड़े खुद सी लिया करते थे। अपनी जूती को खुद पैवंद लगा लिया करते थे यहां तक कि घर के दूसरे काम भी खुद कर लिया करते थे। उनकी जीवन शैली सादगी और सच्चाई का एक हैरत अंगेज़ नमूना थी।

आप स.अ.व. ज़मीन पर बैठते थे। बग़ैर सुरक्षा कर्मीयों के रहते थे। अकेले बाज़ार में ख़रीदारी के लिए चले जाते थे। अगर कोई ग़रीब व्यक्ति भी आप (स.अ.व) को दावत पर बुलाता तो आप (स.अ.व.) उसकी दावत रद्द न करते और जो कुछ भी दावत में मौजूद होता ख़्वाहिश और मोहब्बत के साथ खा लेते थे। यहां तक कि खुद कुरआन में अल्लाह तआला फ़रमाता है।

وَمِنْهُمُ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ النَّبِيَّ وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ اُذُنٌ قُلْ اُذُنُ
خَيْرٍ لَّكُمْ يُؤمِنُ بِاللّٰهِ وَيُؤمِنُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
مِنْكُمْ وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ رَسُوْلَ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ٥ (التوبة:٦١)

"उनमें से कुछ लोग हैं जो अपनी बातों से नबी स.अ.व. को दुख देते हैं और कहते हैं कि यह व्यक्ति कानों का कच्चा है। कहो, वह तुम्हारी भलाई के लिए ऐसा है। अल्लाह पर ईमान रखता है और ईमान वालों पर भरोसा करता है और सरासर रहमत है उन लोगों के लिए जो तुम में से ईमानदार है। और जो लोग अल्लाह के रसूल (स.अ.व.) को दुख देते हैं, उनके लिए दर्दनाक सज़ा है।"

एक बार कुफ़्फ़ार की ओर से अत्बा नाम का एक सरदार नुमाइंदा (प्रतिनिधि) बन कर रसूल अल्लाह (स.अ.व.) के पास आया और कहा कि "अगर तुम ने नबुव्वत का दावा दौलत के लिए किया है तो हम तुम्हारे क़दमों में दौलत का ढेर लगा देते हैं, अगर हुकूमत के लिए किया है तो हम तुम्हें अरबों का बादशाह बना लेते हैं, मगर बात यह है कि तुम पैग़ाम-ए-तौहीद से हट जाओ।" लेकिन रसूल अल्लाह (स.अ.व.) ने उसकी बात मानने से इन्कार कर दिया।

इसी तरह एक बार खुद रसूल अल्लाह (स.अ.व.) के चचा अबू तालिब ने भी कोशिश की कि आप (स.अ.व.) अपना पैग़ाम फैलाने से बाज़ आ जाएं लेकिन अल्लाह के रसूल स.अ.व. ने जवाब दिया:

"ऐ चचा, अगर यह लोग मेरे दाएं हाथ में सूरज और बाएं हाथ में चांद भी रख दें, फिर भी मैं यह जद्दोजहद (कोशिश) नहीं छोड़ूंगा, यहां तक कि मुझे मौत आ जाए।"

एक ऐसे व्यक्ति को इस क़द्र तकलीफ़ और कुरबानी वाली ज़िन्दगी गुज़ारने की ज़रूरत ही किया थी। वह चाहते तो अपनी मर्ज़ी का जीवन गुज़ार सकते थे।

इसके अलावा, आप (स.अ.व.) की शख़्सियत में इतनी सच्चाई और शराफ़त थी कि आप (स.अ.व.) ने अपनी हर सफ़लता के अवसर पर यही फ़रमाया कि यह अल्लाह की ओर से है, मेरी ज़ाती सलाहियत की वजह से नहीं है।

कुछ पूर्वी भाषाओं के ज्ञानियों ने एक नई बात पेश कर दी है। यह लोग कहते हैं कि रसूल अल्लाह (स.अ.व.) वास्तव (नऊज़ुबिल्लाह) एक दिमाग़ी बिमारी में मुब्तिला थे। इस बीमारी को

(Mythomania) कहते हैं और इसमें मुब्तिला व्यक्ति झूट बोलता है, लेकिन इसे खुद अपने झूट पर पूरा यक़ीन होता है। अत: इन पूर्वी भाषाओं के ज्ञानियों का कहना (नऊज़ूबिल्लाह) यह है कि पैग़म्बर इस्लाम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (स.अ.व.) झूट बोलते थे लेकिन उन्हें खुद इस पर पूरा यक़ीन होता था।

अगर एक मनोवैज्ञानिक ने **(Mythomania)** में ग्रस्त रोगी का ईलाज करना हो तो वह किया करेगा? उसे सिर्फ़ इतना करना होगा कि रोगी को वास्तविकता का सामना करने पर मजबूर कर दे। मिसाल के तौर पर मान लीजिए कि एक व्यक्ति कहता है कि वह शाहे इंग्लिस्तान है। डॉ० उसे यह नहीं कहेगा कि तुम दीवाने हो चुके हो बल्कि वह उससे प्रश्न करेगा कि अच्छा अगर तुम शाहे इंग्लिस्तान हो तो बताओ तुम्हारी रानी कहां है? तुम्हारे मंत्री और दरबारी कहां हैं? दरबान और सिपाही कहां हैं? डॉक्टर जब हक़ीक़त उसके सामने लाता जाएगा तो आख़िरकार **(Mythomania)** का रोगी ख़ुद ही कह देगा कि "मेरा ख़याल है कि में शाहे इंग्लिस्तान नहीं हूं।"

यही काम क़ुरआन करीम करता है, क़ुरआन लोगों के सामने हक़ीक़ते रखता है फिर उनसे सवालात करता है। यानी हक़ीक़त में पैग़म्बर-ए-इस्लाम (स.अ.व.) (नऊज़ूबिल्लाह) **Mythomania** नहीं थे बल्कि वास्तव में पैग़म्बर (स.अ.व.) का इन्कार करने वाले इस बीमारी में मुब्तिला (ग्रस्त) हैं। क्योंकि वह पैग़म्बर (स.अ.व.) की दावत का इन्कार कर रहे हैं और अपने इस ग़लत बयान पर यक़ीन भी रखते हैं। क़ुरआन इन लोगों के सामने सवालात रखता है कि अगर तुम्हें शक है, अगर तुम इसे हक़ नहीं समझते तो फिर ऐसा करो...... और ऐसा करो, या अगर क़ुरआन अल्लाह की ओर से न होता फिर यूं होता। क़ुरआन ऐसे कई सवालात करता है, जिन के बारे में हम इन्शाहअल्लाह आगे बातचीत करेंगे।

कुछ लोगों का दृष्टिकोण यह है कि क़ुरआन वास्तव में एक ऐसी धार्मिक कल्पना है या अज्ञानता की कल्पनाओं का मजमूआ है। यह

लोग कहते हैं कि (नऊज़ूबिल्लाह) रसूल अल्लाह (स.अ.व.), अज्ञानता के तौर पर अपनी कल्पनाएं क़ुरआन के रूप में पेश कर देते थे। यह लोग तो यहां तक कह देते हैं कि रसूल अल्लाह (स.अ.व.) का दिमाग़ी संतुलन ही ठीक नहीं था। (नऊज़ूबिल्लाह मिन ज़ालिक)

यह लोग एक बुनियादी हक़ीक़त नज़र अंदाज़ कर देते हैं और वह हक़ीक़त यह है कि क़ुरआन एक बार ही नहीं उतरा था। क़ुरआन के उतरने का समय 23 वर्ष के लम्बे समय पर आधारित है। अगर क़ुरआन रसूल अल्लाह (स.अ.व.) ने एक ही बार पेश किया होता तो इन एतराज़ करने वालों को यह बात करने का मौक़ा मिल भी सकता था। लेकिन क़िस्सा यह है कि क़ुरआन 23 साल के समय में धीर-धीरे उतरा था। अगर यह अज्ञानता की कल्पनाओं का मजमूआ होता तो इसमें यकसानियत और रवानी का होना सम्भव ही नहीं था। अगर इन लोगों के दावे के अनुसार क़ुरआन-ए-हकीम आहज़रत (स.अ.व.) के अज्ञानता की कल्पनाओं और आप (स.अ.व.) के दिमाग़ी हालात का नतीजा होता (नऊज़ूबिल्लाह) तो उसमें टकराव मौज़ूद होता। दूसरी बात यह कि 23 साल तक लगातार एक बात करना, एक दावा करना और उस पर लगातार क़ायम रहना सम्भव ही नहीं है, अगर यह दावा सिर्फ़ अज्ञानता की कल्पनाओं का नतीजा होता। क़ुरआन खुद ऐसे किसी दावे को रद्द करने के लिए काफ़ी सुबूत रखता है। मिसाल के तौर पर क़ुरआन कई ऐतिहासिक घटनाओं का हवाला देता है जो उस समय किसी के ज्ञान में नहीं थीं लेकिन सही साबित हुए।

इसी तरह क़ुरआन-ए-मजीद कई पेशगोईयां भी करता है और यह तमाम पेशगोईयां एक-एक शब्द सच्ची साबित हुई है। इसी तरह ऐसी कई वैज्ञानिक हक़ीक़तों का ज़िक्र क़ुरआन मजीद में मौजूद है जो उस समय लोगों के ज्ञान में नहीं थीं लेकिन आज की जांच से प्रमाणित हो चुकी हैं। और यह सम्भव ही नहीं कि अज्ञानता की कल्पनाओं की मदद से इस प्रकार की पैशगोईयां की जा सकें।

खुद कुरआन इस बात की गवाही सूर:एराफ़ में इस तरह देता है।

اَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوْا مَا بِصَاحِبِهِمْ مِّنْ جِنَّةٍ اِنْ هُوَ اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ٥ (الاعراف:١٨٤)

"और किया इन लोगों ने कभी सोचा नहीं? इनके रफ़ीक़ पर जुनून का कोई असर नहीं है वह तो एक ख़बरदार करने वाला है जो (बुरा अंजाम सामने आने से पहले) साफ़-साफ़ इशारा कर रहा है।"

इसी तरह सूर:अल-क़लम में अल्लाह तआला फ़रमाता है:

مَآ اَنْتَ بِنِعْمَتِ رَبِّكَ بِمَجْنُوْنٍ ٥ (القلم:٢)

"तुम अपने रब के फ़ज़्ल से बेगाने नहीं हो।"

आगे फ़रमाया गया:

وَمَا صَاحِبُكُمْ بِمَجْنُوْنٍ ٥ (التكوير:٢٢)

"और (ऐ एहले मक्का) तुम्हारा रफ़ीक़ अंजान नहीं है।"

अत: कोई व्यक्ति झूट किस तरह बोलेगा?

यहां तमाम दृष्टिकोण का ज़िक्र करना सम्भव नहीं है। लेकिन प्रश्नों के (विराम) के दौरान आप सवालात कर सकते हैं और इन्शाअल्लाह मैं जवाब देने की पूरी कोशिश करूंगा।

दूसरी धारणा यह है कि पैगम्बर इस्लाम (स.अ.व.) ने कुरआन दूसरे धार्मिक ग्रंथों की सहायता से या मानवीय साधनों की मदद से लिखा है। (नऊज़ूबिल्लाह) इस दृष्टिकोण को ग़लत साबित करने के लिए तो एक ऐतिहासिक हक़ीक़त पेश कर देना ही काफ़ी है। और वह हक़ीक़त यह है कि हमारे महबूब पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (स.अ.व.) पढ़ना लिखना जानते ही नहीं थे।

अल्लाह तआला फ़रमाता है

وَمَا كُنْتَ تَتْلُوْا مِنْ قَبْلِهٖ مِنْ كِتٰبٍ وَّلَا تَخُطُّهٗ بِيَمِيْنِكَ اِذًا لَّارْتَابَ الْمُبْطِلُوْنَ ٥ (العنكبوت:٤٨)

"(ऐ नबी! स.अ.व.) तुम इससे पहले कोई किताब नहीं पढ़ते थे और न अपने हाथ से लिखते थे, अगर ऐसा होता तो झूटे लोग शक में पड़ सकते थे।"

अल्लाह सुबहानहु तआला के ज्ञान में था कि लोग कुरआन के बारे में शक करेंगे और यही कारण है कि अल्लाह ने अपने आख़िरी

पैग़म्बर (स.अ.व.) को "उम्मी" यानी रस्मी तालीम से परिचित न होने की हैसियत से नबी बना कर भेजा।

दूसरी तरह से यह बात ज़रूर की जाती, झूटे लोग, ऐसी बाते ज़रूर करते या उन्हें ऐसी बातें करने का मौक़ा ज़रूर मिल जाता। अगर रसूल अल्लाह स.अ.व. पढ़े लिखे होते तो ग़लत सोच रखने वाले लोग ज़रूर यह दावा करने की कोशिश करते कि (नऊज़ूबिल्लाह) आप (स.अ.व.) ने किसी इंसानी साधन से यह मालूमात हासिल करके कुरआन की सूरत में पेश कर दी हैं।

लेकिन अल-हम्दुलिल्लाह इन ऐतराज़ करने वालों के पास ऐसी कोई गुंजाईश नहीं। इस ग़लत धारणा की हैसियत कुछ भी नहीं है।

कुरआन-ए-मजीद की सूर:सिजदा में अल्लाह तआला फ़रमाता है।

الٓمّٓ ٥ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ٥ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ بَلْ هُوَ الْحَقُّ
مِنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ٥ (السجدہ:٣-١)

"अलिफ़-लाम-मीम- यह किताब निसंदेह अल्लाह तआला की ओर से उतरी है। किया यह लोग कहते हैं कि इस व्यक्ति ने इसे ख़ुद घढ़ लिया है? नहीं बल्कि यह हक़ है तेरे रब की ओर से ताकि तू सचेत करे एक ऐसी जाति को जिसके पास तुझ से पहले कोई आगाह करने वाला नहीं आया, शायद कि वह हिदायत पा जाएं।"

कुरआन के बयान का तरीक़ा दूसरे धार्मिक ग्रंथों के अनुवाद से बिल्कुल अलग है। दूसरी धार्मिक किताबें दास्तानी अंदाज़ लिए हुए होती हैं। किसी इंसान की लिखी हुई दास्तान का प्रारम्भ का अंदाज़ किया होता है? ज़्यादातर यह इस तरह शुरू होती हैं।

"एक दफ़ा का ज़िक्र है................."

इसी तरह अगर आप दूसरे धार्मिक मूल ग्रंथों का अध्ययन करें तो आप देखेंगे कि उनकी शुरूआत भी कुछ इसी तरह होती है।

"सब से पहले ख़ुदा था, उसने ज़मीन और आसमान को पैदा किया................."

या यह कि:

"सबसे पहले शब्द था................."

लेकिन क़ुरआन का अंदाज़ इस इंसानी अंदाज़ से बिल्कुल अलग है। इसी तरह अगर आप दूसरी धार्मिक किताबों का अध्ययन करें तो आप देखेंगे कि इन में एक ख़ास तरतीब से क़िस्से बयान किए जाते हैं, अगर किसी व्यक्ति का ज़िक्र है तो उसके ख़ानदान का ज़िक्र होगा, उसकी औलाद का बयान होगा और उसी तरह एक के बाद एक क़िस्से बयान होते चले जाएंगे। पहला अध्याय फिर दूसरा अध्याय इसी तरह आख़िर तक तरतीब होगी।

क़ुरआन भी लोगों के बारे में, उनके ख़ानदानों के बारे में बात करता है लेकिन क़ुरआनी अंदाज़, इंसानी अंदाज़ से बिल्कुल अलग है। किसी इंसान की लिखी हुई कहानियों की किताब से बिल्कुल अलग है। क़ुरआन अपना एक अलग बयान का अंदाज़ रखता है। यह एक अलग किताब है।

जब लोग क़ुरआन को इंसानी रचना साबित करने में असफ़ल हो जाते हैं तो फिर एक नया दावा लेकर सामने आ जाते हैं यह धोखा है। उनहें अपनी बात साबित करने के लिए कोई मामूली सा सबूत भी नहीं मिलता। मगर यह लोग फिर भी अपनी बात पर अड़े रहते हैं और ख़ुद को धोका देते रहते हैं।

इन लोगों की मिसाल कुछ इस तरह है कि मान लीजिए मुझे यक़ीन हो गया है कि कोई व्यक्ति मेरा दुश्मन है। मेरे पास इस बात के लिए कोई सुबूत या गवाही भी नहीं है। लेकिन फिर भी मुझे इस बात पर पूरा यक़ीन है, अतः जब भी वह व्यक्ति मेरे सामने आता है मैं उसके साथ दुश्मनों वाला व्यवहार ही करता हूं। जवाबी तौर पर उसका व्यवहार भी मेरे साथ ख़राब हो जाता है, आख़िरकार वह भी मुझ से दुश्मनों की तरह पेश आने लगता है और फिर मैं कहता हूं:

"देखा! मैं तो पहले ही कहता था कि यह व्यक्ति मेरा दुश्मन है क्योंकि वह मुझ से दुश्मानों की तरह पेश आ रहा है।"

सो होता यह है कि लोग एक ग़लत बात मान लेते हैं और फिर कमअक़्लों की तरह इस पर अड़े रहते हैं। क़ुरआन का कहना है कि "वही" इंसानी अक़्ल के अनुसार है लेकिन कुछ लोग यह दावा करते

हैं कि पवित्र मूल ग्रंथ इंसानी अक़्ल से दूर हैं। अगर यह पवित्र मूल ग्रंथ हमारी अक़्ल से दूर हैं तो फिर उन्हें समझना क्यों कर सम्भव होगा? यह किस तरह मालूम किया जा सकेगा कि कौन सा धार्मिक पवित्र मूल ग्रंथ वाक़ई **"वही"** ख़ुदावंदी है और कौन सा नहीं?

क़ुरआन तो ख़ुद अपने पढ़ने वाले को सोच-विचार की दावत देता है। क़ुरआन मुकालमे (सवाल-जवाब) को बढ़ावा देता है। बहुत से मुसलमान यह महसूस करते हैं कि धार्मिक बहस से बचना चाहिए और जहां मुआमला धर्म का हो, किसी भी तरह की बहस से परहेज़ ही बेहतर है, लेकिन अफ़सोस के साथ कहना पड़ता है कि उनका यह व्यवहार ग़लत है।

क़ुरआन मजीद की सूरःनहल मे अल्लाह तआला फ़रमाता है:

اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ۝ (النحل:١٢٥)

"(ऐ नबी स.अ.व.) अपने रब के रास्ते की तरफ़ दावत दो, अक़्ल और बहतरीन नसीहत के साथ और लोगों से बहस करो ऐसे तरीक़े पर जो बहतरीन हो। तुम्हारा रब बेहतर जानता है कि कौन उसकी राह से भटका हुआ है और कौन राहे रास्त (सच्चे रास्ते) पर है।"

चुनांचे हमें हैरत नहीं होनी चाहिए कि अरबी शब्द (क़ालू) क़ुरआन मजीद में 332 बार आया है। इस शब्द का अर्थ है "वह कहते हैं" और इसी तरह शब्द (क़ुल) भी इतनी ही बार यानी 332 बार क़ुरआन में आया है, इस शब्द का अर्थ है "कहो"। इससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि क़ुरआन मकालमे और मुबाहिसे (सवाल-जवाब) की हौसला अफ़ज़ाई यानी बढ़ावा देता है।

एक दृष्टिकोण यह है जिसे **"Exhausting the alternatives"** कहा जाता है। यानी किसी दावे के बदले तमाम दावे ख़त्म कर देना, बदलाव वाली सूरतें ख़त्म कर देना, इस तरह असल दावा ख़ुद ब ख़ुद साबित हो जाता है। क़ुरआन कहता है कि वह कलाम-ए-ख़ुदावंदी है, अगर तुम यह बात नहीं मानते तो बताओ यह क्या है? आप इसके

बदले दावा करते हैं, कुछ लोग कहते हैं यह रसूल अल्लाह (स.अ.व.) की रचना है, क़ुरआन इस बात को ग़लत साबित कर देता है, कुछ लोग कहते हैं (नऊज़ुबिल्लाह) आप (स.अ.व.) ने ज़ाती लाभों के लिए क़ुरआन पेश किया था और यह दावा भी बिल्कुल ग़लत साबित होता है। इसी तरह विभिन्न अदल-बदल की सूरतें पेश होती और रद्द होती चली जाती हैं और तमाम इसके बदल वाले दावे रद्द होने के बाद इस सवाल का एक ही जवाब बाक़ी रह जाता है कि यह किताब अल्लाह की ओर ले जाने वाली है, कलाम-ए-ख़ुदावंदी है क्योंकि अगर ऐसा नहीं तो फिर यह किया है?

सूर:जासिया में फ़रमाया गया:

حٰمٓ ۝ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ۝ (الجاثية:٢-١)

"हा-मीम-इस किताब को अल्लाह की तरफ़ से उतारा गया है जो ज़बरदस्त और हकीम (अक़्ल वाला) है।"

यह बात बार-बार दोहराई गई है। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

وَاُوْحِيَ اِلَيَّ هٰذَا الْقُرْاٰنُ لِاُنْذِرَكُمْ بِهٖ وَمَنْۢ بَلَغَ ط ۝ (الانعام:١٩)

"और यह क़ुरआन मेरी तरफ़ "वही" के ज़रिए भेजा गया है ताकि तुम्हें और जिस-जिस को यह पहुंचे, सब को सचेत कर दूं।"

ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ط (يوسف:١٠٢)

(ऐ नबी! स.अ.व.)! यह क़िस्सा ग़ैब की ख़बरों में से है जो हम तुम पर "वही" कर रहे हैं।

طٰهٰ مَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لِتَشْقٰٓى ۝ اِلَّا تَذْكِرَةً لِّمَنْ يَّخْشٰى ۝ (طٰه:٣-١)

"ता हा- हम ने यह क़ुरआन तुम पर इस लिए नहीं उतारा है कि तुम मुसीबत में पड़ जाओ। यह तो एक याददहानी है हर उस व्यक्ति के लिए जो डरे।"

وَاِنَّكَ لَتُلَقَّى الْقُرْاٰنَ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ عَلِيْمٍ ۝ (النمل:٦)

"बेशक तुम यह क़ुरआन एक हकीम व अलीम (अक़्ल वाला व जानने वाला) हस्ती की तरफ़ से पा रहे हो।"

"सूर:सिजदा में अल्लाह तआला फ़रमाता है:

الٓمّٓ ۝ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اَتٰهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ۝ (السجده:٣-١)

"अलिफ़-लाम-मीम- इस किताब को बेशक अल्लाह की तरफ़ से उतारा गया है। क्या यह लोग कहते हैं कि इस व्यक्ति ने उसे ख़ुद घढ़ लिया है? नहीं बल्कि यह हक़ है तेरे रब की तरफ़ से ताकि तू सचेत करे एक ऐसी जाति को जिसके पास तुझ से पहले कोई आगाह करने वाला नहीं आया, शायद कि वह हिदायत पा जाएं।"

इसी तरह सूर:यासीन में फ़रमाया गया:

يٰسٓ ۝ وَالْقُرْاٰنِ الْحَكِيْمِ ۝ اِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝ تَنْزِيْلَ الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ ۝ (يٰسٓ:٥-١)

"यासीन- क़सम है क़ुरआन हकीम की कि तुम यक़ीनन रसूलों में से हो, सीधे रास्ते पर हो (और यह क़ुरआन) ग़ालिब और रहीम हस्ती का उतारा हुआ है।"

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ۝ (الزمر:١)

"इस किताब का उतरना, अल्लाह ज़बरदस्त और दाना (अक़्ल वाला) है।"

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ۝ (الجاثيه:١)

"इस किताब का उतरना, अल्लाह की तरफ़ से है जो ज़बरदस्त अक़्लवाला है।"

اَلرَّحْمٰنُ ۝ عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ ۝ (الرحمٰن:١)

"बहुत मेहरबान (अल्लाह) ने इस क़ुरआन की शिक्षा दी है।"

اِنَّهٗ لَقُرْاٰنٌ كَرِيْمٌ ۝ فِيْ كِتٰبٍ مَّكْنُوْنٍ ۝ لَّا يَمَسُّهٗٓ اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ ۝ تَنْزِيْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ (الواقعه:٨٠-٧٧)

"यह बुलन्द पाया क़ुरआन है। एक सुरक्षित किताब में लिखी हुई, जिसे पाक लोगों के सिवा कोई छू नहीं सकता। यह रब्बुल आलामीन का उतारा हुआ है।"

اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ تَنْزِيْلًا ۝ (الدهر:٢٣)

"(ऐ नबी!) हम ने ही यह क़ुरआन तुम पर थोड़ा-थोड़ा करके उतारा है।"

इसी तरह कई दूसरी जगहों पर भी यही फ़रमाया है कि कुरआन हक़ीक़त में अल्लाह तआला की तरफ़ से उतारा हुआ है। और अगर ऐसा नहीं है तो फिर बताओ यह किया है?

साइंसी दृष्टिकोण से देखा जाए तो साइंस की दुनिया की एक अपनी विधि है। किसी नए दृष्टिकोण के बारे में इनका बरताव यह होगा कि अगर उसका कोई जवाबी इम्तिहान नहीं हो सकता तो वह इस दृष्टिकोण पर ध्यान ही नहीं देंगे।

तफ़सील में जाने का समय मेरे पास नहीं है। मुख़्तसर तौर पर समझ लीजिए कि यह दृष्टिकोण झूट (Falsification) कहलाता है वैज्ञानिक कहते हैं कि अगर आप नए दृष्टिकोण का Falsification Test नहीं कर सकते तो फिर हमारा वक़्त बरबाद न करें।

यही वजह है कि 20वीं सदी में जब ऑयन स्टाइन ने एक नया दृष्टिकोण पेश किया तो साथ ही उसने तीन Falsification Test भी पेश कर दिए कि अगर मेरा दृष्टिकोण सही नहीं है तो इन तीन तरीक़ों से उन दृष्टिकोण को ग़लत साबित कर दिया जाए, यानी यह तीन इम्तिहान ऐसे हैं जिन से दृष्टिकोण के सही या ग़लत होने का पता चलाया जा सकता है।

और वैज्ञानिकों ने 6 वर्ष तक विचार करने के बाद माना कि हां एल्बर्ट ऑयन स्टाइन का दृष्टिकोण सही है। इस तरह यह साबित नहीं होता कि वह कोई महान व्यक्ति है लेकिन यह ज़रूर साबित हो जाता है कि दृष्टिकोण ग़ोर करने योग्य और ध्यान देने लायक़ है।

कुरआन के मुआमले में ने ऐसे फई "झूटे इम्तिहान" Falsification Test मौजूद हैं अगर आगे आप की किसी से धर्म के बारे में बातचीत हो तो एक प्रश्न अवश्य करें कि "क्या उसके पास कोई ऐसा इम्तिहान है जिसकी सहायता से उसके धर्म को ग़लत साबित किया जा सकता हो?"

यक़ीन कीजिए मैं ने कई लोगों से यह सवाल किया है और आज तक किसी ने यह जवाब नहीं दिया कि हां मेरे पास अपने धर्म को ग़लत साबित करने के लिए कोई इम्तिहान मौजूद है।

लेकिन कुरआन का मुआमला अलग है कुरआन ऐसें कई पैमाने, ऐसे जवाबी इम्तिहान पेश करता है। उनमें से कुछ तो सिर्फ़ गुज़रे ज़माने के लिए है जबकि कुछ हर ज़माने के लिए हैं।

मैं आप के सामने चन्द मिसाले पेश करना चाहूंगा। रसूल अल्लाह (स.अ.व.) के एक चचा का नाम अबू लहब था। उसकी गिनती पैग़म्बर-ए-इस्लाम (स.अ.व.) के सख़्त विरोधियों में होती थी। उसकी आदत यह थी कि रसूल अल्लाह (स.अ.व.) का पीछा करता, और जब भी रसूल अल्लाह (स.अ.व.) को किसी अजनबी से बात करते देखता तो उनके जाने के बाद उससे पूछता कि मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह (स.अ.व.) ने तुम से किया बात की है? और उसके उलट बातें करता। अगर रसूल अल्लाह (स.अ.व.) ने कहा होता कि दिन है तो यह कहता कि रात है। यानी हर बात का विरोध करता।

कुरआन-ए-मजीद में सूर:लहब नाम की एक पूरी सर: मौजूद है इस सूर: में फ़रमाया गया है कि अबू लहब और उसकी बीवी को उनके कर्मों के कारण जहन्नम की भड़कती हुई आग में डाला जाएगा। गोया सीधे तरीक़े से यह कह दिया गया है कि वह कभी मुसलमान नहीं होगा, काफ़िर ही रहेगा।

यह सूर:अबू लहब की मौत से कोई दस वर्ष पहले उतरी थी। यानी इस सूर: के उतरने के बाद दस साल तक अबू-लहब ज़िन्दा रहा। इस समय में अबू-लहब के दोस्तों में से बहुत लोग मुसलमान हो गए, जो ख़ुद भी उसकी तरह इस्लाम और पैग़म्बर इस्लाम (स.अ.व.) के विरोधी थे।

चूंकि अबू-लहब रसूल अल्लाह (स.अ.व.) की हर बात का विरोध करता था, हर बात को ग़लत साबित करने की कोशिश करता था, अत: इसे सिर्फ़ इतना ही करना था कि इस्लाम क़ुबूल करने का एलान कर देता। इसे इस्लाम के अनुसार ज़िन्दगी गुज़ारने की अवश्यकता न थी, मुसलमानों वाली आदतों को अपनाना ज़रूरी न था, सिर्फ़ इस्लाम स्वीकार करने का ऐलान करके वह रसूल अल्लाह

(स.अ.व.) को (नऊज़ुबिल्लाह) ग़लत साबित कर सकता था। वह दावा करता था कि मैं मुसलमान हूं और क़ुरआन को ग़लत क़रार दे देता। यह काम उसके लिए बेहद आसान था। वह पहले भी झूटी बातों से काम लेता था। एक झूट बढ़ाकर ही तो बोलना था।

यह ऐसा ही था जैसे रसूल अल्लाह (स.अ.व.) इसे खुद दावत दे रहे हों कि तुम मेरे दुश्मन हो, मुझे ग़लत साबित करना चाहते हो तो आओ! इस्लाम क़ुबूल करने का ऐलान करो और मुझे ग़लत साबित कर दो!

यह काम बेहद आसान था लेकिन वह नहीं कर पाया। यह बात ज़ाहिर है कि कोई इंसान अपनी किताब में ऐसा दावा करने की, ऐसा बयान देने की हिम्मत नहीं कर सकता। यह यक़ीनन कलाम-ए-ख़ुदावंदी है।

इसी तरह एक और मिसाल सूर:बक़राह में हमारे सामने आती है। यहां अल्लाह सुबहानहु तआला फ़रमाता है:

قُلْ اِنْ كَانَتْ لَكُمُ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ عِنْدَاللّٰهِ خَالِصَةً مِّنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ وَلَنْ يَّتَمَنَّوْهُ اَبَدًا بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ بِالظّٰلِمِيْنَ ۝ (البقرة:٩٠-٩٤)

"इन से कहो कि अगर वाक़ई अल्लाह के नज़दीक आख़िरत (परलोक) का घर तमाम इंसानों को छोड़ कर सिर्फ़ तुम्हारे लिए ही मख़्सूस है, तब तो तुम्हें चाहिए कि मौत की तमन्ना करो, अगर तुम अपने इस ख़याल में सच्चे हो, यक़ीन जानो कि यह कभी इसकी तमन्ना नहीं करेंगे, इस लिए कि अपने हाथों से उन्होंने जो कुछ कमा कर वहां भेजा है, उसका तक़ाज़ा यही है (कि यह वहां जाने की तमन्ना करें) अल्लाह इन ज़ालिमों के हाल से ख़ूब परिचित है।"

मुसलमानों और यहूदियों के बीच एक बातचीत में यहूदियों ने यह दावा किया था कि आख़िरत (परलोक) का घर यानी जन्नत सिर्फ़ उन्हीं के लिए है, किसी और के लिए नहीं, इसके बाद ऊपर लिखी आयत उतरी जिसमें फ़रमाया गया कि अगर वाक़ई जन्नत सिर्फ़ यहूदियों के लिए मख़्सूस है और वही जन्नत में जाएंगे तो फिर तुम्हें चाहिए कि मौत की तमन्ना करो, मरने की ख़्वाहिश करो।

इस मौक़े पर सिर्फ़ इतना ही करना था कि यहूदियों में से एक व्यक्ति सामने आता और कहता कि हां मैं मरने की तमन्ना रखता हूं। सिर्फ़ दावा ही तो करना था। मरना ज़रूरी नहीं था सिर्फ़ ज़बानी कहना था कि मैं मरना चाहता हूं और वे क़ुरआनी बयान को ग़लत साबित करने की कोशिश कर सकते थे। लेकिन कोई यहूदी आगे नहीं बढ़ा, किसी ने यह बयान नहीं दिया कि हां मैं मौत की तमन्ना रखता हूं।

यह बड़ा स्पष्ट जवाबी बयान **Falsification Test** था जो क़ुरआन ने पेश किया।

लेकिन हो सकता है आप मुझ से कहें कि यह तमाम बातें गुज़रे हुए ज़माने की हैं, यह इम्तिहान लेना तो गुज़रे ज़माने में ही सम्भव था। क्या आज के लिए भी कोई ऐसा इम्तिहान मौजूद है जिसकी मदद से क़ुरआन को (माअज़अल्लाह) ग़लत साबित किया जा सके।

यक़ीनन ऐसे **Falsification Test** भी हैं जो हर दौर और हर ज़माने के लिए हैं जो आज से 1400 वर्ष पहले के लिए भी थे, आज के लिए भी काम में आने वाले हैं और आने वाले ज़मानों में भी रहेंगे। मिसाल के तौर पर, बहुत से लोग यह दावा करते हैं कि क़ुरआन कलाम-ए-ख़ुदावंदी नहीं है। क़ुरआन ऐसे लोगों के बारे में कहता है।:

قُلْ لَّئِنِ اجْتَمَعَتِ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلٰٓى اَنْ يَّاْتُوْا بِمِثْلِ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لَا يَاْتُوْنَ بِمِثْلِهٖ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِيْرًا ۝ (بنی اسرائیل:٨٨)

"कह दो कि अगर इंसान और जिन सब के सब मिल कर इस क़ुरआन जैसी कोई वस्तु लाने की कोशिश करें तो न ला सकेंगे, चाहे वह सब के सब एक दूसरे के सहायक ही क्यों न हों।"

इस आयत-ए-करीमा में एक चुनौती दी गई है कि अगर पूरी मानवजाति और सारे जिन्नात मिल कर क़ुरआन जैसी एक किताब बनाना चाहें तो वह सफ़ल नहीं हो सकते, चाहे वह एक दूसरे के सहायक ही क्यों न हों। क़ुरआन का मुआमला यह है कि मुसलमान और ग़ैर-मुस्लिम दोनों इस बात पर सहमत हैं कि क़ुरआन इस संसार

में अरबी भाषा व सभ्यता का बेहतरीन नमूना है।

क़ुरआनी अरबी इस क़द्र साफ़, समझने योग्य और चमत्कारी है कि जिसकी मिसाल नहीं मिलती और इसके बावजूद क़ुरआन का हर बयान हक़ और सच्चाई के अनुसार होता है।

यह ज़बान व बयान का बेहतरीन अंदाज़ है जो इसको "वही" खुदावंदी साबित करता है, क़ुरआन की हर आयत एक आम आदमी पर भी प्रभाव डालती है और एक पढ़े-लिखे आदमी को भी प्रभावित करती है। हालांकि क़ुरआन शायरी भी नहीं। यह वज़न और क़ाफ़िया-रदीफ़ से भी काम नहीं लेता। यह हक़ीक़ी अर्थों में खुदाई करिश्मों की एक किताब है।

यह चुनौती क़ुरआन में दोबारा, इन शब्दों में दी गई है:

اَمْ يَقُوْلُوْنَ تَقَوَّلَهٗ بَل لَّا يُؤْمِنُوْنَ ٥ فَلْيَاْتُوا بِحَدِيْثٍ مِّثْلِهٖ اِنْ كَانُوْا صَادِقِيْنَ ٥ (الطور:۳۳:۳۴)

"क्या यह कहते हैं कि इस व्यक्ति ने यह क़ुरआन ख़ुद घड़ लिया है? असल बात यह है कि यह ईमान नहीं लाना चाहते, अगर यह अपनी इस बात में सच्चे हैं तो इसी शान का एक कलाम बना लाएं।"

इस आयत-ए-करीमा में हम देखते हैं कि इस इम्तिहान को लोगों के लिए ज़्यादा आसान बना दिया गया है। बल्कि सूर:हूद में तो अल्लाह तआला फ़रमाता है:

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ قُلْ فَاْتُوْا بِعَشْرِ سُوَرٍ مِّثْلِهٖ مُفْتَرَيٰتٍ وَّادْعُوْا
مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ٥ (هود:۱۳)

"क्या यह कहते हैं कि पैग़म्बर (स.अ.व.) ने यह किताब ख़ुद ही घड़ ली है? कहो, अच्छा यह बात है तो इस जैसी घड़ी हुई दस सूरतें तुम बना लाओ और अल्लाह के सिवा और जो जो (तुम्हारे माअबूद) हैं उनको मदद के लिए बुला सकते हो तो बुला लो अगर तुम (उन्हें माअबूद समझने में) सच्चे हो।"

लेकिन हम जानते हैं कि कोई भी इस चुनौती को पूरा न कर सका और क़ुरआन जैसी दस सूरतें बना कर पेश नहीं कर सका।

सूर:यूनुस में यह इम्तिहान ज़्यादा आसान बना कर पेश किया गया।

वहां अल्लाह तआला फ़रमाता है:

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ قُلْ فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّثْلِهٖ وَادْعُوْا مَنِ
اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ٥ (يونس:۳۸)

"क्या यह लोग कहते हैं कि पैग़म्बर (स.अ.व.) ने ख़ुद इसकी रचना की है? कहो, अगर तुम अपने इल्ज़ाम में सच्चे हो तो एक सूर: इस जैसी बना कर लाओ और एक ख़ुदा को छोड़ कर जिस-जिस को बुला सकते हो, मदद के लिए बुला लो।"

लेकिन यह लोग इतना भी न कर पाए। कोई एक सूर: बना कर नहीं ला सका अल्लाह तआला ने इस **Falsification Test** को आसान रूप में भी पेश कर दिया। सूर:बक़रह में अल्लाह तआला फ़रमाता है।

وَاِنْ كُنْتُمْ فِيْ رَيْبٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّنْ مِّثْلِهٖ وَادْعُوْا
شُهَدَآءَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا وَلَنْ تَفْعَلُوْا فَاتَّقُوْا
النَّارَ الَّتِيْ وَقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ ٥ (البقرة:۲۳:۲۴)

"अगर तुम्हें इस बात में शक है कि यह किताब जो हम ने अपने बन्दे पर उतारी है, यह हमारी है या नहीं, तो इसकी तरह एक ही सूर: बना लाओ, अपने सारे हमनवाओं को बुला लो, एक अल्लाह को छोड़ कर बाक़ी जिस जिसकी चाहो, मदद ले लो, अगर तुम सच्चे हो तो यह काम करके दिखाओ। लेकिन अगर तुम ने ऐसा न किया और यक़ीनन कभी नहीं कर सकते, तो डरो उस आग से जिसका ईंधन बनेंगे इंसान और पत्थर, जो तैयार की गई है हक़ का इन्कार करने वालो के लिए।"

क़ुरआन ने चुनौती दी है कि इस जैसी किताब बना कर दिखाओ, फिर आसान कर दिया कि चलो दस सूरतें ऐसी बना कर ले आओ, फिर इस चुनौती को और आसान बनाकर फ़रमाया कि एक सूर: बना कर दिखा दो। यहां आसानतरीन मुआमला कर दिया गया है कि चलो इससे मिलती-जुलती एक सूर: ही बना लाओ। इस जैसी नहीं इसकी तरह एक सूर: ही ले आओ। दूसरी जगहों पर शब्द (मिस्लिही) प्रयोग हुआ था। यहां फ़रमाया गया: (मिम मिस्लिही) यानी "इससे मिलती-जुलती" लेकिन फिर भी अरब के काफ़िर बुरी तरह असफ़ल हुए।

अरबी भाषा व साहित्य, अपनी खुश बयानी और शिष्टाचार के लिहाज़ से क़ुरआन के उतरने के ज़माने में बुलंदी पर थी। बहुत से अरब के कुफ़्फ़ारों ने कोशिश की और बुरी तरह असफ़ल हुए।

इस तरह की कई कोशिशें ऐतिहासिक किताबों में सुरक्षित रह गईं और आज भी लोग उन्हें पढ़-पढ़ कर हंसते हैं।

यह चुनौती आज से 1400 वर्ष पहले दी गई थी और आज भी मौजूद है। एक करोड़ चालीस लाख क़ब्ति ईसाई मौजूद हैं। यह लोग नसल से अरब हैं। उनकी मात्र भाषा अरबी है। यह चुनौती उनके सामने भी मौजूद है।

अगर वह भी चाहते हैं कि क़ुरआन को ग़लत साबित कर दें (मआज़अल्लाह) तो उन्हें सिर्फ़ इतना करना होगा कि क़ुरआन जैसी एक सूरः बना कर दिखा दें। और अगर आप ध्यान दें तो हालत यह है कि क़ुरआन की कई सूरः इंतिहाई छोटी हैं और चन्द शब्दों की हैं, लेकिन न तो आज तक कोई यह चुनौती क़ुबूल कर सका और न ही कभी आगे क़ुबूल कर पाएगा। इंशाअल्लाह।

हो सकता है कि आप में से कोई यह कहे कि अरबी मेरी मात्र भाषा नहीं है, मैं यह भाषा जानता ही नहीं। मैं यह इम्तिहान कैसे दे सकता हूं।

क़ुरआन ग़ैर-अरबों के लिए भी एक मेयार पेश कर देता है, दुनिया का कोई भी व्यक्ति, भले ही वह अरबी न जानता हो, इस तरह क़ुरआन को गलत साबित करने की कोशिश कर सकता है।

सूरःनिसाअ में अल्लाह तआला फ़रमाता है:

اَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ وَلَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللّٰهِ لَوَجَدُوْا فِيْهِ اخْتِلَافًا كَثِيْرًا ه (النساء:٨٢)

“क्या यह लोग क़ुरआन पर ध्यान नहीं देते? अगर यह अल्लाह के सिवा किसी और की तरफ़ से होता तो इसमें बहुत कुछ विभिन्न बातें पाई जाती।”

गोया क़ुरआन में यह आया है कि अगर क़ुरआन को ग़लत साबित करना चाहते हो तो सिर्फ़ इतना करो कि क़ुरआन में टकराव या

विभिन्न बातों जैसी कोई एक ही मिसाल पेश कर दो। क़ुरआन की कोई एक ग़लती, टकराव या इख़्तिलाफ़ात (विभिन्नता) दिखा दो और तुम यह साबित करने में सफ़ल हो जाओगे कि क़ुरआन कलाम-ए-खुदावंदी नहीं है। इंतिहाई सीधी सी बात है।

मैं जानता हूं कि सैंकड़ो लोग यह कोशिश कर चुके हैं। क़ुरआन में ग़लतियों और टकराव की निशानदही कर चुके हैं। लेकिन मैं आप को बताता हूं कि 100 प्रतिशत हालतों में या तो ग़लत बयानी की गई है। विषय से हट कर बात की गई है, ग़लत अनुवाद किया गया है या धोखा देने की कोशिश की गई है। आज तक कोई भी व्यक्ति क़ुरआन में कोई एक ग़लती या टकराव वाली बात साबित करने में सफ़ल नहीं हो सका।

मान लीजिए एक मौलाना साहब हैं, जो इस्लाम के इतिहास के बारे में अच्छा ज्ञान रखते हैं लेकिन जदीद साइंस के बारे में नहीं जानते। में बहुत से ऐसे विद्वानों को जानता हूं जो धार्मिक ज्ञान में भी महारत रखते हैं और साइंस में भी, लेकिन मैं एक ऐसे विद्वान की मिसाल दे रहा हूं जो धार्मिक ज्ञान का तो माहिर है लेकिन साइंस की शिक्षा के बारे में कुछ नहीं जानता। अगर ऐसे किसी विद्वान के सामने यह दावा कर दिया जाए कि क़ुरआन में इस-इस जगह साइंस की ग़लतियां मौजूद हैं और यह आलिम (विद्वान) जवाब न दे पाए, व्याख्या न कर सके, तो इसका यह अर्थ नहीं कि क़ुरआन में वाक़ई यह ग़लतियां मौजूद हैं और यह कि क़ुरआन (नऊज़ूबिल्लाह) कलाम-ए-खुदावंदी नहीं है।

क्योंकि क़ुरआन तो कहता है कि

فَاسْئَلْ بِهٖ خَبِيْرًا ه (الفرقان:٥٩) “जानने वाले से पूछो।”

अगर आप क़ुरआन के किसी साइंसी बयान को समझना चाहते हैं तो आप को किसी ऐसे व्यक्ति से पूछना पड़ेगा जो साइंस के बारे में जानता हो। इसी सूरत में आपको पता चल सकेगा कि क़ुरआन किया कह रहा है।

इस तरह मान लीजिए यहां मौजूद लोगों में से कोई क़ुरआन में (नऊज़ूबिल्लाह) किसी गिरामर की ग़लती के बारे में दावा कर देता है। मैं अरबी भाषा का माहिर नहीं हूं। मैं सिर्फ़ एक विद्यार्थी हूं। अब अगर मैं सवाल का जवाब दे सकता हूं तो अल-हम्दुलिल्लाह लेकिन अगर मैं अपने सीमित ज्ञान के कारण से, अरबी भाषा में महारत न रखने की वजह से जवाब नहीं दे पाता तो इसका अर्थ यह नहीं कि वाक़ई ग़लती मौजूद है। जो व्यक्ति इस विभाग का माहिर होगा वह जवाब दे देगा।

आज तक कोई व्यक्ति क़ुरआन में कोई ग़लती साबित नहीं कर सका और न ही आगे कोई साबित कर पाएगा।

इन बातों को करने के बाद कोई ऐसा व्यक्ति जो ख़ुदा पर ईमान रखता हो यह नहीं कह सकता कि क़ुरआन-ए-मजीद कलाम-ए-ख़ुदावंदी नहीं है, मंज़िल मिन अल्लाह नहीं है। वह लोग जो ख़ुदा पर यक़ीन नहीं रखते, उनका मुआमला ही दूसरा है, लेकिन जो लोग ख़ुदा की हस्ती पर ईमान रखते हैं, भले ही वह ग़ैर-मुस्लिम क्यों न हों वह इन सबूतों को देखने के बाद यह नहीं कह सकते कि क़ुरआन "वही" ख़ुदावंदी नहीं है।

अतः अब हमारे पास तीन बुनियादी दृष्टिकोण में से आख़िरी दृष्टिकोण ही रह जाता है और वह यह कि यह किताब अल्लाह की तरफ़ से है। यानी अल्लाह की तरफ़ से उतारी गई है।

रही बात देहरियों (अल्लाह को न मानने वाले) की, जो ख़ुदा पर यक़ीन नहीं रखते। ख़ुदा पर यक़ीन न रखने वाले जो लोग आज यहां बैठे हैं, मैं उन्हें मुबारकबाद देना चाहूंगा। मैं अधर्मि लोगों को यह मुबारकबाद इस वजह से दे रहा हूं कि वह अपनी अक़्ल इस्तेमाल कर रहे हैं। सोचने, समझने की शक्ति से काम ले रहे हैं।

ख़ुदा पर यक़ीन रखने वाले लोगों की अकसरियत का मुआमला अंधे ईमान का होता है, एक व्यक्ति इस लिए ईसाई होता है कि वह पैदा ही ईसाई के घर में हुआ था। या इस लिए हिन्दू होता है कि वह

हिन्दू के घर में पैदा हुआ था। कुछ मुसलमान भी सिर्फ़ इस लिए मुसलमान हैं कि वह मुसलमानों के घरों में पैदा हुए थे, उनके माता-पिता मुसलमान थे। ज़्यादातर लोग एक अंधा विश्वास रखते हैं।

जबकि एक अधर्मि सोचता है। अगर वह एक धार्मिक घराने से भी सम्बंध रखता है तो फिर भी वह सोचता है कि "यह लोग कैसे ख़ुदा पर ईमान रखते हैं? एक ऐसे ख़ुदा पर जो इंसानी विशेषताएं रखता है, वह विशेषताएं जो मुझ में भी मौजूद हैं, मैं ऐसे ख़ुदा पर क्यों ईमान लाऊं?" इसलिए वह ऐलान करता है कि ख़ुदा मौजूद ही नहीं है। यूं वह ख़ुदा की हस्ती का इन्कार कर देता है।

कुछ मुसलमान मुझ से पूछेंगे कि ज़ाकिर साहब, आप एक अधिर्मी व्यक्ति को एक दहरिये (अल्लाह को न मानने वाला) को किस बात की मुबारकबाद दे रहे हैं?

मैं उसे इस लिए मुबारकबाद दे रहा हूं कि वह कलमा शहादत के पहले हिस्से को स्वीकार कर चुका है। वह "ला इलाहा" को मान चुका है। अब उसे सिर्फ़ "इल्लल्लाह" को मानना है, जिस के हवाले से हम इंशाअल्लाह बातचीत करेंगे। वह कलमे के पहले हिस्से के हवाले से ग़ौर व फ़िक्र कर चुका है, वह ख़ुदा की किसी ग़लत कल्पना को नहीं मानता इसलिए अब यह हमारा फ़र्ज़ है कि ख़ुदा की सही कल्पना उसके सामने पेश करें। और ख़ुदाए वाहिद अल्लाह तआला का वुजूद इस पर साबित करें।

जब भी कोई देहरिया मेरे सामने यह कहता है कि मैं ख़ुदा पर ईमान नहीं रखता तो मैं इससे एक सवाल करता हूं।

"यह बताओ तुम्हारे निकट ख़ुदा की प्ररिभाषा किया है?"

और उसे जवाब देना पड़ता है। आप जानते हैं क्यों?

मान लीजिए मैं कहता हूं कि "यह एक क़लम है" आप कहते हैं कि "यह एक क़लम नहीं है" तो फिर ज़रूरी है कि आप जानते हों कि क़लम किसे कहते हैं? आप को क़लम की परिभाषा मालूम होनी चाहिए।

अगर आम हालात में आपको क़लम की परिभाषा मालूम नहीं तो इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। लेकिन अगर आप यह कहते हैं कि "यह क़लम नहीं है" तो फिर ज़रूरी है कि आप जानते हों कि क़लम कहते किसे हैं? क़लम की परिभाषा किया है?

इसी तरह अगर एक देहरिया यह दावा करता है कि "ख़ुदा नहीं है" तो इसे यह ज्ञान होना चाहिए कि ख़ुदा कहते किसे हैं? शब्द "ख़ुदा" का अर्थ किया होता है? और जब मैं इस देहरिये से यह प्रश्न करता हूं तो वह मुझे जवाब देता है कि "इन लोगों को देखें, यह लोग किसकी पूजा कर रहे हैं? एक ऐसी हस्ती की जो इंसानी विशेषताएं रखती है। मैं ऐसे ख़ुदा पर यक़ीन नहीं रखता।

कुछ ख़ुदा की ग़लत कल्पना रखते हैं। एक देहरिया इस कल्पना को रद्द करता है लेकिन मैं बहैसियत मुसलमान भी इस ग़लत कल्पना का पक्ष नहीं करता, मैं भी इस ग़लत ख़ुदा की कल्पना को रद्द करता हूं। यह "ला इलाहा" का पड़ाव है। लेकिन जिस वक़्त मैं यहां तक इससे सहमती करता हूं, इस वक़्त मेरा फ़र्ज़ बनता है कि मैं ख़ुदा की सही और ठीक कल्पना भी उसके सामने पेश करूं। अल्लाह की हक़ीक़ी कल्पना से उसे सुचित करूं।

अच्छा अब मान लीजिए कि एक व्यक्ति ग़ैर-मुस्लिम है बल्कि इस्लाम का विरोधी है। उससे पूछा जाए तो वह कहता है कि मैं इस्लाम का इस लिए विरोधी हूं कि;

☆ यह एक अत्याचारी धर्म है

☆ यह एक निर्दयी धर्म है

☆ यह धर्म आतंकवाद को बढ़ावा देता है

☆ यह धर्म औरतों के अधिकारों को नहीं मानता

☆ यह धर्म ग़ैर-साइंसी है

अगर वह मुझे बताता है कि साइंसी कारणों की वजह से वह इस्लाम का विरोधी है तो मैं इससे कहूंगा कि जिस धर्म की यह विशेषताएं हों मैं खुद उसका विरोधी हूं, मैं खुद किसी ऐसे धर्म को

नहीं मानता जो अत्याचारी हो, जो औरतों के अधिकारों को छीनता हो लेकिन मैं उसे यह भी बताउंगा कि यह विशेषताएं इस्लाम की नहीं हैं। मैं इस्लाम की सही कल्पना उसके सामने पेश करूंगा, उसे बताउंगा कि इस्लाम तो रहम पर ज़ोर देने वाला धर्म है, आतंकवाद से इसका कोई सम्बंध नहीं। यह धर्म औरतों को बराबरी के अधिकार देता है। इस्लाम और साइंस में टकराव नहीं पाया जाता।

उसके बाद यक़ीनन वह ग़ैर-मुस्लिम, इंशाअल्लाह, इस्लाम को मानेगा, यह हमारा फ़र्ज़ है कि इस्लाम की सही कल्पना लोगों तक पहुंचाए। इसी तरह ख़ुदा का, अल्लाह तआला की सही कल्पना भी लोगों तक पहुंचाना ज़रूरी है।

ख़ुदा की, अल्लाह तआला की, मेरे ख़याल में बेहतरीन परिभाषा वह है जो क़ुरआन-ए-मजीद में बयान कर दी गई है। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ يَلِدْ ۝ وَلَمْ
يُوْلَدْ ۝ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۝ (الاخلاص:۴-۱)

"कहो, वह अल्लाह है एक अल्लाह सबसे बेनियाज़ (निर्लोभी) है और सब उसके मोहताज हैं। न उसकी कोई औलाद है और न वह किसी की औलाद। और न कोई उसका साथी है।"

इन आयात-ए-क़ुरआनी में बताया गया है कि;

......अल्लाह वाहिद व एक है, अकेला है।

......वह निर्लोभी है, हर किसी को उसकी आवश्यकता है। उसे किसी की आवश्यकता नहीं है

......वह दुनियावी रिश्तों से पाक है, न उसके माता-पिता हैं न औलाद। वह मां-बाप और बच्चों जैसे रिश्ते नहीं रखता।

......उसका कोई साथी नहीं है, उसकी तुलना किसी से नहीं हो सकती, उस जैसा कोई नहीं है। अगर ख़ुदा की किसी से तुलना **"Comparison"** किया जा सके तो वह ख़ुदा नहीं है।

गोया यहां अल्लाह तआला की चार पंक्तियों में परिभाषा बयान

कर दी गई है। अगर किसी की कल्पना ख़ुदा की इस परिभाषा के अनुसार है तो हम मुसलमानों को उस ख़ुदा की कल्पना पर कोई एतराज़ नहीं है, हम उसे मान लेंगे।

अब जो ख़ुदाई के उम्मीदवार हैं, उन्हें सामने आना होगा, उन्हें इस इम्तिहान पर पूरा उतरना होगा। ख़ुदाई का उम्मीदवार कौन है? कौन ख़ुदाई का दावा करता है?

कुछ लोग गुरू रजनीश को, औशो को ख़ुदा समझते हैं। आईए हम इसे इस कसौटी पर परखते हैं।

ख़ुदा की पहली विशेषता, वाहिद एक होना है। क्या भगवान रजनीश वाहिद व एक था? नहीं। उस जैसे हज़ारों लोग मौजूद हैं। हमारे देश में ही उस जैसे बहुत से लोग पाए जाते हैं। लेकिन हो सकता है रजनीश का कोई मानने वाला ज़िद करे कि नहीं गुरू रजनीश अकेला था। वह एक ही था। चलें उसे एक मौक़ा दे देते हैं और दूसरी विशेषता की तरफ़ बढ़ते हैं। दूसरी विशेषता निर्लोभी होना है, अल्लाहुस्समद है, उसे किसी की आवश्यकता नहीं है। लेकिन हर किसी को उसकी आवश्यकता है।

रजनीश के बारे में हम सब जानते हैं कि वह दमे का रोगी था। उसे शुगर भी थी। वह अपनी बीमारी तक दूर न कर सकता था। वह आपकी और मेरी बीमारी किया दूर करेगा? जब वह अमरीका गया तो अमरीकी सरकार ने उसे गिरफ़्तार कर लिया था। ज़रा अंदाज़ा कीजिए, 'ख़ुदा क़ैद में है।' क्या ख़ुदा को क़ैद किया जा सकता है? वह जो ख़ुद को आज़ाद नहीं करा सका, आपको और मुझे क्या आज़ाद करवाएगा। हमारी समस्याएं और परेशानियां किया दूर करेगा?

गुरू रजनीश ने यह बयान भी दिया था कि मुझे ज़हर दिया गया है। कल्पना कीजिए! क्या ख़ुदा को ज़हर दिया जा सकता है?

जब वह यूनान में था तो यूनान के लॉट पादरी साहब ने बयान दिया कि अगर इस व्यक्ति को यूनान से न निकाला गया तो उसके और उसके मानने वालों के मकानों को तबाह कर दिया जाएगा और

यूनानी सरकार को उसे देश से बाहर करना पड़ा। किया यह बेनियाज़ी होती है? किया इसे समदियत कहते हैं?

तीसरी विशेषता यह है कि ख़ुदा न किसी से पैदा हुआ है और न उससे कोई पैदा हुआ है। यानी न वह मां-बाप रखता है और न औलाद। मुझे यह तो पता नहीं कि गुरू रजनीश के कितने बच्चे थे लेकिन मैं यह ज़रूर जानता हूं कि उसकी मां भी थी और बाप भी। वह 11दिसम्बर 1931 को जबलपुर में पैदा हुआ और 19जनवरी 1990ई० को मर गया। लेकिन जब आप पूना में उसके केंद्र में जाएंगे तो वहां लिखा है:

भगवान रजनीश: "जो न कभी पैदा हुआ, न कभी मरा, उसने 11दिसम्बर 1931 से 19जनवरी 1990 ई० तक इस संसार का दोरा किया।"

लेकिन यह नहीं बताया गया कि दुनिया के 21 देशों में उसे वीज़ा देने से इन्कार कर दिया गया था। वह उन 21 देशों में जाना चाहता था लेकिन नहीं जा सका। अंदाज़ा कीजिए ख़ुदा ख़ुद दुनिया के दोरे पर आया हुआ है और अपनी दुनिया के 21 देशों में जाना चाहता है लेकिन नहीं जा सकता, किया यही ख़ुदा की वह कल्पना है जिस पर आप यक़ीन रखते हैं?

और अब आख़िरी शर्त कि ख़ुदा का साथी यानी उस जैसा कोई नहीं है। उसकी मिसाल नहीं दी जा सकती, उसकी किसी से तुलना नहीं की जा सकती, अगर आप ख़ुदा की कल्पना करने में सफ़ल हो जाएं, उसका चित्र बनाने में सफ़ल हो जाएं तो इसका अर्थ है कि वह ख़ुदा नहीं है। ख़ुदा का आकार सम्भव नहीं है।

जबकि गुरू रजनीश के बारे में हम सब जानते हैं कि गुरू रजनीश के लम्बे बाल थे, एक लम्बी लहराती हुई दाढ़ी थी, जिसका रंग सफ़ेद था, उसने चोग़ा सा पहना हुआ था। यानी आप बड़ी आसानी से उसकी कल्पना कर सकते हैं और वह जो कल्पना में आ जाए वह ख़ुदा नहीं हो सकता।

खुदा की किसी से भी तुलना सम्भव नहीं है। मान लीजिए कोई व्यक्ति कहता है कि ख़ुदा ऑर्नल्ड श्वार्ज़नेगर से हज़ारों गुना शक्तिशाली है। ऑर्नल्ड मिस्टर यूनिवर्स, शक्तिशाली इंसान था। इसी तरह दारा सिंह एक शक्तिशाली पहलवान था। लेकिन जिस वक़्त आप तुलना करेंगे, जिस वक़्त आप कहेंगे कि ख़ुदा ऑर्नल्ड श्वार्ज़नेगर से, दारा सिंह से या किंग कांग से हज़ारों गुना शक्तिशाली है तो इसका अर्थ होगा कि आप का तसव्वुरे ख़ुदा ही ग़लत है। भले ही आप यही कह रहे हों कि ख़ुदा किसी से एक करोड़ गुना शक्तिशाली है लेकिन बेहरहाल आप तुलना तो कर रहें होंगे और ख़ुदा की विशेषता यह है कि उसकी तुलना नहीं हो सकती।

وَلَمْ يَكُنْ لَّهُ كُفُوًا اَحَدٌ

"और कोई उसके जैसा नहीं।"

लिहाज़ा अब यह बात मैं अपने समझदार सुनने वालों पर छोड़ता हूं कि वह ख़ुद फ़ैसला करें कि उनके दिमाग़ में ख़ुदा की किया कल्पना है? और उनकी कल्पना इन शर्तों पर पूरा उतरती है? किया उनकी इस कल्पना में यह चारों विशेषताएं पाई जाती हैं जो क़ुरआन बयान कर रहा है, अगर आपका जवाब हां में है तो हम मुसलमानों को आप के तसव्वुरे ख़ुदा पर कोई ऐतराज़ नहीं और हम उसे अल्लाह तआला मान लेंगे, दूसरे तौर से फ़ैसला आपके हाथ में है। लेकिन यह सुबूत देखने के बाद भी एक देहरिया आपकी बात क़ुबूल नहीं करेगा। वह कहेगा कि मैं इन सुबूतों को नहीं मानता। मैं एक ही वस्तु को मज़बूत मानता हूं और वह है साइंस।

इतना तो मैं भी मानता हूं कि आज का ज़माना साइंस का ज़माना है। इसलिए आइए हम साइंसी शिक्षा की रौशनी में क़ुरआन का विश्लेषण करते हैं। देहरिये यही कहते हैं कि हम सिर्फ़ इसी दावे को सही मानते हैं जो साइंस की रौशनी में सही साबित हो। दूसरी सूरत में हम ख़ुदा को नहीं मानते।

मैं इन तमाम शिक्षित हज़रात से एक प्रश्न करना चाहूंगा जो ख़ुदा पर यक़ीन नहीं रखते लेकिन साइंस पर पूरा ईमान रखते हैं। सवाल यह है कि अगर आपके सामने एक मशीन आए जिसके बारे में आप ने न कुछ सुना हो, न पढ़ा हो, न ही इसे कभी देखा हो तो आप के ख़याल में वह पहला व्यक्ति कौन होगा जो आपको इस मशीन के बारे में पूरी जानकारी उपलब्ध कर सके। यह मशीन एक देहरिये के सामने है जो सिर्फ़ विज्ञान पर यक़ीन रखता है तो उसके ख़याल में कौन होगा जो उस मशीन की कार्य-विधि के बारे में जानकारी रखता हो?

मैंने यह सवाल सैंकड़ों देहरिये लोगों से, धर्म के इन्कार करने वाले लोगों से क्या है, थोड़े से सोच-विचार के बाद उनका उत्तर यही होता है:

"शायद इस मशीन का बनाने वाला ही यह जानकारी दे सकता है।"

कुछ कहते हैं इसका अविष्कार करने वाला, कुछ ख़ालिक़ (पैदा करने वाला) का शब्द प्रयोग करेंगे, कुछ इसके बनाने वाले का। सैंकड़ों लोगों से प्रश्न करने के बाद भी मुझे मिलते-जुलते जवाब ही मिले हैं। बेहरहाल जवाब कुछ भी हो मैं मानता हूं। दूसरा व्यक्ति कौन होगा? यह वह व्यक्ति भी हो सकता है जिसे ख़ालिक ने बताया हो और कोई ऐसा व्यक्ति भी होता है जो अपनी जांच-परख से सही परिणाम तक पहुंच गया हो लेकिन पहला वही होगा जो उस मशीन का ख़ालिक़ है, अविष्कार करने वाला है, बनाने वाला है।

अब मैं इस देहरिये से ख़ुदा के इंकार करने वाले से, जो सिर्फ़ विज्ञान पर यक़ीन रखता है एक और सवाल करता हूं कि बताओ यह कायनात किस तरह वुजूद में आई?

वह जवाब देता है कि असल में पहले सिर्फ़ तत्व का एक मजमूआ था जिसे प्राइमरी नेबूला **(Primary Nebula)** कहते हैं पूरी कायनात यही थी। फिर एक बहुत बड़ा धमाका **(Big Bang)** हुआ। जिसके नतीजे में द्वीतीय विभाजित हुई और आकाशगंगा वुजूद में आई।

सितारे और गृह बने और यह पृथ्वी भी वुजूद में आई जिस पर हम रह रहे हैं।

मैं कहता हूं यह जिनो और परियों की कहानियां तुम ने कहां से सुनी हैं? वह कहता है "नहीं, यह जिनो परियों की कहानियां नहीं है बल्कि यह तो साइंसी सच्चाईयां हैं जो कल ही हमारे ज्ञान में आई हैं। साइंस की दुनिया में "कल" से मतलब आधी शताब्दि या एक शताब्दि की अवधि भी हो सकती है। और यह 1973ई० का क़िस्सा है कि दो वैज्ञानिकों को महान धमाके का दृष्टिकोण Big Bang Theory मालूम करने पर नोबल इनाम दिया गया"

मैं कहता हूं बिल्कुल ठीक। तुम्हारी हर बात से मुझे सहमती है, लेकिन अगर मैं तुम्हें यह बताऊं कि यह बात क़ुरआन में आज से 1400 वर्ष पहले ही बता दी गयी थी। सूर:अंबिया में अल्लाह तआला फ़रमाता है:

اَنَّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنٰهُمَا وَجَعَلْنَا
مِنَ الْمَآءِ كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ اَفَلَا يُؤْمِنُوْنَ ٥ (الانبیآء:٣٠)

"यह सब आसमान और ज़मीन आपस में मिले हुए थे, फिर हमने उन्हें अलग किया, और पानी से हर ज़िन्दा वस्तु पैदा की क्या वह (हमारी इस 'ख़ल्लाक़ी:पैदा करने वाला' को) नही मानते?

मेरा क़ुरआन आज से 14 शताब्दि पहले उतरा था। इस बात के बहुत सुबूत मौजूद हैं कि यह वही किताब है जो 1400 साल पहले मौजूद थी तो फिर यह क्योंकर सम्भव हुआ कि इसमें महान धमाके के दृष्टिकोण की तरफ़ इशारा मौजूद है?

इस आयत में बहुत मुख़्तसर तौर से Big Bang Theory मौजूद है। तुम कहते हो यह दृष्टिकोण सौ या पचास साल पहले सामने आया है तो फिर क़ुरआन मैं इसका ज़िक्र कहां से आ गया?

अधर्मि इस सवाल का जवाब देते हैं कि "शायद किसी ने अदाज़ा लगाया होगा" मैं बहस नहीं करता, उनकी बात मान लेता हूं और आगे बढ़ता हूं। मैं पूछता हूं कि यह ज़मीन जिस पर हम रह रहे हैं, इसका रूप कैसा है? जवाब मिलता है कि पहले तो लोग यही समझते

थे कि ज़मीन चपटी है और इसी लिए वह लम्बे सफ़र से घबराते भी थे कि कहीं ऐसा न हो कि वह ज़मीन के किनारे पर पहुंच कर नीचे गिर पड़ें। लेकिन आज हमारे पास इस बात के काफ़ी साइंसी प्रमाण मौजूद हैं कि ज़मीन चपटी नहीं है। ज़मीन हक़ीक़त में गोल यानी गेंद की शक्ल में है। मैं पूछता हूं यह बात आप को कब मालूम हुई?

जवाब मिलता है, क़रीब पिछले 100 साल पहले, 200 साल पहले अगर जवाब देने वाला जानकार हो तो उसका जवाब होता है कि पहला व्यक्ति जिसने यह बात साबित की थी वह सर फ्रांस ड्रेक था, जिसने 1597 ई० में यह सिद्ध किया कि ज़मीन गोल है।

मैं इसे कहता हूं कि सूर:लुक़मान की इस आयत का विश्लेषण करें।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِى النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِى الَّيْلِ وسَخَّرَ الشَّمْسَ
وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَّجْرِىْ اِلٰى اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّاَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ٥ (لقمان:٢٩)

"किया तुम देखते नहीं हो कि अल्लाह रात को दिन में पिरोता हुआ ले आता है और दिन को रात में? उसने सूर्य व चांद को बस में कर रखा है, सब एक निर्धारित समय तक चले जा रहे हैं और (क्या तुम नहीं जानते कि) जो कुछ भी तुम करते हो अल्लाह उसे जानने वाला है।"

पिरोते हुए लाने से मतलब है एक सुस्त रफ़्तार का धीरे-धीरे बदलना। यानी रात आहिस्ता आहिस्ता, धीरे-धीरे दिन में बदलती चली जाती है और रात दिन में। यह क्रिया इस तरह होना सम्भव ही नहीं अगर पृथ्वी चपटी हो। इसके लिए ज़रूरी है कि ज़मीन की शक्ल गोल हो। इसी तरह का एक संदेस हमें क़ुरआन-ए-मजीद की सूर:अज़्ज़मर में भी मिलता है, जहां अल्लाह तआला फ़रमाता है:

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ يُكَوِّرُ الَّيْلَ عَلَى النَّهَارِ وَيُكَوِّرُ النَّهَارَ عَلَى الَّيْلِ
وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَجْرِىْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى اَلَا هُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفَّارُ ٥ (الزمر:٥)

"उसने आसमानों और ज़मीन को बरहक़ पैदा किया है। वही दिन पर रात और रात पर दिन को लपेटता है। इसी ने सूरज और चांद को इस तरह बस में कर रखा है कि हर एक, एक निर्धारित समय तक चले जा रहा है। याद रखो! वह ज़बरदस्त है और माफ़ करने वाला है।"

दिन को रात में लपेटने और रात को दिन में लपेटने का यह कार्य भी सिर्फ़ इसी अवस्था में सम्भव है अगर ज़मीन गोल यानी गेंद की तरह हो। ज़मीन के चपटे होने की अवस्था में सम्भव ही नहीं है। आप मुझे बताते हैं कि यह बात 1597ई० में सामने आई थी तो फिर कुरआन-ए-अज़ीम में यह बात 1400 साल पहले किस तरह मौजूद थी?

हो सकता है वह कहें कि यह भी इत्तिफ़ाक़ था, सिर्फ़ एक इत्तिफ़ाक़, एक अंदाज़ा जो सही साबित हुआ। मैं यहां भी बहस नहीं करता और आगे बढ़ता हूं।

मेरा अगला सवाल यह होगा कि चांद से जो रौशनी हम तक पहुंचती है यह किस वस्तु की रौशनी होती है? वह मुझे बताएगा कि पहले हम यही समझते थे कि यह चांद की अपनी रौशनी होती है। लेकिन आज जबकि साइंस तरक़्क़ी कर चुकी है, आज हम जानते हैं कि वास्तव में यह सूरज की रौशनी होती है जो चांद से वापिस होकर ज़मीन तक आती है। चांद खुद से रौशन नहीं है।

इसके बाद मैं इससे एक और सवाल करूंगा। और वह यह कि कुरआन-ए-मजीद की सूर:फ़ुरक़ान में अल्लाह तआला फ़रमाता है:

تَبَارَکَ الَّذِی جَعَلَ فِی السَّمَآءِ بُرُوْجًا وَجَعَلَ فِیْهَا سِرَاجًا وَقَمَرًا مُّنِیْرًاo (الفرقان:٦١)

"बड़ा बरकत वाला है वह जिसने आसमान में बुर्ज बनाए और उसमें एक चिराग़ और एक चांद रौशन किया।"

अरबी में चांद के लिए शब्द "क़मर" प्रयोग होता है। और उसकी रौशनी के लिए शब्द "मुनीरा" प्रयोग हुआ है। जिसका अर्थ वापस होने वाली रौशनी होती है "नूर" का शब्द ऐसी ही रौशनी के लिए प्रयोग हुआ है।

तुम कहते हो कि यह हक़ीक़त तुम ने आज मालूम की है, तो फिर बताओ कुरआन में यह बात 1400 साल पहले किस तरह मौजूद थी? वह तुरन्त जवाब नहीं दे सकेगा, उसे कुछ देर सोचना पड़ेगा और शायद आख़िरकार उसका जवाब यही होगा कि शायद यह भी सिर्फ़ इत्तिफ़ाक़ है, अंदाज़ा है या "तुक्का लग गया है।"

मैं इससे फिर भी बहस नहीं करूंगा। बातचीत आगे चलाने के लिए मैं बहस से बचना चाहूंगा। मैं कहूंगा कि अगर तुम्हारा जवाब यही है तो मैं बहस नहीं करता। और बात आगे बढ़ाता हूं।

मैं इसे कहता हूं कि मैंने 1982 में दसवी कक्षा का इम्तिहान पास किया था। उस वक़्त हमें बताया गया था कि सूरज ठहरा हुआ है यानी अपने केंद्र के चारों ओर तो लगातार हरकत कर रहा है, घूम रहा है लेकिन अपने स्थान के लिहाज़ से ठहरा हुआ है। हो सकता है वह पूछे कि किया कुरआन भी यही कहता है? मेरा जवाब होगा कि नहीं। यह बात तो हमें स्कूल में बताई गई थी, मैं इससे मालूम करूंगा कि किया वाक़ई इसी तरह है?

वह कहेगा कि नहीं। आज साइंस तरक़्क़ी कर चुकी है। अब हमें पता चला है कि सूरज अपने केंद्र के चारो ओर घूमने के अलावा घूमने वाली हरकत भी कर रहा है। सूरज की केंद्र के चारों ओर हरकत का आप मुआएना भी कर सकते हैं, अगर आप के पास ज़रूरी आलात (यंत्र) मौजूद हों। सूरज की सतह पर काले धब्बे मौजूद हैं और इन धब्बों की हरकत से मालूम होता है कि सूरज अपने केंद्र के चारों ओर एक चक्कर 25 दिन में पूरा करत लेता है लेकिन इस हरकत के अलावा सूरज एक मदार में भी हरकत कर रहा है।

किया कुरआन कहता है कि सूरज ठहरा हुआ है? हो सकता है वह देहरिया जिससे मैं बातचीत कर रहा हूं इस मौक़े पर हंसने लगे।

लेकिन फिर मैं बताता हूं कि नहीं। कुरआन में फ़रमाया गया है:

وَهُوَ الَّذِی خَلَقَ الَّیْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ کُلٌّ فِیْ فَلَکٍ یَّسْبَحُوْنَo (الانبیاء:٣٣)

"और वह अल्लाह ही है जिसने रात और दिन बनाए और सूरज और चांद को पैदा किया। सब एक-एक फ़लक (आसमान) में तैर रहे हैं।"

कुरआन बता रहा है कि सब एक फ़लक में, एक मदार में हरकत कर रहे हैं, मैं पूछता हूं कि अगर यह बात साइंस ने हाल ही में मालूम की है तो फिर कुरआन में यह बात 1400 साल पहले ही किस तरह बयान कर दी गई थी?

वह थोड़ी देर तक ख़ामोश ही रहता है और कुछ देर बाद कहता है कि अरब अंतरिक्ष ज्ञान के माहिर थे। इस लिए हो सकता है अरबों में से किसी ने यह बात तुम्हारे पैग़म्बर (स.अ.व.) से की हो और उन्होंने उसे अपनी किताब में लिख दिया हो!

मैं मानता हूं, कि अरब अंतरिक्ष ज्ञान में बेहद प्रगतिशील थे लेकिन साथ ही मैं उसे याद दिलाता हूं कि वह इतिहास को बिगाड़कर पेश कर रहा है। क्योंकि अरबों का अंतरिक्ष ज्ञान में तरक़्क़ी करना बहुत बाद की बात है और क़ुरआन उससे सदियों पहले उतर चुका था। असल में अरबों के अंतरिक्ष ज्ञान में तरक़्क़ी करने का कारण ही क़ुरआन था। अंतरिक्ष ज्ञान अरबों से क़ुरआन में नहीं आया, बल्कि क़ुरआन से अरबों ने सीखा था। क़ुरआन बहुत सी साइंसी हक़ीक़तों का ज़िक्र करता है।

जुग़राफ़िये (भूगोल) के हवाले से और फिर "आबी चक्कर" (Water Cycle) के हवाले से देखिए तो क़ुरआन में अल्लाह तआला फ़रमाता है।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَلَكَهُ يَنَابِيعَ فِي
الْأَرْضِ ثُمَّ يُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا مُّخْتَلِفًا أَلْوَانُهُ ۝ (الزمر:۲۱)

"किया तुम नहीं देखते कि अल्लाह ने आसमान से पानी बरसाया फिर उसको सोतों और चश्मों और दरियाओं की शक्ल में ज़मीन के अन्दर जारी किया, फिर उस पानी के द्वारा वह तरह तरह की खेतियां निकालता है जिनकी क़िस्में अलग-अलग हैं।"

क़ुरआन आबी चक्र (जल चक्कर) का ज़िक्र कई आयात में करता है और पूरे विवरण के साथ करता है। क़ुरआन बताता है कि पानी समुद्रों की सतह से भाप बनकर उठता है। बादलों में तबदील होता है। बादल आख़िरकार भारी हो जाते हैं, उन में बिजलियां चमकती हैं और उनसे बारिश होती है। इस बयान का ज़िक्र क़ुरआन मजीद में कई आयात में आया है।

सूर:मूमिनून में अल्लाह तआला फ़रमाता है:

وَأَنزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً بِقَدَرٍ فَأَسْكَنَّاهُ فِي الْأَرْضِ وَإِنَّا عَلَىٰ ذَهَابٍ بِهِ لَقَادِرُونَ ۝ (المومنون:۱۸)

"और आसमान से हमने सही हिसाब के अनुसार एक ख़ास मात्रा में पानी उतारा और इसको ज़मीन में ठहरा दिया, हम उसे जिस तरह चाहें ग़ायब कर सकते हैं।"

सूर:रूम में अल्लाह तआला फ़रमाता है:

اللَّهُ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيَاحَ فَتُثِيرُ سَحَابًا فَيَبْسُطُهُ فِي السَّمَاءِ كَيْفَ يَشَاءُ وَيَجْعَلُهُ كِسَفًا فَتَرَى
الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلَالِهِ فَإِذَا أَصَابَ بِهِ مَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ۝ (الروم:۴۸)

"अल्लाह ही है जो हवाओं को भेजता है और वह बादल उठाती हैं, फिर वह उन बादलों को आसमान में फैलाता है जिस तरह चाहता है और उन्हें टुकड़ियों में बांट देता है, फिर तू देखता है कि बारिश की बूंदें बादल में से टपकती चली जाती हैं। यह बारिश जब वह अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है बरसाता है तो वह अचानक ख़ुश हो जाते हैं।"

सूर:नूर मे अल्लाह तआला फ़रमाता है।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يُزْجِي سَحَابًا ثُمَّ يُؤَلِّفُ بَيْنَهُ ثُمَّ يَجْعَلُهُ
رُكَامًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلَالِهِ ۝ (النور:۴۳)

"किया तुम देखते नहीं हो कि अल्लाह बादल को आहिस्ता-आहिस्ता चलाता है। फिर उसके टुकड़ों को आपस में जोड़ता है, फिर उसे समेट कर एक भारी अबर बना देता है। फिर तुम देखते हो कि इसके ख़ोल में से बारिश की बूंदे टपकती चली आती हैं।"

सूर:रोम में फ़रमाया गया:

وَمِنْ آيَاتِهِ يُرِيكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَطَمَعًا وَيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَيُحْيِي بِهِ
الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝ (الروم:۲۴)

"और उसकी निशानियों में से है कि वह तुम्हें बिजली की चमक दिखाता है, ख़ोफ़ के साथ भी और ख़्वाहिश के साथ भी। और आसमान से पानी बरसाता है फिर इसके ज़रिए से ज़मीन को उसकी मौत के बाद ज़िन्दगी देता है। यक़ीनन इसमें बहुत सी निशानियां हैं, उन लोगों के लिए जो अक़्ल से काम लेते हैं।"

यानी क़ुरआन कई जगहों पर जल चक्र की तफ़सील बयान करता है। जबकि यह जल चक्र (Water Cycle) एक वैज्ञानिक ने जिसका नाम Bernard Palacy था, 1580ई० में बयान किया था। जो जल

चक्र साइंस 1580ई० में मालूम कर रही है वह क़ुरआन में इससे हज़ार साल पहले ही मौजूद था? कैसे?

अब हम "भू-विज्ञान" की ओर आते हैं। भू-विज्ञान में एक कल्पना बयान की जाती है जिसे **Folding** कहते हैं। जिस पृथ्वी पर हम रहते हैं इसकी बाहरी परत या सतह बहुत बारीक है। इस सतह में बल पड़ने के कारण पहाड़ी सिलसिले वुजूद में आते हैं जो सतह ज़मीन को मज़बूती देता है। अब मैं इस देहरिये को बताता हूं कि क़ुरआन-ए -मजीद की सूर:नबा में बताया गया है:

اَلَمْ نَجْعَلِ الْاَرْضَ مِهٰدًا ٥ وَالْجِبَالَ اَوْتَادًا ٥ (النبأ:٦-٧)

"किया यह वाक़िआ नहीं है कि हम ने ज़मीन को फ़र्श बनाया और पहाड़ों को खूंटों की तरह गाड़ दिया।"

क़ुरआन कहता है कि पहाड़ों को खूंटें बनाया गया है। "ओताद" अरबी में खूंटा इसको कहा जाता है जो ख़ैमा खड़ा करने के लिए गाढ़ी जाती है। और नवीन विज्ञान भी पहाड़ों का इसी तरह की भूमिका बयान करता है।

यानी पहाड़ों की मिसाल ख़ैमों के खूंटों की सी है। क़ुरआन आगे कहता है:

وَجَعَلْنَا فِى الْاَرْضِ رَوَاسِىَ اَنْ تَمِيْدَبِهِمْ وَجَعَلْنَا فِيْهَا فِجَاجًا سُبُلاً لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ٥(الانبياء:٣١)

"और हमने ज़मीन में पहाड़ जमा दिए ताकि वह उन्हें लेकर ढलक न जाएं, और इसमें खुली राहें बना दी, शायद कि लोग अपना रास्ता मालूम कर लें।"

गोया क़ुरआन यह कहता है कि ज़मीन में पहाड़ इस लिए बनाए गए हैं ताकि ज़मीन ढलकने से सुरक्षित रहे।

इसके अलावा मेरे पूछने पर वह देहरिया यह कहेगा कि उसकी जानकारी में है कि समुद्र में मीठा और खारा पानी कुछ जगहों पर अलग-अलग रहते हैं। उनके बीच एक रोक मौजूद होती है। एक आड़ मौजूद होती है जो दोनो तरह के पानी को मिलने नहीं देती और अलग-अलग रखती है। मैं उसे सूर:फ़ुरक़ान की यह आयत सुनाता हूं:

وَهُوَ الَّذِىْ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ وَّهٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ

وَجَعَلَ بَيْنَهُمَا بَرْزَخًا وَّحِجْرًا مَّحْجُوْرًا ٥ (الفرقان:٥٣)

"और वही है जिसने दो समुद्रों को मिला रखा है। एक मीठा और दूसरा नमकीन। और दोनों के बीच एक परदा कर दिया है। एक रुकावट है जो उन्हें गड-मड होने से रोके हुए है।"

इसी तरह की बात सूर:रहमान में भी की गई है:

مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ يَلْتَقِيَانِ ٥ بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَّا يَبْغِيَانِ ٥ (الرحمٰن٢٠:١٩)

"दो समुद्रों को उसने छोड़ दिया कि आपस में मिल जाए, फिर भी उनके बीच एक परदा कर दिया है जिससे वह आगे नही बढ़ते।"

आज साइंस भी हमें यही बताती है कि कुछ जगहों पर समुद्रों में मीठा और खारा पानी एक दूसरे में हल नहीं होते, उनके बीच एक रोक मौजूद रहती है। हो सकता है वह देहरिया जिससे मैं बातचीत कर रहा हूं वह इस मौक़े पर कहे कि "शायद किसी अरब ने समुद्र में ग़ोता लगा कर इस रोक-थाम को देख लिया होगा और रसूल अल्लाह (स.अ.व.) को बता दिया होगा, इस तरह यह बात क़ुरआन मजीद में आ गई होगी।"

लेकिन बात यह है कि जिस रोक या आड़ का यहां ज़िक्र हो रहा है, वह नज़र तो आती ही नहीं। यह तो नज़र न आने वाली एक रुकावट है। इसी लिए क़ुरआन इसके लिए 'बरज़ख़' का शब्द प्रयोग करता है।

यह दृष्य बहुत स्पष्ट रूप से "कैप टाउन" के क़रीब देखा जा सकता है। यानी अफ़्रिक़ा के बिल्कुल दक्षिण में। मिस्र में भी जहां दरिया-ए-नील समुद्र से मिलता है, यही सूरत-ए-हाल होती है। इसी तरह अरब की खाड़ी में जहां हज़ारों किलो मीटर तक दोनों तरह का पानी मौजूद है, लेकिन अलग-अलग रहता है।

क़ुरआन-ए-मजीद की सूर:अंबिया में अल्लाह तआला फ़रमाता है:

اَوَلَمْ يَرَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا اَنَّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنٰهُمَا وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَآءِ كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ اَفَلَا يُؤْمِنُوْنَ ٥ (الانبياء: ٣٠)

"किया वह लोग जिन्होंने (नबी:स.अ.व. की बात मानने से) इन्कार कर दिया, ग़ौर नहीं करते कि यह सब आसमान व ज़मीन आपस में मिले हुए थे! फिर हमने उन्हें अलग किया, और पानी से हर जिन्दा वस्तु पैदा की? किया वह हमारी इस ख़ल्लाक़ी (पैदा करने वाला) को नहीं मानते?"

आप ज़रा तसव्वुर कीजिए कि अरब के जंगलों में जहां पानी की सख़्त कमी होती है वहां यह बात कही जा रही है। वहां किसको यह ख़याल आ सकता था कि हर वस्तु पानी से पैदा की गई है। अगर उन्हें अन्दाज़ा लगाना ही होता तो वह हर वस्तु का अंदाज़ा लगा सकते थे, उन्हें किसी भी चीज़ का ख़याल आ सकता था, सिवाए पानी के। आज साइंस हमें बताती है कि हर ज़िन्दा वस्तु ख़लियों (कोशिकाओं) से बनी है। इन ख़ालयात का बुनियादी हिस्सा साईटोपलाज़्म **Cytoplasm** होता है जो कि 80% पानी पर सम्मिलित होता है। हर ज़िन्दा वस्तु पचास से 90% पानी पर सम्मिलित होती है।

लेकिन सवाल यह है कि आज से 14 सदियों पहले यह बात क़ुरआन-ए-हकीम में क्यों बयान कर दी गई थी? अब वह देहरिया भी चुप हो चुका होगा। वह कोई जवाब देने के क़ाबिल नहीं होगा

शुमारियात का एक दृष्टिकोण यह है जिसे **Theory of Probability** कहा जाता है मिसाल के तौर पर यूं समझिए कि एक ऐसा सवाल है जिसके दो जवाब हो सकते हैं एक सही और एक ग़लत। अगर आप सिर्फ़ अंदाज़े से जवाब दें तो 50% उम्मीद है कि आपका जवाब सही होगा। मिसाल के तौर पर जब आप टॉस करते हैं तो दोनों तरफ़ 50-50% उम्मीद होती है। लेकिन अगर आप दो बार टॉस करें तो इस बात की कितनी सम्भावना है कि दोनो बार ही आपका जवाब सही होगा। पहली बार 50% यानी दो में से एक और दूसरी बार 50% का 50% यानी चार में से एक की उम्मीद या यूं कहिए कि 25% सम्भावना है कि आप दोनो बार सही जवाब देंगे।

मान लीजिए मैं एक पांसा **(Dice)** फैंकता हूं जिस के 6 रुख़ हैं। 1, 2, 3, 4, 5 और 6 अब अगर मैं अंदाज़ा लगाऊं तो इस अंदाज़े के सही होने की उम्मीद 6, में से एक होगी। अब अगर मैं दो बार टॉस करूं और एक बार पांसा फैंकू तो यह उम्मीद कितनी है कि हर बार में जवाब सही होगा?

यह सम्भावना होगी, 1/2 गुणा 1/2 गुणा 1/6 यानी 1/24 या दूसरे शब्दों में 24 में एक सम्भावना यह है कि मेरा जवाब हर बार सही होगा।

आइए यह दृष्टिकोण **(Theory of Probability)** क़ुरआन पर लागू करके देखते हैं। सिर्फ़ बातचीत का सिलसिला आगे बढ़ाने के लिए हम मान लेते हैं कि क़ुरआन में जो मालूमात दी गई हैं वह सिर्फ़ अंदाज़े हैं जो सही साबित हुए। हम देखते हैं कि इन अंदाज़ों के सही होने की सम्भावना कितनी है?

क़ुरआन कहता है कि ज़मीन गेंद की तरह गोल है। अब आप देखिए कि ज़मीन की शक्ल के बारे में किया अंदाज़े लगाए जा सकते हैं? क़िसी व्यक्ति के दिमाग़ में ज़मीन की कौन सी सम्भावित शक्लें आ सकतीं हैं?

कहा जा सकता है कि ज़मीन चपटी है या तिकोन है या चौकोर है 6 किनारो वाली है या 8 किनारों वाली है, इसी तरह बहुत सी सम्भावित शक्लें सोची जा सकती हैं, दिमाग़ में आ सकती हैं। हम मान लेते हैं कि सिर्फ़ तीस सम्भावित शक्लें हो सकती हैं। अब अगर कोई व्यक्ति सिर्फ़ अंदाज़ा लगाता है तो इस अंदाज़े को सही सिद्ध करने की उम्मीद 30 में से एक होगी।

चांद की रौशनी या तो उसकी अपनी होगी या प्रतिबिंबित (परछाई वाली) होगी लिहाज़ा दो ही शक्लें हैं और यहां अन्दाज़ा सही साबित होने की उम्मीद दो में से एक है। लेकिन यह उम्मीद कि एक व्यक्ति के दोनों अंदाज़े सही होंगे, 60 में एक है।

अच्छा, अब यह बताइए कि अरब के जंगल में रहने वाला व्यक्ति किया अंदाज़ा लगाएगा कि इन्सान बल्कि तमाम जानदार किस वस्तु से

बने हुए हैं? और अंदाज़ा भी जंगल के रहने वाले व्यक्ति ने ही लगाना है तो उसका जवाब किया हो सकता है? हो सकता है उसका जवाब रेत हो, या लकड़ी हो या लोहा या कोई और धात या कोई गैस या तैल। वह व्यक्ति दस हज़ार अंदाज़े लगा सकता है और उसका आख़िरी अंदाज़ा पानी होगा।

क़ुरआन कहता है कि हर ज़िन्दा प्राणी पानी से बनाया गया है:

وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَآءِ كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ ط ٥ (الانبياء:٣٠)

"और हमने पानी से हर जीवित वस्तु को पैदा किया।"

इसी तरह एक और जगह फ़रमाया गया:

وَاللّٰهُ خَلَقَ كُلَّ دَآبَّةٍ مِنْ مَّآءٍ ج ٥ (النور:٤٥)

"और अल्लाह ने हर जानदार एक तरह के पानी से पैदा किया।"

यह बात अगर सिर्फ़ अंदाज़े से की जाए तो अंदाज़ा सही होने की उम्मीद 10,000 में एक होगी। अब यह उम्मीद कि एक व्यक्ति ऊपर लिखे तीनों मुआमलात में अंदाज़े से जवाब दे और हर बार उसका अंदाज़ा सही साबित हो, 6 लाख में से एक है। यानी 0.00017 प्रतिशत। अब मैं यह आप लोगों पर छोड़ता हूं कि इसके बाद आप **Theory of Probability** का प्रयोग क़ुरआन पर करना चाहेंगे या नहीं।

क़ुरआन ऐसी सैंकड़ों सच्चाईयों का ज़िक्र करता है जो उस वक़्त यानी क़ुरआन के उतरने के ज़माने में लोगों की जानकारी में नहीं थीं। अगर इन तमाम बयानात को अंदाज़े से मान लिया जाए तो इन अंदाज़ों के एक दम सही होने की सम्भावना न होने के बराबर रह जाती है और **Probablity** के दृष्टिकोण से तो यह सम्भावना ज़ीरो ही रह जाती है।

यहां कुछ लोग यह सवाल कर सकते हैं कि "ज़ाकिर साहब क्या आप क़ुरआन को साइंस की मदद से सिद्ध करने की कोशिश कर रहे हैं?" इस लिए मैं यह याद दिलाना ज़रूरी समझता हूं कि क़ुरआन साइंस की किताब नहीं है। यह साइंज़ की किताब है। यानी;

Quran is not a Book of Science
It is a Book of SIGNS.

यानी यह निशानियों की, आयात की किताब है, इस किताब में 6,000 आयात मौजूद हैं। जिनमें से एक हज़ार से अधिक आयात ऐसी हैं जिनका सम्बंध साइंसी शिक्षा से है। मैं साइंस को क़ुरआन से सिद्ध करने के लिए प्रयोग नहीं कर रहा क्योंकि किसी वस्तु को सिद्ध करने के लिए आपको किसी पैमाने की, किसी मैयार की ज़रूरत होती है और हम मुसलमानों के लिए आख़िरी पैमाना और मज़बूत मैयार ख़ुद क़ुरआन है। क़ुरआन ही हमारे लिए फ़ुरक़ान यानी सच और झूट को परखने की कसौटी है। इसी पैमाने पर हम यानी मुसलमान सही और ग़लत बयान का फ़ैसला करते हैं।

लेकिन एक देहरिये के लिए, एक पढ़े-लिखे व्यक्ति के लिए जो ख़ुदा पर ईमान ही नहीं रखता, उसके लिए मैयार क्या है? उसके लिए तो आख़िरी पैमाना साइंस ही है। अतः मैं अपनी बात उसके सामने इसी के पैमाने से सही साबित कर रहा हूं। अलबत्ता हम यह भी जानते हैं कि साइंसी दृष्टिकोण कभी-कभी बदल भी जाया करते हैं, इसलिए हम ने सिर्फ़ प्रमाणित साइंसी हक़ीक़तों को सामने रखा है। मैंने सिर्फ़ दृष्टिकोण और धारणाओं की बुनियाद पर बात नहीं की। यानी ऐसे दृष्टिकोण को दलील नहीं बनाया जिनकी बुनियाद धारणाओं पर है। मैंने उसको यह बताया है कि जो वस्तु तुम्हारे स्तर और पैमाने ने आज से 100 या 50 साल पहले साबित की है क़ुरआन उसे 1400 साल पहले ही बयान कर रहा था। इसलिए हम इस नतीजे पर पहुंचते हैं कि क़ुरआन ही सब से ऊंचा है। साइंस और क़ुरआन में बरतरी क़ुरआन ही को हासिल है। क़ुरआन कई साइंसी हक़ीक़तों को हमारे सामने पेश करता है।

सूरः ताहा में अल्लाह तआला फ़रमाता है:

الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ مَهْدًا وَّسَلَكَ لَكُمْ فِيْهَا سُبُلًا وَّاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجْنَا بِهٖٓ اَزْوَاجًا مِّنْ نَّبَاتٍ شَتّٰى ٥ (طٰهٰ:٥٣)

"वही है जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को फ़र्श बनाया और उसमें तुम्हारे चलने का रास्ता बनाया और ऊपर से पानी बरसाया फिर इसके ज़रिए पेड़-पौधों के जोड़े निकाले।"

आप यह बात गुज़रे हुए ज़माने में मालूम कर रहे हैं कि पेड़ों में नर और मादह होते हैं। इसी तरह सूरःइनआम में अल्लाह तआला फ़रमाता है:

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا طٰٓئِرٍ يَّطِيْرُ بِجَنَاحَيْهِ اِلَّآ اُمَمٌ اَمْثَالُكُمْ مَا فَرَّطْنَا فِي الْكِتٰبِ مِنْ شَيْءٍ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ يُحْشَرُوْنَ ٥ (الانعام:٣٨)

"ज़मीन में चलने वाले किसी जानवर और हवा में परों से उड़ने वाले किसी परिंदे को देख लो, यह सब तुम्हारी ही तरह के प्राणी हैं, हमने उनकी तक़दीर के लिखे में कोई कसर नहीं छोड़ी है। फिर यह सब अपने रब की तरफ़ समेटे जाते हैं।"

साइंस इस बात को कुछ समय पहले ही सिद्ध कर रही है।

क़ुरआन-ए-मजीद की सूरःनहल में बताया गया है कि शहद की मक्खी शहद बनाने के लिए रस इकट्ठा करती है। यहां इसके लिए स्त्रीलिंग का प्रयोग हुआ है। यानी यह काम नर मक्खी नहीं करती बल्कि मादह मक्खी करती है। साइंस ने यह हक़ीक़त भी हाल ही में मालूम की है, वर्ना पहले वैज्ञानिकों का ख़याल था कि यह काम नर मक्खी करती है। यह मक्खियां पौधों और फूलों की ख़बर दूसरी मक्खियों को देती हैं।

सूरःअनकबूत में अल्लाह तआला फ़रमाता है:

وَاِنَّ اَوْهَنَ الْبُيُوْتِ لَبَيْتُ الْعَنْكَبُوْتِ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ٥ (العنكبوت:٤١)

"और सब घरों से ज़्यादा कमज़ोर घर, मकड़ी का घर ही होता है।"

यहां बात सिर्फ़ मकड़ी के घर यानी जाले की ज़ाहिरी कमज़ोरी के हवाले से नहीं की जा रही। यह आयत मकड़ी के घरेलू जीवन की विशेषताएं भी बयान कर रही है कि सम्बंधों के लिहाज़ से भी सबसे कमज़ोर घर मकड़ी का ही होता है। क्योंकि कभी-कभी मादह मकड़ी अपने नर को जान से मार देती है।

इसी तरह सूरःनमल की आयत 17 और 18 में चींटियों के बातें करने का ज़िक्र है। कुछ लोग कहेंगे कि यह तो जिनों परियों की कहानियों वाली बात है। क्या चींटियां भी आपस में बात कर सकती हैं?

लेकिन आज साइंस हमें बाताती है कि जानवारों में से चींटियों की जीवीन शैली इंसानी जीवन-शैली के बहुत क़रीब है। यानी इंसानी जीवन-शैली से बहुत समानता रखती है। यहां तक कि चींटियों में मुर्दा चींटियों को दफ़न करने की आदत भी मौजूद है और सबसे बड़ी बात यह कि उनके बीच एक दूसरे से सम्पर्क बनाने की एक पूरी व्यवस्था मौजूद होती है। उनके बीच पैग़ामात को एक जगह से दूसरी जगह भेजने की बाक़ायदा व्यवस्था पाई जाती है।

इसी तरह सूरःनहल में अल्लाह तआला फ़रमाता है:

يَخْرُجُ مِنْ بُطُوْنِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ فِيْهِ شِفَآءٌ لِّلنَّاسِ ٥ (النحل:٦٩)

"इस मक्खी के अंदर से रंग-बिरंग का एक शर्बत निकलता है, जिसमें शिफ़ा (सहत) है लोगो के लिए।"

इस आयत-ए-क़ुरआनी में फ़रमाया गया है कि शहद में इंसानों के लिए शफ़ा (सेहत) रखी गयी है और आज साइंस हमें बताती है कि शहद में किटाणुओं को मारने की विशेषता पाई जाती हैं। यही वजह है कि रूसी फ़ौजी जंग के दौरान अपने ज़ख़्मों पर शहद लगाते रहे। और न सिर्फ़ उनके ज़ख़्म भर जाते थे बल्कि ज़ख़्म का निशान भी बहुत कम बाक़ी रहता था। विभिन्न प्रकार की एलर्जी के लिए शहद आज भी प्रयोग किया जा रहा है।

इसी तरह क़ुरआन दोरान-ए-ख़ून और दूध की बढ़ोत्री के हवाले से भी बात करता है। सूरःनहल की आयत नम्बर 66 और सूरःमूमिनून की आयत नम्बर 21 में यह ज़िक्र मौजूद है और क़ुरआन के उतरने के 600 साल बाद इब्ने नफ़ीस ने दोरान-ए-ख़ून का अमल मालूम किया। पश्चिमी दुनिया के हवाले से देखा जाए तो क़ुरआन के उतरने के 1000 साल बाद Harvey नामक वैज्ञानिक ने यह दृष्टिकोण आम किया।

कुरआन इल्मुल जनीन (वह बच्चा जो मां के पेट में हो) के बारे में भी बात करता है। कुरआन-ए- मजीद की सबसे पहले उतरने वाली आयात, सूर: अलक़ की निम्नलिखित आयात थीं।

اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّکَ الَّذِیْ خَلَقَ ٥ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ٥ (العلق:٢-١)

"पढ़ो (ऐ नबी स.अ.व.) अपने रब के नाम के साथ जिसने पैदा किया जमे हुए ख़ून के एक लोथड़े से इंसान को।"

"अलक़ता" का अनुवाद ख़ून का लोथड़ा ही नहीं होता बल्कि इस शब्द का अर्थ "चिपकने वाली वस्तु" और "जोंक जैसी वस्तु" भी होता है। यह आयत और कुरआन में मौजूद इल्मुल जनीन के हवाले से मौजूद दूसरे बयानात प्रोफ़ैसर कैथमोर को दिखाए गए थे। प्रोफ़ेसर साहब का सम्बंध टोरेंटों (कनाडा) से है और वह इस संस्था के ऊंचे माहिरीन में गिने जाते हैं।

कुछ अरब हज़रात ने इस कुरआनी हिदायत पर अमल किया कि "अगर तुम नहीं जानते तो उनसे पूछ लो जो जानते हैं" और वह प्रोफ़ेसर कैथमोर के पास चले गए। यह सारी बातें उनके सामने रखीं और उनसे पूछा कि किया यह तमाम बातें ठीक हैं? डॉ० साहब ने जवाब दिया कि कुरआनी बयानात में से अधिकतर तो जांच पड़ताल की रौशनी में 100% सही हैं लेकिन कुछ बयानात ऐसे हैं, जिनके बारे में वह कोई राय नहीं दे सकते क्योंकि उन्हें खुद इस बारे में पूरी जानकारी नहीं है।

इन आयात में से एक आयत वह थी जिसमें फ़रमाया गया है कि "हमने इंसान को एक जोंक जैसी वस्तु से पैदा किया है।" डॉ० साहब अपनी तजरबागाह में गए। उन्होंने जोंक की तसवीर की तुलना जनीन के बिल्कुल शुरूआती पड़ाव के साथ की। शक्तिशाली खुर्दबीन से तफ़सीली जाएज़ा लेने के बाद वह इस नतीजे पर पहुंचे कि बिल्कुल शुरूआती पड़ाव के जनीन और जोंक में वाक़ई समानता पाई जाती है।

इसलिए उन्होंने यह बयान दिया कि जो कुछ कुरआन में फ़रमाया गया है, वह सही और ठीक है। यही नहीं, प्रोफ़ैसर मोर ने आयात-ए-कुरआनी से मालूम की हुई यह जानकारियां अपनी किताब **"The Developing Human."** के तीसरे एडिशन में शामिल कीं। इस पुस्तक को बेहतरीन चिकित्सा पुस्तक का ऐवार्ड भी मिला। डॉ० मोर ने यह भी माना कि इल्मुल जनीन के हवाले से कुरआन जो जानकारियां देता है, आज की साइंस ने वह बातें हाल ही में मालूम की हैं। क्योंकि इल्मुल जनीन तो चिकित्सा के ज्ञान की नवीनतम शाखाओं में से है। यह सम्भव ही नहीं कि यह बातें किसी इंसान की जानकारी में आज से 1400 वर्ष पहले मौजूद हों। इसलिए कुरआन अवश्य एक इलहामी (अल्लाह की तरफ़ से) किताब है।

कुरआन-ए-मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है:

فَلْيَنْظُرِ الْاِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ ٥ خُلِقَ مِنْ مَّآءٍ دَافِقٍ ٥ يَّخْرُجُ مِنْ بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَآئِبِ ٥ (الطارق:٧-٥)

"फिर ज़रा इंसान यही देख ले कि वह किस वस्तु से पैदा किया गया है। एक उछलने वाले पानी से पैदा किया गया है जो पीठ और सीने की हड्डियों के बीच से निकलता है।"

और आज साइंस इल्मुल जनीन के बारे में हमें बताती है कि शुरू में जिन्सी अंग (आज़ा) यानी फ़ोते और रहम आदि इस जगह से बनते हैं जहां गुर्दे होते हैं यानी रीढ़ की हड्डी और ग्यारहवीं बारहवीं पसली के बीच।

सूर:नजम में अल्लाह तआला फ़रमाता है:

وَاَنَّهٗ خَلَقَ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ٥ مِنْ نُّطْفَةٍ اِذَا تُمْنٰى ٥ (النجم:٤٧-٤٥)

"और यह कि उसी ने नर और मादह का जोड़ा पैदा किया एक बूंद से, जब वह टपकाई जाती है।"

इसी तरह एक और जगह अल्लाह तआला फ़रमाता है:

اَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِّنْ مَّنِيٍّ يُّمْنٰى ٥ ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً فَخَلَقَ فَسَوّٰى ٥
فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ٥ (القيٰمة:٣٧-٣٩)

"किया वह एक हक़ीर (गंदा) पानी का नुत्फ़ा न था जो (गर्भाशय में) टपकाया जाता है? फिर वह एक लोथड़ा बना, फिर अल्लाह ने उसका जिस्म बनाया और उसके अंग ठीक किए, फिर उससे मर्द और औरत की दो क़िस्में बनाई।"

ऊपर लिखी आयात से मालूम होता है कि बच्चे की जिन्स (लिंग) की नियुक्ति नुत्फ़ा करता है। यानी मर्द बच्चे के जिन्स (लिंग) का ज़िम्मेदार होता है। आज की साइंस ने यह हक़ीक़त भी हाल ही में मालूम की है।

क़ुरआन यह भी बताता है कि जनीन तीन अंधेरों या तीन तेहों के अन्दर होता है और साइंसी जांच पड़ताल से भी यही बात सामने आई है।

जनीन की उन्नति के अलग पड़ाव का ज़िक्र भी क़ुरआन में विवरण के साथ मौजूद है:

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ سُلَالَةٍ مِّنْ طِيْنٍ ۝ ثُمَّ جَعَلْنَاهُ نُطْفَةً فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ۝ ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظَامًا فَكَسَوْنَا الْعِظَامَ لَحْمًا ثُمَّ اَنْشَأْنٰهُ خَلْقًا آخَرَ فَتَبَارَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخَالِقِيْنَ ۝ (المومنون:١٢-١٤)

"हमने इंसान को मिट्टी के सत से बनाया। फिर उसे एक सुरक्षित जगह टपकी हुई बूंद में बदल दिया। फिर उस बूंद को लोथड़े की शक्ल दी। फिर लोथड़े को बोटी बनाया। फिर बोटी की हड्डियां बनाई। फिर हड्डियों पर मास चढ़ाया। फिर उसे एक दूसरा ही प्राणी के रूप में खड़ा कर दिया। पस बड़ा ही बाबरकत है अल्लाह, सब कारिगरों से अच्छा कारिगर।"

सूर:हज में भी यही फ़रमाया गया है:

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِيْ رَيْبٍ مِّنَ الْبَعْثِ فَاِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِنْ مُّضْغَةٍ مُّخَلَّقَةٍ وَّغَيْرِ مُخَلَّقَةٍ لِّنُبَيِّنَ لَكُمْ وَنُقِرُّ فِي الْاَرْحَامِ مَا نَشَآءُ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْۤا اَشُدَّكُمْ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰۤى اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْلَا يَعْلَمَ مِنْ بَعْدِ عِلْمٍ شَيْـًٔا ۝ (الحج:٥)

"लोगो, अगर तुम्हें ज़िन्दगी के बाद मौत के बारे में कुछ शक है तो तुम्हें मालूम हो कि हमने तुमको मिट्टी से पैदा किया है, फिर नुत्फ़े से, फिर ख़ून के लोथड़े से फिर मास की बोटी से, जो शक्ल वाली भी होती है और बेशक्ल भी। (यह हम इस लिए बता रहें हैं) ताकि तुम पर हक़ीक़त वाज़ेह (स्पष्ट) करें। हम जिस नुत्फ़े को चाहते हैं, एक ख़ास वक़्त तक गर्भ में ठहराए रखते हैं। फिर तुम को एक बच्चे की सूरत में निकाल लाते हैं। (फिर तुम्हें पालते हैं) ताकि तुम अपनी जवानी तक पहुंचों और तुम में से कोई पहले ही वापिस बुला लिया जाता है और कोई बदतरीन उम्र (वृद्ध आयु) की तरफ़ फैर दिया जाता है ताकि सब कुछ जानने के बाद फिर कुछ न जाने।"

सूर:सिजदा में अल्लाह तआला फ़रमाता है:

ثُمَّ سَوّٰىهُ وَنَفَخَ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِهٖ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ ۝ (السجدہ:٩)

"फिर उसको ठीक-ठाक किया और उसके अंदर अपनी रूह फूंक दी और तुम को कान दिये, आंखे दी।"

अद्दहर में अल्लाह तआला दोबारा फ़रमाता है:

فَجَعَلْنٰهُ سَمِيْعًاۢ بَصِيْرًا ۝ (الدهر:٢)

"हमने उसे सुनने वाला और देखने वाला बनाया।"

ऊपर लिखी आयात-ए-क़ुरआनी में सुनने की सलाहियत का ज़िक्र "देखने की सलाहियत" यानी बसारत से पहले आया है। आज का इलाज करने का तरीक़ा भी हमें यही बताता है कि सुनने की शक्ति पहले आती है और बसारत (देखना) की बाद मे, समाअत (सुनने) का निज़ाम (शक्ति) 5वें महीने में बन चुका होता है जबकि बसारत 7वें महीने में पूरी होती है।

लोगों ने सवाल किया कि मरने के बाद तो इंसान की हड्डियां भी मिट्टी में मिल कर मिट्टी हो चुकी होंगी तो फिर अल्लाह तआला क़यामत के दिन इंसान को दोबारा किस तरह ज़िन्दा करेगा?

जवाब में फ़रमाया गया:

اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَلَّنْ نَّجْمَعَ عِظَامَهٗ ۝ بَلٰى قٰدِرِيْنَ عَلٰۤى اَنْ نُّسَوِّيَ بَنَانَهٗ ۝ (القيمة:٣-٤)

"किया इंसान यह समझ रहा है कि हम उसकी हडडियों को इकट्ठा न कर सकेंगे? क्यों नहीं? हम तो उसकी उंगलियों की पोर-पोर तक ठीक बना देने पर क़ादिर हैं।"

ऊपर लिखी आयात में हड्डियों के साथ उंगलियों की पोरों का ज़िक्र क्यो फ़रमाया गया है? कुरआन का बयान है कि क़यामत के दिन अल्लाह तआला उंगलियों की पोरें भी ठीक-ठीक बना देने की शक्ति रखता है। यह ज़िक्र क्यों किया जा रहा है?

1880 में उंगलियों के निशानात **Finger Prints** की मदद से लोगों की पहचान की विधि मालूम हुई। यह विधि आज भी लोगों की पहचान के लिए प्रयोग की जा रही है। क्योंकि लाखों, करोड़ों लोगों में कोई दो व्यक्ति भी ऐसे नहीं होते जिनकी उंगलियों के निशान एक जैसे हों।

और कुरआन आज से 1400 साल पहले ही इस तरफ़ इशारा दे रहा है।

ऐसी बहुत सी मिसालें आगे पेश की जा सकती हैं अगर आप कुरआन और साइंस के हवाले से और विस्तार से जानना चाहते हैं तो मेरी किताब **"Quran & Modern Science"** * से सम्पर्क कर सकते हैं।

मैं सिर्फ़ एक मिसाल और पेश करना चाहूंगा। थाईलेन्ड से सम्बंध रखने वाले एक वैज्ञानिक थे, जिनका नाम था **Prof. Thagada Shaun** उन्होंने दर्द और दर्द महसूस करने वाले अंग के हवाले से काफ़ी खोजें की हैं। इससे पहले यही ख़याल था कि दर्द महसूस करने की क्रिया एक दिमाग़ी कार्य है। यानी दिमाग़ आसाब (पटठों) की सहायता से दर्द महसूस करता है। लेकिन हाल ही में मालूम हुआ है कि दर्द महसूस करने के काम में जिल्द (त्वचा) भी ज़िम्मेदार होती है। जिल्द (त्वचा) में **Pain Receptors** होते हैं जिनकी मदद से इंसान दर्द को महसूस करता है।

कुरआन-ए-मजीद की सूर:निसाअ में फ़रमाया गया:

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا سَوْفَ نُصْلِيْهِمْ نَارًا كُلَّمَا نَضِجَتْ
جُلُوْدُهُمْ بَدَّلْنٰهُمْ جُلُوْدًا غَيْرَهَا لِيَذُوْقُوا الْعَذَابَ ط ٥ (النساء::٥٦)

* इस किताब का हिंदी अनुवाद "कुरआन और विज्ञान" के नाम से अल-हसनात बुक्स प्रा० लि० से प्रकाशित किया जा चुका है

"जिन लोगों ने हमारी आयात को मानने से इनकार कर दिया है, उन्हें हम ज़रूर आग में झोंकेंगे और जब उनके बदन की खाल जल जाएगी तो उसकी जगह दूसरी खाल पैदा कर देंगे ताकि वह ख़ूब अज़ाब का मज़ा चखें।"

कुरआन की यह आयत स्पष्ट तौर से बता रही है कि जिल्द का दर्द महसूस करने की क्रिया से सीधा सम्बंध है। यानी यहां **Pain Receptors** की तरफ़ साफ़ इशारा मौजूद है।

डॉ० थागाडा को जब अंदाज़ा हुआ कि यह किताब आज से 1400 साल पहले ही यह जानकारी उपलब्ध करा रही थी तो उन्होंने सिर्फ़ इस एक सुबूत की बुनियाद पर क़ाहिरा में एक चिकित्सा कांफ्रेंस के दौरान इस्लाम स्वीकार करने का ऐलान कर दिया। और सब के सामने कह दिया:

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ الرَّسُوْلُ اللّٰهِ ط

"अल्लाह के सिवा कोई माअबूद नहीं और मुहम्मद (स.अ.व.) अल्लाह के रसूल हैं।"

अब अगर एक देहरिये से पूछा जाए कि यह तमाम मालूमात कुरआन में कहां से आ गई हैं तो इसका जवाब किया होना चाहिए? उसके पास एक ही जवाब होगा। वही जवाब जो हमारे पहले सवाल का था। पहला सवाल यह था कि एक न मालूम मशीन के बारे में जानकारी किससे मिल सकती हैं? जवाब था। बनाने वाले से, ख़ालिक़ से।

कुरआन में यह सारी हकीक़तें बयान करने वाला भी इस कायनात का ख़ालिक़ (पैदा करने वाला), इसका बनाने वाला, इसका अविष्कार करने वाला ही है। जिसके लिए अंग्रेज़ी में **GOD** का शब्द प्रयोग किया जाता है और अरबी में बेहतर तौर पर अल्लाह का शब्द प्रयोग में लाया जाता है।

Francis Beacon ने ठीक कहा था:

"साइंस का अधूरा ज्ञान आपको काफ़िर बना देता है लेकिन साइंस का विस्तृत और गहरा अध्ययन आपको ख़ुदा पर ईमान रखने वाला बना देता है"

यही वजह है कि आज का वैज्ञानिक झूटे ख़ुदाओं को तो रद्द कर चुका है यानी ला इलाहा के स्थान पर तो पहुंच चुका है लेकिन "इल्लल्लाहा" की मंज़िल तक नहीं पहुंच पाया।

मैं अपनी बातचीत को क़ुरआन-ए-मजीद की इस आयत पर ख़त्म करना चाहूंगा:

سَنُرِيْهِمْ اٰيٰتِنَا فِى الْاٰفَاقِ وَفِىٓ اَنْفُسِهِمْ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَهُمْ اَنَّهُ الْحَقُّ
اَوَلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ اَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ شَهِيْدٌ ط ० (حٰمٓ السجده:۵۳)

"बहुत जल्द हम उनको अपनी निशानियां दुनिया में भी दिखाएंगे और उनके अपने नफ़्स में भी। यहां तक कि उन पर यह बात खुल जाएगी कि यह क़ुरआन वाक़ई सच्चा है। किया यह बात काफ़ी नहीं है कि तेरा रब हर वस्तु का गवाह है।"

وَآخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ط

भाग-2

प्र०-: मुसलमान, ख़ुदा को अल्लाह कह कर क्यों पुकारते हैं?

डॉ० ज़ाकिर नाइक मेरी बहन ने सवाल पूछा है कि मुसलमान ख़ुदा के लिए शब्द "अल्लाह" क्यों प्रयोग करते हैं? अपनी बातचीत के दौरान मैंने क़ुरआन-ए-मजीद की सूरःइख़्लास से अल्लाह की परिभाषा आपके सामने पेश की थी। उन आयात में फ़रमाया गया है:

قُلْ هُوَاللّٰهُ اَحَدٌ ۝ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ يَلِدْ ۝ وَلَمْ يُوْلَدْ ۝ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۝ (الاخلاص:١-٤)

"कहो वह अल्लाह है एक। अल्लाह सबसे बेनियाज़ (निर्लोभी) है। और सब उसके मोहताज है। न उसकी कोई औलाद है और न वह किसी की औलाद। और कोई उस जैसा नहीं है।"

लेकिन क़ुरआन मजीद में यह भी फ़रमा दिया गया है:

قُلِ ادْعُوا اللّٰهَ اَوِادْعُوا الرَّحْمٰنَ اَيًّامَّا تَدْعُوْا فَلَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۝ (بنی اسرائیل:١١٠)

"ऐ नबी! उनसे कहो "अल्लाह कह कर पुकारो या रहमान कहकर, जिस नाम से भी पुकारो, उसके लिए सब अच्छे ही नाम हैं।"

यानी हर अच्छा नाम अल्लाह तआला के लिए है। यह बात क़ुरआन-ए-मजीद में दूसरे कई स्थानों पर भी फ़रमाई गई है। सूरःआराफ़ में अल्लाह तआला फ़रमाता है:

وَلِلّٰهِ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ بِهَا ۝ (الاعراف:١٨٠)

"अल्लाह अच्छे नामों का हक़दार है, इसे अच्छे नामों ही से पुकारो।"

هُوَاللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۝ (الحشر:٢٤)

"वह अल्लाह ही है जो पैदा करने का मनसूबा बनाने वाला और उसको लागू करने वाला और उसके अनुसार ढालने वाला है। उसके लिए बेहतरीन नाम हैं।"

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۝ (طٰهٰ:٨)

"वह अल्लाह है। उसके सिवा कोई मअबूद नहीं। उसके लिए बेहतरीन नाम हैं।"

गोया तमाम बेहतरीन नाम अल्लाह ही के लिए हैं लेकिन एक तो यह नाम ख़ूबसूरत होने चाहिए और दूसरे इन नामों को सुन कर

आपके ख़्याल में कोई तस्वीर नहीं बननी चाहिए। यानी उन नामों में आकार का कोई पहलू नहीं होना चाहिए।

रही यह बात कि मुसलमान शब्द अल्लाह को अंग्रेज़ी शब्द GOD की तुलना में प्राथमिकता क्यों देते हैं तो उसका कारण यह है अरबी शब्द "अल्लाह" एक ख़ालिस और अकेला शब्द है। जबकि अंग्रेज़ी शब्द "गॉड" की यह सूरत नहीं। इसके साथ छेड़-छाड़ सम्भव है। अगर आप इस शब्द के आख़िर में शब्द "S" लगा दें तो यह GODS बन जाता है यानी जमा (बहुवचन) लेकिन शब्द "अल्लाह" की कोई जमा (बहुवचन) नहीं है। इसलिए बहुत से ख़ुदाओं की कोई कल्पना ही नहीं है। अल्लाह एक ही है।

قُلْ هُوَاللّٰهُ اَحَدٌ ۝ (الاخلاص:١)

"कहो वह अल्लाह है, अकेला।"

इसी तरह अगर आप अंग्रेज़ी शब्द GOD के आख़िर में "ESS" को बढ़ा दें तो यह एक और शब्द GODESS बन जाएगा। यानी "स्त्रीलिंग ख़ुदा"। जबकि अरबी शब्द अल्लाह के साथ स्त्रीलिंग व पुर्लिंग की कोई कल्पना ही नहीं है। अल्लाह तआला जिन्स (लिंग) की कल्पना से पवित्र है। अंग्रज़ी शब्द के साथ एक समस्या यह भी है कि अगर आप इसे बड़े "G" से लिखेंगे तो उसका अर्थ ख़ुदा होगा लेकिन अगर आप इसे छोटे "g" से लिखेंगे तो फिर उसका अर्थ "देवता" या "झूटे ख़ुदा" होगा।

इस्लाम में सिर्फ़ एक ही मअबूद-ए-हक़ीक़ी यानी अल्लाह की कल्पना मौजूद है। हम किसी देवता आदि पर यक़ीन नहीं रखते।

अगर आप शब्द God के बाद Father की बढ़ोत्री कर दें तो यह Godfather बन जाता है कहा जाता है कि "वह मेरा गॉड फ़ादर है" यानी फ़लां मेरा सरपरस्त है। लेकिन शब्द अल्लाह के साथ इस क़िस्म की कोई बढ़ोत्री सम्भव नहीं। "अल्लाह अब्बा" या "अल्लाह बाप" जैसी कोई कल्पना मौजूद नहीं है। इसी तरह अगर आप God के बाद

Mother की बढ़ोत्री करें तो शब्द Godmother बन जाएगा। इस क़िस्म का कोई शब्द भी इस्लाम में नहीं पाया जाता।

शब्द God से पहले Tin लगा दिया जाए तो यह Tingod बन जाता है जिसका अर्थ है झूटे खुदा या जाली खुदा। लेकिन शब्द अल्लाह के साथ इस क़िस्म का कोई साबिक़ा (जाना पहचाना शब्द) लगाना सम्भव ही नहीं है।

अल्लाह तआला पाक है। एक व अकेला है। आप उसे किसी भी नाम से पुकार सकते हैं लेकिन यह नाम ख़ूबसूरत होना चाहिए।

मैं उम्मीद रखता हूं कि आपको अपने सवाल का जवाब मिल गया होगा।

प्र०-: अरुन शौरी ने लिखा है कि क़ुरआन मजीद की चौथी सूर:की ग्यारहवीं, बारहवीं आयत में विरसा (जायदाद) के हिस्से बयान करते हुए जो विवरण दिया गया है, अगर आप उन तमाम हिस्सों को इकट्ठा करें तो हासिल जमा एक से ज़्यादा आता है। अरुन शौरी के अनुसार इससे यह सिद्ध होता है कि क़ुरआन के लेखक को गणित नहीं आता था। आप से गुज़ारिश है कि व्याख्या करें?

डॉ० ज़ाकिर नाइक... मेरे भाई ने सवाल पूछा है कि अरुन शौरी का दावा है कि "क़ुरआन पाक की सूर:निसाअ की आयत ग्यारह और बारह में बयान किए हुए विरसा (जायदाद) के हिस्सों को अगर इकट्ठा किया जाए तो जवाब एक से अधिक आता है" और यह कि "इस तरह पता चलता है कि क़ुरआन के लेखक को गणित नहीं आती थी।" (नऊज़ुबिल्लाह)

जैसा कि मैंने पहले भी अपनी बातचीत के दौरान स्पष्ट किया था, बात यह है कि यूं तो सैंकड़ों लोग हैं जो क़ुरआन में ग़लतियां तलाश करने के दावे करते हैं लेकिन अगर आप विश्लेषण करें तो पता चलता है कि यह तमाम दावे ग़लत और झूटे हैं उनमें से कोई एक

दावा भी ऐसा नहीं है जिसे सिद्ध किया जा सके।

जहां तक विरासत का सम्बंध है, क़ुरआन-ए-मजीद में कई जगहों पर इस हवाले से बात की गई है। मिसाल के तौर पर निम्नलिखित आयात में विरासत का बयान मौजूद है।

सूर:बक़रा...... आयत180

सूर:बक़रा...... आयत240

सर:निसाअ...... आयत19

लेकिन जहां तक इन भागों की पूरी तफ़सील का सम्बंध है तो यह सूर:निसाअ की आयात 11,12 और फिर 176 में बयान की गई है। अरुन शौरी ने जिस बयान का ज़िक्र किया है वह सूर:निसाअ की ग्यारहवीं और बारहवीं आयत में मौजूद है, जहां फ़रमाया गया है:

يُوْصِيْكُمُ اللّٰهُ فِيْ اَوْلَادِكُمْ لِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْاُنْثَيَيْنِ فَاِنْ كُنَّ نِسَآءً فَوْقَ اثْنَتَيْنِ فَلَهُنَّ ثُلُثَا مَا تَرَكَ وَاِنْ كَانَتْ وَاحِدَةً فَلَهَا النِّصْفُ وَلِاَبَوَيْهِ لِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ مِمَّا تَرَكَ اِنْ كَانَ لَهٗ وَلَدٌ فَاِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلَدٌ وَّوَرِثَهٗ اَبَوٰهُ فَلِاُمِّهِ الثُّلُثُ فَاِنْ كَانَ لَهٗ اِخْوَةٌ فَلِاُمِّهِ السُّدُسُ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصِيْ بِهَآ اَوْ دَيْنٍ اٰبَآؤُكُمْ وَاَبْنَآؤُكُمْ لَا تَدْرُوْنَ اَيُّهُمْ اَقْرَبُ لَكُمْ نَفْعًا فَرِيْضَةً مِّنَ اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ٥ وَلَكُمْ نِصْفُ مَا تَرَكَ اَزْوَاجُكُمْ اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهُنَّ وَلَدٌ فَاِنْ كَانَ لَهُنَّ وَلَدٌ فَلَكُمُ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْنَ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصِيْنَ بِهَآ اَوْ دَيْنٍ وَلَهُنَّ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْتُمْ اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّكُمْ وَلَدٌ فَاِنْ كَانَ لَكُمْ وَلَدٌ فَلَهُنَّ الثُّمُنُ مِمَّا تَرَكْتُمْ مِّنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ تُوْصُوْنَ بِهَآ اَوْ دَيْنٍ وَاِنْ كَانَ رَجُلٌ يُّوْرَثُ كَلٰلَةً اَوِ امْرَاَةٌ وَّلَهٗ اَخٌ اَوْ اُخْتٌ فَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ فَاِنْ كَانُوْا اَكْثَرَ مِنْ ذٰلِكَ فَهُمْ شُرَكَآءُ فِي الثُّلُثِ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصٰى بِهَآ اَوْ دَيْنٍ غَيْرَ مُضَآرٍّ وَصِيَّةً مِّنَ اللّٰهِ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَلِيْمٌ ط ٥

(النساء١١:١٢)

तुम्हारी औलाद के बारे में अल्लाह तुम्हें हिदायत करता है कि: मर्द का हिस्सा दो औरतों के बराबर है। अगर (मय्यत की वारिस) दो से अधिक लड़कियां हों तो उन्हें तरका (जायदाद) का दो तिहाई दिया

जाए। और अगर एक ही लड़की वारिस हो तो आधी जायदाद उसकी है। अगर मय्यत औलाद वाली हो तो उसके माता-पिता में से हर एक को जायदाद का छटा हिस्सा मिलना चाहिए और अगर उसकी संतान न हो और माता-पिता ही उसके वारिस हों तो मां को तीसरा भाग दिया जाए और अगर मय्यत के भाई बहन भी हों तो मां छटे हिस्से की हक़दार होगी। (यह सब हिस्से उस वक़्त निकाले जाएंगे) जब कि वसीयत जो मय्यत ने की हो पूरी करदी जाए क़र्ज़ जो उस पर हो अदा कर दिया जाए। और तुम नहीं जानते कि तुम्हारे मां-बाप और तुम्हारी औलाद में से कौन तुम से बहुत क़रीब है। यह हिस्से अल्लाह ने मुक़र्रर कर दिए हैं और अल्लाह यक़ीनन सब हक़ीक़तों से वाक़िफ़ और सारी भलाईयों का जानने वाला है।

और तुम्हारी बीवियों ने जो कुछ छोड़ा हो, उसका आधा हिस्सा तुम्हें मिलेगा, अगर वह बेऔलाद हों, वरना औलाद होने की सूरत में जायदाद का एक चौथाई हिस्सा तुम्हारा है। जबकि वसीयत जो उन्होंने की हो पूरी कर दी जाए और क़र्ज़ जो उन्होंने छोड़ा हो अदा कर दिया जाए और वह तुम्हारी जायदाद में से चौथाई के हक़दार होंगे, अगर तुम बेऔलाद हो, वरना संतान होने की सूरत में उनका हिस्सा आठवां होगा। बाद उसके कि जो वसीयत तुम ने की हो वह पूरी कर दी जाए और जो क़र्ज़ तुम ने छोड़ा हो वह अदा कर दिया जाए।

और अगर वह मर्द या औरत (जिसकी जायदाद बांटने योग्य है) बेऔलाद भी हो और उसके मां बाप भी ज़िन्दा न हों, मगर उसका एक भाई या एक बहन मौजूद हो तो भाई और बहन को छटा हिस्सा मिलेगा। और भाई बहन एक से अधिक हों तो कुल जायदाद के एक तिहाई में वह सब शरीक होंगे जब कि वसीयत जो की गई हो पूरी कर दी जाए और क़र्ज़ जो मय्यत ने छोड़ा हो अदा कर दिया जाए शर्त यह है कि वह नुक़सान पहुंचाने वाला न हो। यह हुक्म है अल्लाह की तरफ़ से और अल्लाह अक़्ल वाला और देखने वाला और रहम-दिल हैं।"

मुख़्तसर तौर पर यह कहा जा सकता है कि इन आयात में पहले औलाद। फिर माता-पिता और फिर दूसरे हिस्सेदार बयान कर दिए गए हैं। इस्लाम विरासत के बारे में बड़े विस्तार के साथ पूरी रहनुमाई देता है। इन आयात में बुनियादी उसूल बयान कर दिए गए हैं। पूरे विवरण के लिए हमें हदीस की तरफ़ सम्पर्क करना पड़ेगा। यह ऐसा विषय है

जिसकी जांच में पूरी ज़िन्दगी लगाई जा सकती है। जबकि अरुन शौरी सिर्फ़ दो आयात पढ़कर ख़ुद क़ानूने-ए-विरासत पर राय देने के क़ाबिल समझता है।

इसकी मिसाल उस व्यक्ति की सी है जो गणित की एक उलझी हुई मसावात (समीकरण) हल करना चाहता है लेकिन गणित के ज्ञान के बुनियादी उसूल भी नहीं जानता। मिसाल के तौर पर वह उसूल जिस **BODMAS** कहा जाता है, यानी

- **BO: Brackets off**
- **D: Division**
- **M: Multiplication**
- **A: Addition**
- **S: Substraction**

यह क्रम **BODMAS** का उसूल कहलाता है। अगर इस क्रम को नज़र अंदाज़ कर दिया जाए, आप पहले घटा करें फिर गुणा करें फिर जमा कर दें तो यक़ीनन आप का जवाब ग़लत होगा, इसी तरह का मुआमला अरुन शौरी का है।

एक सीधा सा उसूल है कि आप माता-पिता और पति-पत्नी को हिस्सा अदा करने के बाद औलाद में जायदाद बाटेंगे। और यह सम्भव ही नहीं है कि इस तरह हिस्सों का कुल जोड़ एक से अधिक आ जाए।

मुझे उम्मीद है कि आप को अपने सवाल का जवाब मिल गया होगा।

प्र०-: मैं एक नव-मुस्लिम हूं। मैंने 1980 में ईसाईयत छोड़ कर इस्लाम स्वीकार किया, मैं अपने माता-पिता को यह यक़ीन किस तरह दिला सकती हूं कि क़ुरआन, इंजील की नक़ल नहीं है?

डॉ० ज़ाकिर नाइक.. मेरी बहन ने एक सवाल पेश किया। इन्होंने यह भी बताया है कि वह पहले मसीही थीं और फिर उन्होंने इस्लाम क़ुबूल कर लिया। मैं इन्हें मुबारकबाद देना चाहूंगा और एक बार नहीं बल्कि तीन बार मुबारकबाद देना चाहूगा। मैंने पहले कहा था कि मैं

देहरिये को मुबारकबाद देता हूं कि इसने "ला इलाहा" तो कह दिया है। बहन को मैं तीन बार मुबारकबाद इस लिए दे रहा हूं कि उसने "ला इलाहा" कहने के बाद "इल्लल्लाह" भी कह दिया है और "मुहम्मदुर्र रसूल अल्लाह" भी कह दिया है।

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ الرَّسُوْلُ اللّٰهِ ط

"अल्लाह के सिवा कोई मअबूद नहीं और मुहम्मद (स.अ.व.) अल्लाह के रसूल हैं।"

इसलिए मैं अपनी बहन को मुबारकबाद देता हूं और अब आता हूं उनके सवाल की तरफ़ सवाल यह है कि वे अपने माता-पिता के सामने यह बात किस तरह साबित करेंगी कि क़ुरआन बाइबल की नक़ल नहीं है या बाइबल से फ़ायदा नहीं उठाता।

जैसा कि मैंने पहले आप को बताया कि एक तारीख़ी हक़ीक़त ही ऐसी है जो इस क़िस्म की किसी बात की सम्भावना ही ख़त्म कर देती है और वह हक़ीक़त यह है कि पैग़म्बर इस्लाम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा स.अ.व. उम्मी थे। यानी पढ़े लिखे नहीं थे।

क़ुरआन कहता है:

اَلَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الرَّسُوْلَ النَّبِيَّ الْاُمِّيَّ الَّذِىْ يَجِدُوْنَهٗ
مَكْتُوْبًا عِنْدَهُمْ فِى التَّوْرٰةِ وَالْاِنْجِيْلِ ط(الاعراف:۱۵۷)

"(पस आज यह रहमत उन लोगो का हिस्सा है) जो उस पैग़म्बर नबी उम्मी (स.अ.व.) की फ़रमाबरदारी करें जिसका ज़िक्र उन्हें अपने यहां तौरेत और इंजील में लिखा हुआ मिलता है।"

और बाइबल में कहा गया है:

"और फिर वह किताब किसी अन-पढ़ को दें और कहें इसको पढ़ और वह कहे मैं तो पढ़ना नहीं जानता।"

(यसअयाह, अध्याय12:29)

क़ुरआन ने कहा कि इस बात का ज़िक्र इंजील में मौजूद है और अगर आप इंजील का अध्ययन करें तो मालूम होगा कि वाक़ई मौजूद है। वह पूर्वी भाषाए जानने वाले जो यह दावा करते हैं कि पैग़म्बर

इस्लाम (स.अ.व.) ने इंजील से फ़ायदा किया था (नऊज़ुबिल्लाह), वह यह बात नज़रअंदाज़ कर देते हैं कि इस वक़्त तक इंजील का अरबी ज़बान में कोई अनुवाद हुआ ही नहीं था।

'एहदनामा अतीक़' का प्रचीन अरबी अनुवाद भी पैग़म्बर इस्लाम (स.अ.व.) के 200 साल बाद का है जबकि 'एहदनामा जदीद' का अरबी अनुवाद तो कहीं 1616ई० मे जाकर हुआ था। यानी एक हज़ार साल बाद यह बात मैं मानता हूं कि दोनो किताबों में कहीं-कहीं कुछ समानताए मौजूद हैं लेकिन उसका कारण फ़ायदा उठाना नहीं है बल्कि बात यह है कि दर-अस्ल एक तीसरा साधन है जो दोनों किताबों की असल है।

तमाम इल्हामी किताबों (अल्लाह की तरफ़ से) का बुनियादी पैग़ाम यानी तौहीद तो एक ही है गोया तमाम इल्हामी किताबों का पैग़ाम एक ही है। लेकिन मुआमला यह है कि यह आसमानी किताबें एक ख़ास समय के लिए थीं। जैसा कि मैंने पहले भी बताया कि "वही" की जानी-पहचानी सूर: किसी ख़ास मुद्दत या ख़ास जाति के लिए थी। इस लिए वह अपनी असल हालत में बाक़ी न रह सकी और उनमें कई बदलाव पाए गए। अब इन किताबों में बहुत सी तबदीलियां भी मौजूद हैं। लेकिन इन बदलाव के बावजूद चूंकि उनकी असल एह ही थी, इस लिए एक जैसी बातों का पाया जाना बिल्कुल ठीक है।

सिर्फ़ इन समानताओं की बिना पर यह दावा कर देना बिल्कुल ग़लत होगा कि क़ुरआन-ए-मजीद में इंजील या दूसरे सहाइफ़ (इस्लामी ग्रंथ) से फ़ायदा उठाया गया है। या यह कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (स.अ.व.) ने बाइबल से नक़ल करके क़ुरआन को लिख दिया था। (नऊज़ुबिल्लाह मिन ज़ालिक) और इस तरह तो यह कहना भी ज़रूरी हो जाता है कि 'एहदनामा जदीद' में 'एहदनामा अतीक़' की नक़ल की गई है क्योंकि इन दोनों में भी बहुत सी बातें एक जैसी हैं, इसलिए हज़रत ईसा ने भी पुराने एहदनामें से फ़ायदा उठाया होगा।

(नऊज़ूबिल्लाह) लेकिन बात यह है कि इन दोनों सहाइफ़ (इस्लामी ग्रंथ) की भी असल जहग एक ही है।

मिसाल के तौर पर किसी परिक्षा के दौरान कोई व्यक्ति किसी से नक़ल करता है, क्या वह अपने जवाब में कभी उस व्यक्ति का ज़िक्र करेगा जिस से नक़ल की जा रही है। लेकिन क़ुरआन-ए-मजीद में अल्लाह तआला ने स्पष्ट तौर पर हज़रत मूसा और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का ज़िक्र फ़रमाया है। क़ुरआन उन नबियों का ज़िक्र पूरी इज़्ज़त के साथ करता है और मानता है कि यह अल्लाह तआला के महान पैग़म्बर थे। अगर क़ुरआन नऊज़ूबिल्लाह उनकी नक़ल होती तो कभी उनका ज़िक्र न करता। लिहाज़ा इससे भी साबित हो जाता है कि क़ुरआन इंजील की नक़ल नहीं है।

सिर्फ़ ऐतिहासिक सच्चाइयों से हो सकता है कि किसी व्यक्ति के लिए यह फ़ैसला करना कुछ मुश्किल हो कि क़ुरआन और इंजील में से कौन सी किताब सही है। लिहाज़ा हम अपनी साइंसी शिक्षा से मदद लेते हैं।

सरसरी जायज़ा लेने पर क़ुरआन और बाइबल की बहुत सी बातें, दास्तानें और बारीकियां एक जैसी मालूम होती हैं लेकिन अगर आप विश्लेषण करें तो फ़र्क़ आपके सामने आ जएगा। मिसाल के तौर पर इंजील की किताब पैदाइश में कहा गया है कि दुनिया 6 दिन में बनाई गई थी, लेकिन यहां "दिन" से मुराद "24 घंटे वाला दिन" है। दूसरी तरफ़ क़ुरआन में भी फ़रमाया गया है कि कायनात 6 दिनों में बनाई गई थी।

إِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِىْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ط (الاعراف:٥٤)

"हक़ीक़त में तुम्हारा रब अल्लाह ही है जिसने आसमानों और ज़मीनों को छः दिनों में पैदा किया।"

यही बात सूर:यूनुस की तीसरी आयत में और कुछ दूसरी जगहों पर भी की गई है कि अल्लाह तआला ने कायनात को 6 "दिनों" में पैदा फ़रमाया। अरबी शब्द अय्याम वास्तव में "योम" का बहुवचन है।

योम का अर्थ "दिन" भी होता है और एक लम्बा ज़माना भी। लिहाज़ा जब "6 अय्याम (दिन)" से मतलब 6 लम्बे दोर या ज़माने लिए जाएं तो जदीद साइंस भी इस बयान को मानती है, लेकिन जब बाइबल यह दावा करती है कि कायनात 24 घन्टे वाले 6 दिनों में बनी थी तो कोई भी वैज्ञानिक इस बयान को मानने के लिए तैयार नहीं होता।

इसी तरह बाइबल कहती है कि दिन और रात पहले दिन बना दिए गए थे जबकि सूरज को चौथे दिन बनाया गया था। भला यह किस तरह सम्भव है कि नतीजा पहले मिला हो और कारण बाद में पैदा किया जाए। रौशनी का साधन ही सूरज है बग़ैर सूरज के दिन और रात की कल्पना ही नहीं की जा सकती। लेकिन बाइबल किताब पैदाइश की आरम्भिक आयात में यही बताती है कि रौश्नी, सूरज की रचना से 3दिन पहले ही पैदा हो गई थी।

यह भी एक ग़ैर-साइंसी और न समझ में आने वाला बयान है कि दिन और रात तो पहले पैदा हो जाएं और ज़मीन बाद में वुजूद में आए। हालांकि दिन और रात तो असल में ज़मीन ही की हरकत का नतीजा हैं लेकिन बाइबल यही कहती है।

दूसरी तरफ़ क़ुरआन भी रौशनी और सूरज की रचना का ज़िक्र करता है लेकिन क़ुरआन यह ग़ैर-साइंसी बल्कि असम्भव तरतीब पेश नहीं करता। आप किया समझते हैं? किया आप यह ख़याल कर सकते हैं कि रसूल अल्लाह (स.अ.व.) ने बाइबल से यह बातें लीं लेकिन उनका सुधार कर दिया? ऐसा नहीं हो सकता क्योंकि आज से 1400 साल पहले यह बातें किसी की जानकारी में नहीं थीं।

बाइबल में बताया गया है:

"ख़ुदा ने कहा कि आसमान के नीचे का पानी एक जगह जमा होकर ख़ुश्की नज़र आए और ऐसा ही हुआ। और ख़ुदा ने ख़ुश्की को ज़मीन कहा और जो पानी जमा हो गया था इसको समुद्र और ख़ुदा ने देखा कि अच्छा है।...........फिर तीसरा दिन हुआ।

फिर खुदा ने दो बड़े नय्यर (चमकदार सितारे) बनाए और एक नय्यर अकबर (सूरज) कि दिन पर हुक्म करे और एक नय्यर असग़र (चांद) कि रात पर हुक्म करे और उसने सितारों को भी बनाया.... फिर चौथा दिन हुआ।"

(पैदाइश 1:20-9)

लेकिन आज जदीद साइंस हमें बताती है कि चांद और ज़मीन वास्तव में एक ही बड़े सितारे को हिस्से हैं। दूसरे शब्दों में यह किसी तरह सम्भव नहीं है कि ज़मीन सूरज से पहले वुजूद में आ जाए। लेकिन ऊपर लिखी बातों में आप देख सकते हैं कि बाइबल यही बता रही है कि ज़मीन तीसरे दिन पैदा हुई जबकि सूरज चौथे दिन वुजूद में आया।

बाइबल यह भी कहती है कि तमाम पेड़-पौधे तीसरे दिन वुजूद में आए!

"और खुदा ने कहा कि ज़मीन घास और बीजदार बूटियों को और फलदार पेड़ों को जो अपनी-अपनी क़िस्म के अनुसार फलें और जो ज़मीन पर अपने आप ही बीज रखें उगाए और ऐसा ही हुआ।"

(पैदाइश 1:12-11)

जब सूरज चौथे दिन वुजूद में आया। सूरज की रौशनी के बिना पेड़-पौधों का विकास सम्भव ही नहीं। इसी तरह सूरज और चांद के बारे में बताया गया है कि एक नय्यर असग़र है और एक नय्यर अकबर, एक बड़ी रौशनी है एक छोटी रौशनी। यानी बाइबल चांद को भी एक खुद बखुद चमकने वाली वस्तु बताता है।

जबकि क़ुरआन का बयान मैंने पहले आपके सामने पेश किया। सूरःफ़ुरक़ान की आयत के द्वारा पता चलता है कि चांद की रौशनी अपनी नहीं है।

तो फिर यह किस तरह सम्भव है कि हमारे पैग़म्बर (स.अ.व.) ने बाइबल से यह बातें नक़ल की (नऊज़ूबिल्लाह) लेकिन बाइबल की सारी साइंसी ग़लतियां सही कर दीं। यह किसी भी तरह सम्भव नहीं है।

अगर आप उन दास्तानों और कहानियों का जायज़ा लें जो बाइबल और क़ुरआन में एक जैसी हैं तो उनके बीच भी आपको फ़र्क़ नज़र आ जाता है। मिसाल के तौर पर बाइबल हमें हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के बारे में बताती है कि ज़मीन पर पहले इंसान हज़रत आदम अलैहिस्सलाम थे। लेकिन बाइबल उनकी ज़मीन पर आने का समय भी तय कर देती है जो कि लग-भग 5800 साल पहले बनता है। जबकि आज साइंस पुरानी इमारतों की सहायता से यह सिद्ध कर चुकी है कि ज़मीन पर इंसान इससे हज़ारों साल पहले भी मौजूद था।

इसी तरह बाइबल हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के बारे में भी विस्तार से बताती है। और तूफ़ान-ए-नूह अलैहिस्सलाम का भी ज़िक्र करती है। बाइबल का कहना है कि यह तूफ़ान तमाम दुनिया का था, यानी पूरी पृथ्वी पर आया था। और सारी ज़मीन पर मौजूद तमाम ज़िन्दा वस्तु वस्तुएं इस तूफ़ान के नतीजे में फ़ना हो गई थी। सिवाए उनके जो हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की कश्ती में मौजूद थे। बाइबल इस तूफ़ान का समय 21वीं या 22वीं सदी ईसा पूर्व का बताती है। आज आसारे क़दीमा के माहिरीन हमें बताते हैं कि मिस्र का ग्यारहवां बादशाह ख़ानदान और बाबुल में तीसरा बादशाह ख़ानदान उस समय राज कर रहे थे लेकिन उन इलाक़ों में इस तूफ़ान के किसी क़िस्म के प्रभाव के निशान नहीं मिलते।

क़ुरआन भी तूफ़ान-ए-नूह अलैहिस्सलाम का ज़िक्र करता है। लेकिन एक तो क़ुरआन इस तूफ़ान का समय तय नहीं करता और दूसरे क़ुरआनी बयान के अनुसार यह एक मुक़ामी तूफ़ान था। क़ुरआन इस तूफ़ान के तमाम दुनिया में होने का दावा नहीं करता। क़ुरआन के अनुसार यह सैलाब सिर्फ़ नूह की क़ौम के लिए आया था। और यह एक ऐसा बयान है जिस पर आज के वैज्ञानिक भी कोई ऐतराज़ नहीं कर सकते।

इन सच्चाइयों की रौशनी में आप खुद यह फ़ैसला कर सकते हैं कि क़ुरआन-ए-मजीद में बाइबल से फ़ायदा मौजूद है या नहीं?

प्र०-: पहली बात तो मैं यह करना चाहूंगा कि तमाम हिंदू गुरू रजनीश को भगवान नहीं समझते। दूसरे मैं डॉ० साहब से पूछना चाहूंगा कि क़ुरआन हमें बताता है कि हर जाति की तरफ़ हिदायत भेजी गई थी। तो क्या आप मानते हैं कि पवित्र वेद भी इल्हामी किताबें हैं।

डॉ० ज़ाकिर नाइक.. भाई ने सवाल पूछने से पहले एक बात यह की कि सारे हिन्दू गुरू रजनीश को भगवान नहीं समझते। मैंने कहीं यह दावा नहीं किया कि तमाम हिन्दू गुरू रजनीश को भगवान मानते हैं, मेरी सारी बातचीत रिकार्ड हो रही है। आप इस बातचीत की वीडियो रिकार्डिंग देख सकते हैं लिहाज़ा यहां तो यक़ीनन आपको ग़लतफ़हमी हुई है। मैंने कहा था कि "कुछ हिन्दू गुरू रजनीश को भगवान समझते हैं। मैंने तमाम हिन्दुओं के बारे में यह दावा हरगिज़ नहीं किया। मैं हिन्दू मत् के बारे में, हिन्दुओं के विश्वास के बारे में अच्छी तरह जानता हूं। मैं उन मूल ग्रंथों का अध्ययन भी कर चुका हूं।

जहां तक भाई के उस सवाल का सम्बंध है चूंकि क़ुरआन यह बताता है कि अल्लाह तआला ने बहुत से नबी भेजे हैं और कई सहाइफ़ (पवित्र इस्लामी ग्रंथ) उतारे हैं तो क्या मैं वेद, शास्त्रों और दूसरे पवित्र ग्रंथों पर भी यक़ीन रखता हूं? दूसरे पैग़म्बरों पर भी यक़ीन रखता हूं उनका बुनियादी सवाल यही है। मैं उनकी बात से सहमती करता हूं। क़ुरआन हमें यही बताता है।

اِنَّآ اَرْسَلْنٰکَ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا وَاِنْ مِّنْ اُمَّةٍ اِلَّا خَلَافِيْهَا نَذِيْرٌ ٥ط (فاطر:٢٤)

"हमने तुम को हक़ के साथ भेजा है अल्लाह की बात पहुंचाने वाला और डराने वाला बनाकर। और कोई उम्मत ऐसी नहीं गुज़री जिसमें डराने वाला न भेजा गया हो।"

وَلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ٥ط (الرعد:٧)

"और हर क़ौम के लिए एक रहनुमा है।"

आपका सवाल यह है कि क्या इन आयात की रौशनी में, मैं वेदों पर या वेदों के इलहामी (ख़ुदाई) होने पर यक़ीन रखता हूं? क्या मैं दूसरे पैग़म्बरों पर यक़ीन रखता हूं? बात यह है कि क़ुरआन 25 नबियों का ज़िक्र नाम लेकर करता है। हज़रत आदम, हज़रत इब्राहीम, हज़रत इस्माईल, हज़रत मूसा, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) समेत 25 नबियों के नाम क़ुरआन मजीद में मौजूद हैं लेकिन हदीसों से मालूम होता है कि नबियों की कुल संख्या एक लाख चौबीस हज़ार से अधिक थी। उनमें से 25 के नाम हमें मालूम हैं। दूसरों के बारे में सम्भावना ही ज़ाहिर की जा सकती है। यानी किसी व्यक्ति के बारे में यही कहा जा सकता है कि शायद वह नबी थे, शायद नहीं थे। हम यक़ीन से नहीं कह सकते।

तो क्या मैं वेदों के इलहामी (ख़ुदाई) होने पर यक़ीन रखता हूं? पहले हमें देखना होगा कि क्या वेदों की शिक्षा और क़ुरआनी शिक्षा में कोई समानता पाई जाती है? जी हां! ऐसी समानता मौजूद है।

मिसाल के तौर पर वेदों में ख़ुदा का ज़िक्र मौजूद है। यजुर्वेद के तीसरे अध्याय की आयत नम्बर 32 में कहा गया है:

"तुम ख़ुदा की कोई कल्पना क़ायम नहीं कर सकते।"

यजुर्वेद, अध्याय 33, आयत 3 में लिखा है:

"ख़ुदा शरीर और शक्ल से पाक है।"

यजुर्वेद के अध्याय नम्बर 40, आयत नम्बर 8 में भी यही कहा गया है:

"ख़ुदा न शरीर रखता है और न सूरत।"

आगे चलकर यह भी कहा गया है कि:

"ख़ुदा एक ही है, दूसरा कोई ख़ुदा नहीं है, हरगिज़ नहीं।"

इसी तरह ऋग्वेद, जिल्द8, अध्याय1; आयत1 में कहा गया:

"तमाम तारीफ़ें सिर्फ़ इसी के लिए हैं।"

ऋग्वेद, प्रति6, अध्याय 45, आयत 16 में कहा गया है:

"सिर्फ़ एक ही ख़ुदा है, इसी की इबादत (पूजा) करो।

हमें वेदों के इस तरह के बयानों को स्वीकार करने में हरगिज़ सोच-विचार नहीं करना होगा। यह बयानात इलहामी (ख़ुदाई) भी हो सकते हैं। हमारे लिए सही और ग़लत मालूम करने का एक ही मैयार है और वह मैयार क़ुरआन-ए-मजीद है। क्योंकि क़ुरआन ही अल्लाह तआला की तरफ़ से आख़िरी और मज़बूत हिदायत का साधन है। लिहाज़ा हम मुसलमानों को इन बयानात को मानने यानी अल्लाह की ओर से स्वीकार करने पर कोई आपत्ति नहीं होगी लेकिन कुछ दूसरी बातें भी हैं जैसा कि मैं पहले भी बता चुका हूं, इन किताबों में बदलाव होते रहें हैं। लिहाज़ा इन किताबों का एक हिस्सा ऐसा भी है जो कि इंसानी है, जो बदलाव के नतीजे में उनका हिस्सा बना है। और इस हिस्से को अल्लाह की तरफ़ से मानना सम्भव नहीं है। ग़ैर-साइंसी और हक़ीक़त के उलट बयान जिस तरह बाइबल में मौजूद हैं इसी तरह वेदों में भी मौजूद हैं। इस समय उन लोगों के हवाले से बात नहीं करना चाहता।

तो बात यह है कि हमें यह मानने पर कोई ऐतराज़ नहीं कि अपनी असल सूरत में यह किताबें इलहामी (ख़ुदाई) हो सकती हैं। इंजील के बारे में हम यक़ीन से कह सकते हैं कि अपनी असल सूरत में यह "वही" ख़ुदावंदी थी। क्योंकि क़ुरआन हमें बताता हैं कि यह वह "वही" है जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर उतरी थी।

इस तरह पैग़म्बरों का मुआमला है। यक़ीनन बहुत से पैग़म्बर नबी बनाकर भेजे हुए हैं। और जहां तक राम और कृष्ण आदि जैसी शख़्सियात के बारे में पूछा जाता है कि क्या वह भी नबी थे? तो हमारा जवाब होगा कि "वह नबी हो भी सकते हैं और नहीं भी" यानी हम यक़ीन के साथ कुछ नहीं कह सकते। मुझे उन लोगों से बिल्कुल सहमती नहीं है जो कहते हैं कि राम अलैहिस्सलाम या कृष्ण अलैहिस्सलाम। यह ग़लत है।

मैं यही कहता हूं कि उनका नबी होना मुम्किन ज़रूर है लेकिन

मान लीजिए कि राम वाक़ई अल्लाह के भेजे हुए पैग़म्बर थे। और मान लीजिए कि वेद वाक़ई इलहामी (ख़ुदाई) किताबें थीं। फिर भी कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। क्योंकि ज़ाहिर है कि यह एक ख़ास ज़माने के लिए थे। और इसी ज़माने तक सीमित थे। उनका पैग़ाम सिर्फ़ एक ख़ास ज़माने के लिए ही था। हमेशा हमेशा के लिए नहीं था। क़ुरआन अल्लाह तआला का आख़िरी और मज़बूत संदेस है जो हमेशा-हमेशा के लिए है, हर ज़माने और हर जाति के लिए है।

इंजील और वेद का मुआमला यह है कि अगर अपनी असल सूरत में यह अल्लाह की तरफ़ से थे तो अपने ज़माने ही के लिए थे। आज के लिए नहीं। क़ुरआन आख़िरी "वही" है और हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) अल्लाह तआला के आख़िरी पैग़म्बर हैं। लिहाज़ा आज हमें हिदायत के लिए क़ुरआन और जिस पर क़ुरआन उतरा यानी हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) ही की पैरवी (फ़रमाबरदारी) करना पड़ेगी।

प्र०-: मेरा सवाल यह है कि ख़ुदा को किस ने पैदा किया?

डॉ० ज़ाकिर नाइक.. मेरी बहन ने सवाल पूछा है कि ख़ुदा को किसने पैदा किया है? यह एक ऐसा सवाल है जो अधिकतर बे-दीन लोगों की तरफ़ से पूछा जाता है। दहरिये ज़्यादातर यह सवाल पूछा करते हैं। इससे मुझे एक क़िस्सा याद आया। एक बार मेरे एक क़रीबी दोस्त को बम्बई के एक अक़्लियत परस्त ग्रुप के साथ बहस हो गई। उसने उन्हें अल्लाह के वुजूद के बारे में क़ायल करने के लिए उनसे सवालात करना शुरू किए। उसने उन से पूछा कि कपड़ा कहां से आया है? किताब कहां से आई है? क़लम कहां से आया है? हर चीज़ के बारे में यह साबित करने के बाद कि उसका कोई न कोई पैदा करने वाला मौजूद है, उसने उनसे पूछा कि बताओ सूरज कहां से आया है? आप यह मान चुके है कि हर चीज़ का कोई पैदा करने वाला मौजूद है। यह कोई एक व्यक्ति भी हो सकता है और एक कारख़ाना भी हो सकता है। लिहाज़ा अब मेरे इन सवालों का जवाब दो सूरज और चांद का ख़ालिक़ (पैदा करने वाला) कौन है?

इन अक्लियत पसन्दों ने कुछ देर के बाद कहा कि हम यह मान लेते हैं कि हर वस्तु का कोई पैदा करने वाला मौजूद है, लेकिन हमारी शर्त यह है कि आप अपना बयान नहीं बदलेंगे यानी इस बयान पर क़ायम रहेंगे कि हर वस्तु का कोई पैदा करने वाला भी होता है। अपने इस बयान से फिरेंगे नहीं।

मेरा वह दोस्त बहुत खुश हुआ। उसका ख़याल था कि वह सफ़ल हो चुका है। लिहाज़ा उसने अपने सवालात का सिलसिला दोबारा शुरू किया। सूरज को किसने बनाया है? चांद को किसने बनाया है? मुझे मेरी मां ने जन्म दिया, उन्हें उनकी माता ने जन्म दिया लेकिन सवाल यह है कि पहला ख़ालिक़ (पैदा करने वाला) कौन था?

पहला ख़ालिक़ अल्लाह तआला है। उसने हर वस्तु को पैदा किया है। मेरे दोस्त का ख़याल था कि वह इस बहस में जीत चुका है।

लेकिन फिर देहरिये ने एक सवाल किया। उसने कहा कि हम अल्लाह तआला पर ईमान ले आते हैं लेकिन शर्त वही है कि आप अपनी बात से फिरेंगे नहीं। अपना बयान नहीं बदलेंगे और सवाल यह है कि अल्लाह तआला को किसने पैदा किया?

मेरे दोस्त को सख़्त दिमाग़ी कष्ट पहुंचा। उसके पास इस सवाल का कोई जवाब नहीं था। वह सारी रात सो नहीं सका। अगले दिन वह मेरे पास आया और उसने यह पूरा क़िस्सा मुझे सुनाया। उसकी बात सुनकर मुझे अंदाज़ा हुआ कि वह अल्लाह तआला के वुजूद जांच-परख के लिए वही बयान इस्तेमाल कर रहा था जो पहले भी कुछ विद्वान प्रयोग कर चुके हैं। और यह अक़्ल और सच्ची बात को कहने का एक एहम उसूल नज़र अंदाज़ कर देते हैं और अपनी बात का खुद तजज़िया (विशलेषण) नहीं करते।

अगर आप मेरी बात का विशलेषण करें तो आप देखेंगे कि मैंने कभी भी यह बयान इस्तमाल नहीं किया कि हर वस्तु का कोई पैदा करने वाला ज़रूर होता है। क्योंकि अगर मैं ऐसा कहता हूं तो खुद ही फंस जाता। इसी लिए मैंने यह बयान पेश नहीं किया।

मैंने तो खुद देहरिये से यह सवाल किया था कि किसी भी वस्तु के बारे में जानकारी किस के पास होगी? और उसका जवाब था कि उस वस्तु के बनाने वाले के पास, यह जवाब मैंने नहीं बल्कि एक देहरिये ने दिया था।

मान लीजिए यह सवाल मुझ से किया जाता कि:

"ज़ाकिर भाई, वह पहला व्यक्ति कौन होगा जो किसी भी अज्ञात मशीन के बारे में हमें पूरी जानकारी उपलब्ध करा सके?"

मेरा जवाब यह होगा कि कोई भी वस्तु जो बनाई गई है, जो एक शुरूआत रखती है उसके बारे में, उसकी क्रिया के बारे में जानकारी उपलब्ध करने वाला पहला व्यक्ति उसका अविष्कार करने वाला या बनाने वाला ही होगा। मैं यहां अपनी बात इस्तेमाल कर रहा हूं क्योंकि में फंसना नहीं चाहता।

चूनांचे जब मैं यह जवाब देता हूं कि हर उस वस्तु के बारे में, जो एक शुरूआत रखती है, जो किसी समय पैदा होती है, उसके बारे में ज्ञान रखने वाली पहली शख़्सियत उसके ख़ालिक़ की होगी तो उस बयान को इस्तेमाल करते हुए यह भी साबित किया जा सकता है कि क़ुरआन मंज़िल मिन अल्लाह है यानी अल्लाह की तरफ़ से है।

साइंस हमें बताती है कि इस कायनात का एक आरम्भ है। यह किसी समय अदम से वुजूद में आई थी। इसी तरह सूरज की भी एक शुरूआत है। चांद की भी एक शुरूआत है। लिहाज़ा यहां भी सवाल पैदा होता है कि उनकी अवस्था और कार्य के बारे में हमें जानकारी कौन उप्लब्ध करा सकता है। और जवाब होगा "कायनात का पैदा करने वाला अल्लाह तआला।"

आप ने सवाल पूछा कि अल्लाह को किसने पैदा किया? यह ऐसा ही सवाल है जैसे कोई आप से यह सवाल करे:

"मेरे भाई टाम ने एक बच्चे को जन्म दिया है, बताएं यह लड़का है या लड़की?

मैं एक डॉ० हूं और जानता हूं कि एक मर्द बच्चे को जन्म नहीं दे सकता लिहाज़ा बच्चे के लिंग के बारे में सवाल है।

इसी तरह अल्लाह तआला के बारे में यह सवाल पूछना ही ग़लत है कि अल्लाह तआला को किसने बनाया है। यह सवाल ही बेमतलब है ख़ुदा होने का अर्थ ही यह है कि उसे किसी ने पैदा नहीं किया वह हमेशा से है।

उम्मीद है आप को अपने सवाल का जवाब मिल चुका होगा।

प्र०-: कुछ मुसतशिरक़ीन (पूर्वी भाषाओं के जानकार) यह दावा करते हैं बल्कि यह आरोप लगाते हैं कि वास्तव में नबी करीम (स.अ.व.) ने अरबों के समाजिक सुधार के लिए क़ुरआन लिखा था और उसे इलहामी (ख़ुदाई) इस लिए कहा गया ताकि उसकी क़ुबुलियत में इज़ाफ़ा हो सके। आप का किया ख़याल है?

डॉ० ज़ाकिर नाइक.. मेरे भाई ने एक सवाल पेश किया है और उनकी इस बात से मैं भी सहमती रखता हूं कि कुछ मुसतशिरक़ीन (पूर्वी भाषाओं के जानकार) वाक़ई यह कहते हैं कि हमारे महबूब पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (स.अ.व.) ने ग़लत बयानी की थी। (नऊज़ूबिल्लाह) और यह कि क़ुरआन को कलाम-ए-इलाही क़रार देने से उनका मक़सद यह था कि अरबों का सुधार किया जा सके।

पहली बात तो यह है कि नबी करीम स.अ.व. और क़ुरआन-ए-मजीद का मक़सद सिर्फ़ अरबों का सुधार नहीं था बल्कि पूरी मानवजाति के सुधार के लिए था। उनका पैग़ाम सिर्फ़ अरबों के लिए नहीं बल्कि पूरी मानवजाति के लिए था।

लेकिन अगर यह बात मान भी ली जाए तो असल सवाल यह पैदा होता है कि अगर रसूल अल्लाह (स.अ.व.) अरबों का अख़लाक़ी तौर पर सुधार करना चाहते थे तो वह इसके लिए ग़ैर-अख़्लाक़ी तरीक़ों को क्यों इस्तेमाल कर सकते थे। एक अख़्लाक़ी समाज की रचना ग़ैर-अख़्लाक़ी तरीक़ों से किस तरह की जा सकती है।

आप ख़ुद सोचिए। अगर आप समाज का अख़्लाक़ी सुधार करना चाहते हों तो किया आप अपने काम की शुरूआत झूट से करेंगे?

झूट और ग़लत बयानी से काम सिर्फ़ वही लोग लेते हैं जो वास्तव मे अपना फ़ायदा चाहते हैं। जो ग़लत लोग होते हैं। ऐसे लोग ज़बानी तोर पर लाख कहते रहें कि वह दुनिया का सुधार करना चाहते हैं लेकिन वास्तव में वह माल व दौलत की इच्छा नहीं रखते है। और पैग़म्बर इस्लाम (स.अ.व.) के बारे में यह मैं पहले ही साबित कर चुका हूं कि उन्हें माल व दौलत व दुनिया का कोई लालच नहीं था। तो अगर आपका मक़सद सच्चाई है तो इस मक़सद को हासिल करने के साधन भी सच्चाई पर बने हुए होने चाहिए।

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ قَالَ اُوْحِيَ اِلَيَّ وَلَمْ
يُوْحَ اِلَيْهِ شَيْءٌ وَّمَنْ قَالَ سَاُنْزِلُ مِثْلَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ ط(الانعام:٩٣)

"और उस व्यक्ति से बड़ा ज़ालिम और कौन होगा जो अल्लाह पर झूटा बोहतान (आरोप) घड़े, या कहे कि मुझ पर "वही" आई है इस हाल में इस पर कोई "वही" न उतरी हो, या जो अल्लाह की उतारी हुई वस्तु की तुलना में कहे कि मैं भी ऐसी वस्तु उतार कर दिखा "दूंगा"

अगर नबी करीम स.अ.व. (नऊज़ूबिल्लाह) ग़लत बयानी कर रहे होते तो यक़ीनन वह ख़ुद अपनी किताब में ऐसा करने वाले को बुरा भला न कहते। कोई भी ऐसा न करेगा क्योंकि अगर आगे चलकर कोई झूट सामने आजाए तो इसका अर्थ यह होगा कि वह ख़ुद को ही बुरा भला कह रहा था।

इसी तरह आगे चलकर क़ुरआन-ए-मजीद में फिर अल्लाह तआला फ़रमाता है:

تَنْزِيْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ ۝ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ۝
ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ ۝ فَمَا مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ عَنْهُ حَاجِزِيْنَ ۝ ط(الحاقة ٤٧:٤٣)

"यह रब्बुल आलामीन की तरफ़ से उतरा हुआ है और अगर इस (नबी स.अ.व.) ने ख़ुद घड़ कर कोई बात हमारी तरफ़ जोड़ दी होती

तो हम उसका दाहिना हाथ पकड़ लेते और उसकी रग-ए-गर्दन काट डालते फिर तुम मे से कोई (हमें) इस काम से रोकने वाला न होता।"

अगर नबी करीम (स.अ.व.) ने कभी कोई ग़लत बयानी की होती (नऊज़ूबिल्लाह) तो वह कभी यह बातें अपनी किताब में नहीं लिखते। अगर वह ऐसा करते तो ज़िन्दगी के किसी न किसी मरहले पर यह ग़लत बयानी ज़रूर पकड़ी जाती और उस वक़्त उन आयात का अर्थ किया होता?

इसी क़िस्म की बात क़ुरआन-ए-मजीद की निम्नलिखित आयात में भी की गई है:

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا فَاِنْ يَّشَاِاللّٰهُ يَخْتِمْ عَلٰى قَلْبِكَ وَيَمْحُ
اللّٰهُ الْبَاطِلَ وَيُحِقُّ الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهٖ اِنَّهٗ عَلِيْمٌ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ○ ط(الشوریٰ۲۴)

"किया यह लोग कहते हैं कि इस व्यक्ति ने अल्लाह पर झूटा बोहतान (आरोप) घड़ लिया है? अगर अल्लाह चाहे तो तुम्हारे दिल पर मुहर लगा दे। वह झूट को मिटा देता है और हक़ को अपने फ़रमानों से हक़ कर दिखाता है। वह सीनों में छुपे हुए राज़ जानता है।"

اِنَّمَا يَفْتَرِى الْكَذِبَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ○ (النحل:۱۰۵)

"(झूटी बातें नबी स.अ.व. नहीं घड़ता बल्कि) झूट वह लोग घड़ रहे हैं जो अल्लाह की आयात को नहीं मानते, वही हक़ीक़त में झूटे हैं।"

इस तरह क़ुरआन-ए-मजीद में कई जगहें ऐसी हैं जहां ख़ुद पैग़म्बर (स.अ.व.) की बात का सुधार किया गया है। अगर क़ुरआन (नऊज़ूबिल्लाह) ख़ुद रसूल अल्लाह (स.अ.व.) की रचना होती जैसा कि कुछ मुसतशिरक़ीन (पूर्वी भाषाओं के जानकार) कहते हैं तो वह ख़ुद इन बातों का ज़िक्र क्यों करते?

इसका एक स्पष्ट उदाहरण सूर:अबस में मिलता है:

عَبَسَ وَتَوَلّٰى ○ اَنْ جَآءَهُ الْاَعْمٰى ○ وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّهٗ يَزَّكّٰى ○ اَوْ يَذَّكَّرُ
فَتَنْفَعَهُ الذِّكْرٰى ○ اَمَّا مَنِ اسْتَغْنٰى ○ فَاَنْتَ لَهٗ تَصَدّٰى ○ وَمَا عَلَيْكَ اَلَّا يَزَّكّٰى ○
وَاَمَّا مَنْ جَآءَكَ يَسْعٰى ○ وَهُوَ يَخْشٰى فَاَنْتَ عَنْهُ تَلَهّٰى ○ (عبس:۱۰-۱)

"ना ख़ुश हुआ और बेरूख़ी बरती इस बात पर कि वह अन्धा

उसके पास आ गया। तुम्हें किया ख़बर शायद वह सुधर जाए या नसीहत पर ध्यान दे और नसीहत करना उसके लिए फ़ायदेमंद हो? जो व्यक्ति बेपरवाई करता है उसकी तरफ़ तो तुम ध्यान देते हो। हालांकि अगर वह न सुधरे तो तुम पर उसकी किया ज़िम्मेदारी है? और जो ख़ुद तुम्हारे पास दौड़ा आता है और डर रहा होता है, उस से तुम बेरूख़ी बरतते हो।"

यह सूर: उस वक़्त उतरी थी जब रसूल अल्लाह(स.अ.व.) कुछ कुफ़्फ़ार के सरदारों से बात कर रहे थे। और उस दौरान एक नाबीना (अन्धे) सहाबी जिनका नाम अब्दुल्लाह इब्ने मक्तूम था, वह इस बातचीत के दौरान उलझन पैदा कर रहे थे। नबी करीम स.अ.व. कुफ़्फ़ार के सरदारों से एहम बातचीत कर रहे थे। नाबीना सहाबी को इस दौरान कोई बात टोकनी नहीं चाहिए थी। नबी करीम (स.अ.व.) ने उन्हें डांट दिया। उनकी जगह कोई भी होता, कैसा ही व्यक्ति होता, यह बात ऐसी नहीं थी जिस पर ऐतराज़ किया जा सकता था। लेकिन यहां मुआमला रसूल अल्लाह (स.अ.व.) का था। आप (स.अ.व.) का किरदार इस क़द्र बुलंद था, इस क़द्र अज़ीम था, आप (स.अ.व.) ग़रीब और बे सहारा लोगों के इस क़द्र हमदर्द थे कि उस बात पर भी अल्लाह तआला ने यह आयात उतारीं। और आप (स.अ.व.) जब आप (स.अ.व.) से मिलते तो इस बात पर उनका शुक्रिया अदा करते कि उनकी वजह से अल्लाह तआला ने आपकी इस्लाह (सुधार) फ़रमाई।

इस क़िस्म की कई मिसालें क़ुरआन-ए-मजीद में मौजूद हैं। मिसाल के तौर पर सूर:तहरीम, सूर:नहल और सूर:अनफ़ाल।

अगर रसूल अल्लाह (स.अ.व.) ने अरबों के सुधार के लिए क़ुरआन ख़ुद लिखा होता तो साफ़ ज़ाहिर है कि यह वाक़िआत क़ुरआन में मौजूद न होते।

मुझे उम्मीद है कि आपको अपने सवाल का जवाब मिल गया होगा।

प्र०-: आपने अपनी बातचीत के दौरान ऐसी बहुत सी साइंसी सच्चाइयों

का ज़िक्र किया जो कि क़ुरआन-ए-मजीद में मौजूद हैं। मैं यह पूछना चाहता हूं कि किया क़ुरआन-ए-मजीद में गणित की जानकारी के सम्बंध में भी हक़ीक़ते मौजूद हैं?

डॉ० ज़ाकिर नाइक.. बहन ने सवाल किया है कि मैंने ऐसी बहुत सी साइंसी सच्चाइयों के बारे में बात की है जिनका ज़िक्र क़ुरआन मजीद में मौजूद है। तो क्या ऐसी गणित की सच्चाइयां भी हैं? किया क़ुरआन-ए-मजीद में गणित के हवाले से भी बात की गई है?

जी हां, क़ुरआन ने ऐसी बहुत सी बातें हमारे सामने पेश की हैं जिनका सम्बंध गणित से है। सबसे पहले तो हम अरस्तु के पेश किए हुए उसूल के बारे में बात करते हैं कि हर बयान या तो सही होगा या ग़लत। यानी हर बयान सही भी हो सकता है और ग़लत भी। सदियां गुज़र गई और हर कोई इस उसूल को सही मानता रहा। 100 साल पहले तक इस उसूल को सही समझा जाता रहा। सिर्फ़ 100 साल पहले ही एक व्यक्ति ने यह सवाल उठाया कि हर बयान के सही या ग़लत होने की सम्भावना मौजूद है तो इसका अर्थ यह हुआ कि ख़ुद यह बयान भी या तो सही होगा या ग़लत। अगर यह सही है तो ठीक, लेकिन अगर यह ग़लत है तो फिर? इस सूरत में गणित की पूरी व्यवस्था ही बिगड़ जाती है।

इसके बाद गणित के वैज्ञानिकों ने एक नया तरीक़ा अपनाया। उन्होंने कहा कि जब भी आप कोई शब्द प्रयोग करते हैं उसके दो अर्थ हो सकते हैं। यानी एक तो पारिभाषिक अर्थ और एक असल अर्थ। कुछ समय आप उस शब्द ही के बारे में बात कर रहे होते हैं उसके अर्थ के बारे में नहीं। मैं आपके सामने एक मिसाल पेश करता हूं।

मान लीजिए एक बच्चा जिसका नाम अकबर है। मैं उसके बारे में कहता हूं:

"अकबर छोटा है"

अब अर्थ के लिहाज़ से मैं बिल्कुल ठीक कर रहा हूं। अकबर

एक छोटा लड़का है। लिहाज़ा यह कहना बिल्कुल सही है कि अकबर छोटा है। लेकिन एक अरबी जानने वाला व्यक्ति मेरी बात पर ऐतराज़ कर देता है। वह कहता है कि अकबर छोटा नहीं है। "अकबर बड़ा है।" अकबर का अर्थ ही "बड़ा" होता है। अब हुआ यह है कि मैं एक शब्द का ज़िक्र कर रहा था। इस शब्द को इस्तेमाल नहीं कर रहा था।

एक और मिसाल पर ध्यान दीजिए। मान लीजिए मैं कहता हूं: "3 हमेशा 4 से पहले आता है।

कोई मेरी इस बात से मत्भेद नहीं करेगा। हर कोई यही कहेगा कि मैं सही कह रहा हूं। वाक़ई 3 हमेशा 4 से पहले आता है लेकिन हो सकता है कि एक शक करने वाला इस बात पर ऐतराज़ करे। वह मुझे बताएगा कि अंग्रेज़ी डिक्शनरी में **Three** हमेशा **Four** के बाद आएगा। क्योंकि शब्द **'T'** हमेशा शब्द **'F'** के बाद ही आता है। यहां मुआमला उलट हो गया। मैं बात प्रयोग के लिहाज़ से कर रहा हूं लेकिन वह शक करने वाला एक ऐसी मिसाल दे रहा है जहां सिर्फ़ ज़िक्र हुआ है। इस्तेमाल नहीं हुआ।

यानी जब आप एक शब्द से काम लेते हैं तो उसकी दो सम्भावित शक्लें हो सकती हैं। या तो आप उस शब्द का ज़िक्र कर रहे होंगे और या उस शब्द को प्रयोग कर रहे होंगे।

अपनी बातचीत के दौरान मैंने सूर:निसाअ की यह आयत आपके सामने पेश की थी।

اَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ وَلَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللّٰهِ لَوَجَدُوْا فِيْهِ اخْتِلَافًا كَثِيْرًا ۝ (النساء:۸۲)

"किया यह लोग क़ुरआन पर ग़ोर नहीं करते? अगर यह अल्लाह के सिवा किसी और की तरफ़ से होता तो उसमें बहुत कुछ अलग-अलग बातें पाई जाती।"

इस आयत का अर्थ बिल्कुल स्पष्ट है। और आज तक कोई क़ुरआन में से इख़्तिलाफ़ (अनेकता) की कोई मिसाल पेश नहीं कर सका। यानी क़ुरआन कलाम-ए-ख़ुदावंदी है। लेकिन मान लीजिए यहां

भी एक शक करने वाला आता है और कहता है कि मैं कु़रआन में इख़्तिलाफ़ (अनेकता) दिखा सकता हूं। मैं पूछता हूं कि कहां वह कहता है कि "सूर:निसाअ, आयत नम्बर 82 में "इख़्तिलाफ़ (अनेकता)" का शब्द इस आयत में मौजूद है। लिहाज़ा कु़रआन का बयान ग़लत साबित हो जाता है।"

अब इख़्तिलाफ़ का शब्द तो वाक़ई कु़रआन में मौजूद है तो क्या यह वाक़ई एक ग़लती है? (नऊज़ूबिल्लाह)। मैं यह कहता हूं ठहरो, इस आयत को ध्यान से पढ़ो। यहां कहा जा रहा है कि "बहुत से इख़्तिलाफ़ात होते" जबकि तुम सिर्फ़ एक जगह इख़्तिलाफ़ का शब्द दिखा रहे हो। यानी कु़रआन का बयान ही सही है। क्योंकि कु़रआन बहुत से इख़्तिलाफ़ात (अनेकताओं) के बारे में कह रहा है और इख़्लिताफ़ का शब्द कु़रआन में एक ही बार इस्तेमाल हुआ है, ज़्यादा तादाद में इस्तेमाल नहीं हुआ।

लेकिन इस तरह मैं उसके सवाल का जवाब नहीं दे सकूंगा। क्योंकि एक और शक करने वाला उठेगा और कहेगा कि देखो कु़रआन कहता है कि अगर यह किसी और की तरफ़ से होता तो तुम इसमें "ज़्यादा अनेकताएं" पाते। और आप देख सकते हैं कि "ज़्यादा अनेकताओ" के शब्द इस आयत में मौजूद हैं। लिहाज़ा साबित हुआ कि कु़रआन अल्लाह की तरफ़ से नहीं है। (नऊज़ूबिल्लाह)

मुझे अंदाज़ा है कि बात ज़रा ज़्यादा उलझन वाली हो गई है। समझना ज़रा मुश्किल हो गया है लेकिन मैं एक आसान मिसाल पेश करूंगा।

बात ऊपर लिखी आयत की हो रही थी। इस आयत-ए- करीमा में यह नहीं कहा गया कि:

"अगर कु़रआन में ज़्यादा अनेकताएं हों तो यह अल्लाह की तरफ़ से नहीं है।"

बल्कि फ़रमाया जा रहा है:

"अगर यह ग़ैर-अल्लाह की तरफ़ से होता तो इसमें ज़्यादा अनेकताएं होती।"

और इसी लिए शक करने वालों का बयान सही नहीं। पहली सूरत में उनकी बात सही हो सकती थी लेकिन अल्लाह तआला ने बात इस अंदाज़ में बयान ही नहीं फ़रमाई। और ऊपर लिखी दोनों बातें अलग हैं। एक ही बात नहीं है। इस बात को समझने के लिए इस मिसाल पर ध्यान दें।

"बम्बई में रहने वाले तमाम लोग हिन्दुस्तानी हैं।"

यह एक सही बयान है। लेकिन इस बयान से अगर यह नतीजा निकाला जाए कि:

"तमाम हिन्दुस्तानी बम्बई में रहते हैं।"

तो यह नतीजा बिल्कुल ग़लत होगा। किसी बयान की उलटी शक्ल हमेशा सही नहीं होती। किसी वक़्त यह सूरत भी सही होती है और किसी वक़्त नहीं भी।

अब मैं एक सादा और आसान सी मिसाल से अपनी बात की व्याख्या करता हूं। कु़रआन-ए-मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है:

قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ صَلَاتِهِمْ خَاشِعُوْنَ ○ (المومنون:٢-١)

"यक़ीनन कामयाब हुए ईमान वाले जो अपनी नमाज़ में ख़ुशू (नम्रता) इख़्तियार करते हैं।"

यह आयत पढ़कर कोई कह सकता है कि ठहरें जनाब! मैं एक ऐसे मुसलमान को जानता हूं जो बड़ी ख़ुशी से पांच वक़्त नमाज़ पढ़ता है लेकिन वह धोखेबाज़ है, लोगों को लूटता है। हर समाज में काली भेड़े होती हैं लेकिन यहां कु़रआन की बात ग़लत साबित हो रही है। (नऊज़ूबिल्लाह) क्योंकि कु़रआन कह रहा है कि हकीक़ी मौमिन (मुसलमान) अपनी नमाज़ों में ख़ुशी अपनाते हैं।"

मैं उसे कहूंगा के ठहरों और कु़रआन के शब्दों को ध्यान से पढ़ो। कु़रआन यह बता रहा है कि हकीक़ी ईमान वाले नमाज़ों में नम्रता लाते हैं। यह नही कह रहा कि नमाज़ में ख़ुशी अपनाने वाला हर

6

व्यक्ति कामयाब मुसलमान है। अगर क़ुरआन ने यह कहा होता कि नमाज़ में ख़ुशू (नम्रता) लाने वाले तमाम लोग मौमिन (मुसलमान) हैं तो यह बात ग़लत साबित हो सकती थी। लिहाज़ा अल्लाह तआला रियाज़ी (गणित) को सबसे ज़्यादा जानने वाला है। वह जानता है कि ऐसे शक करने वाले भी हैं जो क़ुरआन में ग़लतियां तलाश करेंगे, लिहाज़ा वह चुने हुए शब्दों को प्रयोग करता है।

मैं एक मिसाल और पेश करना चाहूंगा, क़ुरआन-ए-मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है:

إِنَّ مَثَلَ عِيسٰى عِنْدَ اللّٰهِ كَمَثَلِ اٰدَمَ خَلَقَهٗ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ۰ (آل عمران:۵۹)

"अल्लाह के नज़दीक ईसा की मिसाल आदम की सी है कि अल्लाह ने उसे मिट्टी से पैदा किया और हुक्म दिया कि हो जा और वह हो गया।"

आयत का अर्थ बिल्कुल साफ़ है। बताया जा रहा है कि ईसा और आदम दोनों को अल्लाह तआला ने मिट्टी से पैदा फ़रमाया, अर्थ बिल्कुल साफ़ है लेकिन अगर आप ध्यान दें तो एक बात यह भी है कि क़ुरआन मजीद में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का ज़िक्र 25 बार आया है और हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का ज़िक्र भी 25 बार हुआ है, यानी अर्थ के लिहाज़ से अगर दोनों बराबर हैं तो दोनों का ज़िक्र भी समान संख्या में हुआ है।

इस क़िस्म की बहुत सी मिसालें क़ुरआन में मौजूद हैं। सूर:आराफ़ में फ़रमाया गया:

وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنٰهُ بِهَا وَلٰكِنَّهٗ اَخْلَدَ اِلَى الْاَرْضِ وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ الْكَلْبِ اِنْ تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهَثْ اَوْ تَتْرُكْهُ يَلْهَثْ ذٰلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ (الاعراف:۱۷۶)

"अगर हम चाहते तो उसे इन आयतों के ज़रिए से बुलंदी अता करते, मगर वह तो ज़मीन ही की तरफ़ झुक कर रह गया और अपने नफ़्स ही की इच्छा के पीछे पड़ा रहा लिहाज़ा उसकी हालत कुत्ते की सी हो गई कि तुम उस पर हमला करो तब भी ज़बान लटकाए रहे और उसे छोड़ दो फिर भी ज़बान लटकाए रहे। यही मिसाल है उन लोगों की जो हमारी आयात को झुटलाते हैं।"

"आयात को झुटलाने" के शब्द क़ुरआन-ए-मजीद में पांच बार आए हैं और कुत्ते के लिए अरबी शब्द कल्ब भी पांच बार आया है। यानी मश्बा और मश्बा-ब (जिसकी किसी दूसरी वस्तु से तुलना की गई हो) अर्थ के लिहाज़ से तो समान हैं ही, उनका ज़िक्र भी समान किया गया है।

وَلَا الظُّلُمٰتُ وَلَا النُّوْرُ ۰ (فاطر:۲۰)

"और न अंधेरे और रौशनियां समान हैं।"

अरबों में अंधेरे के लिए शब्द "ज़ुलमात" इस्तेमाल होता है जबकि रौशनी के लिए नूर का शब्द प्रयोग होता है। ज़ुलमात का शब्द क़ुरआन मजीद में 24 बार प्रयोग हुआ है जबकि "नूर" का शब्द क़ुरआन में 23 बार आया है। यानी न सिर्फ़ यह कि अर्थ के लिहाज़ से दोनों समान नहीं हैं बल्कि दोनों का ज़िक्र भी समान संख्या में नहीं हुआ है। दोनों बराबर नहीं हैं क्योंकि 23 और 24 बराबर नहीं हैं।

गोया क़ुरआन ने जिन्हें समान क़रार दिया उनका ज़िक्र भी समान संख्या में किया और जिन्हें भिन्न कहा उनका ज़िक्र भी अलग है। उम्मीद है आप को अपने सवाल का जवाब मिल गया होगा।

प्र०-: मैं यह पूछता हूं के क़ुरआन में कहा गया है कि अल्लाह तआला कुछ लोगों के दिलों पर मुहर लगा देता है। लेकिन आज हम सब जानते हैं कि सोचने का काम दिल नहीं बल्कि दिमाग़ करता है। क्या आप इस बात की व्याख्या कर सकते हैं?

डॉ० ज़ाकिर नाइक ... बहन ने बहुत अच्छा सवाल किया है। बहन ने सवाल पूछने से पहले यह भी बताया कि वह नव-मुस्लिमा हैं। मैं पहले तो उन्हें भी तीन बार मुबारकबाद देता हूं। उन्होंने पूछा यह है कि अल्लाह क़ुरआन-ए-मजीद में कुछ जगहों पर फ़रमाता है कि कुछ लोगों के "दिलों पर मुहर लगा दी जाती है।" और यूं इन लोगों के सुधार की उम्मीद ख़त्म हो जाती है। मैं उनकी बात से सहमती करता हूं कि वाक़ई क़ुरआन-ए-मजीद में ऐसे फ़रमान मौजूद हैं।

इनका सवाल यह है कि आज साइंस हमें बताती है कि सोचने का काम दिल नहीं बल्कि दिमाग़ करता है तो फिर क़ुरआन यहां दिल का ज़िक्र क्यों कर रह है। पुराने ज़माने में लोगों का यही ख़याल था कि सोचने का काम दिल करता है। तो क्या यहां (नऊज़ूबिल्लाह) क़ुरआन का बयान ग़लत है?

क़ुरआन-ए-मजीद की एक और आयत में अल्लाह तआला फ़रमाता है:

قَالَ رَبِّ اشْرَحْ لِى صَدْرِىْ ٥ وَيَسِّرْ لِىْٓ اَمْرِىْ ٥
وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانِىْ يَفْقَهُوْا قَوْلِىْ ٥ (طٰہٰ:٢٨-٢٥)

"मूसा अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया: "परवरदिगार, मेरा सीना खोल दे और मेरे काम को मेरे लिए आसान कर दे। और मेरी ज़बान की गृह को सुलझा दे ताकि लोग मेरी बात समझ सकें।"

यहां भी यही दुआ की जा रही है कि मेरा सीना यानी दिल खोल दे। बात यह है कि अरबी शब्द से एक अर्थ तो सीना या दिल होता है। और दूसरे "केंद्र"। शब्द सदर का एक मतलब केंद्र भी होता है। अगर आपको कराची जाने का इत्तिफ़ाक़ हुआ हो तो वहां एक इलाक़ा है कराची सदर- सदर कराची से मतलब होता है कराची का केंद्र। यानी शब्द सदर से मतलब केंद्र है। तो क़ुरआन यहां यही बता रहा है कि सोचने समझने के केंद्र पर मुहर लगा दी जाती है। और इस केंद्र से मतलब दिमाग़ भी हो सकता है। इसी लिए मैं दुआ करता हूं कि या अल्लाह मेरी समझ व अक़्ल के केंद्र को खोल दे। (आमीन)

उम्मीद है आपको अपने सवाल का जवाब मिल गया होगा।

प्र०-: ज़ाकिर साहब क्या यह टकराव नहीं है कि क़ुरआन कुछ जगहों पर इबलीस को जिन क़रार देता है और कुछ जगह फ़रिश्ता?

डॉ० ज़ाकिर नाइक.. भाई ने सवाल पूछा है कि कई जगहों पर इबलीस को फ़रिश्ता कहा गया है और फिर एक जगह पर क़ुरआन उसे जिन क़रार देता है तो किया यह टकराव नहीं है? बात यह है कि

क़ुरआन कई जगहों पर इबलीस व आदम अलैहिस्सलाम का क़िस्सा बयान करता है। यह क़िस्सा क़ुरआन-ए-मजीद में कई सूरतों में मौजूद है। मिसाल के तौर पर सूर:बक़रह, सूर:आराफ़, सूर:हिज्र, सूर:असरा, सूर:ताहा, सूर:साद आदि। इन तमाम सूरतों में यही बात की गई है कि जब फ़रिश्तों को हुक्म मिला कि आदम अलैहिस्सलाम के सामने झुक जाएं तो सब सिजदे में झुक गए सिवाए इबलीस के, जिसने सिजदा करने से इन्कार कर दिया। ऊपर लिखी तमाम सूरतों में यही बात की गई है लेकिन एक जगह पर इबलीस को जिन क़रार दिया गया है। जिसके हवाले से भाई ने सवाल किया है। उन्होंने हवाला नहीं दिया यह सूर:कहफ़ की आयत है:

وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ اَمْرِ رَبِّهٖ ٥ (الكهف:٥٠)

"याद करो जब हम ने फ़रिश्तों से कहा कि आदम अलैहिस्सलाम को सिजदा करो तो उन्होंने सिजदा किया मगर इबलीस ने न किया, वह जिनों में से था इस लिए अपने रब के हुक्म को नहीं माना।"

इस आयत में इबलीस को जिन क़रार दिया जा रहा है। लिहाज़ा सवाल यह पैदा हुआ कि सात जगहों पर इबलीस का ज़िक्र फ़रिश्तों की गिनती में हो रहा है और फिर एक जगह पर उसे जिन क़रार दिया जा रहा है तो किया यह टकराव और विभिन्नता नहीं है?

बात यह है कि हम अंग्रेज़ी अनुवाद पढ़ते हैं और उनकी सहायता से क़ुरआन को समझते हैं लेकिन क़ुरआन अरबी ज़बान में उतरा था और अरबी का एक क़ायदा है जिसे "तग़लीब" कहते हैं। तग़लीब से मतलब होता है कि जब आप अकसरियत (बहुमत) का ज़िक्र करते हैं तो अक़्लियत (अल्पसंख्क) भी उसमें शामिल होती है। यानी जब आप लोगों की बहुतमत से सम्बोधित होंगे तो अल्पसंख्क को शामिल समझा जाएगा। मिसाल के तौर पर मान लीजिए एक जमात (समूह) में 100 विद्यार्थी हैं। जिन में से 99 लड़के हैं और एक लड़की। अब अगर में उन्हें कहूं:

"लड़को खड़े हो जाओ।"

तो वह लड़की भी खड़ी हो जाएगी क्योंकि वह तग़लीब के उसूल को समझती होगी। लेकिन अगर में अंग्रेज़ी में कहूं कि;

"All boys, Stand up."

तो सिर्फ़ लड़के खड़े होंगे, लड़कियां बैठी रहेंगी। क्योंकि अंग्रेज़ी भाषा में तग़लीब का उसूल मौजूद नहीं है।

लिहाज़ा बात यह है कि क़ुरआन अरबी ज़बान में उतरा था। और अरबी ज़बान में जब फ़रिश्तों को सिजदा करने का हुक्म दिया गया तो उससे पता चलता है कि बहुमत फ़रिश्तों की थी। इबलीस जिन था या फ़रिश्ता इस बात से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। क्योंकि हुक्म सब के लिए था।

इन तमाम आयात में यह बताने की ज़रूरत नहीं समझी जाएगी कि वह जिन था या फ़रिश्ता? क्योंकि तग़लीब के तरीक़े से हुक्म सब को मिला था। और सब के लिए इस पर अमल करना ज़रूरी था। लेकिन सूरःकहफ़ की बीसवी आयत में बता दिया गया कि वह एक जिन था।

दूसरी बात यह कि फ़रिश्ते अपनी मर्ज़ी के मालिक नहीं होते। उन्हें अल्लाह तआला के हर हुक्म पर बग़ैर किसी ऐतराज़ के अमल करना होता है।

जबकि जिन्नात एक इरादा रखने वाले प्राणी हैं लिहाज़ा इससे भी यह साबित हो जाता है कि वह एक जिन्न ही था। मुझे उम्मीद है, आप को अपने सवाल का जवाब मिल गया होगा।

प्र०-: अगर हम यह यक़ीन रखते हैं कि ख़ुदा सब कुछ करने की शक्ति रखता है तो फिर वह इंसानी सूरत क्यों नहीं इख़्तियार कर सकता?

डॉ० ज़ाकिर नाइक.. बहन ने सवाल पूछा है कि ख़ुदा सब कुछ करने की ताक़त रखता है तो फिर सवाल यह है कि अल्लाह तआला

इंसानी शक्ल क्यों नहीं इख़्तियार कर सकता? वह लोग जो ख़ुदा पर ईमान रखते हैं वह भी यह कहते हैं कि ख़ुदा सब कुछ करने की शक्ति रखता है जितने भी लोग ख़ुदा को मानते हैं सब ही यह बात करते हैं कि ख़ुदा सब कुछ कर सकता है सबसे पहले तो मैं यह पूछना चाहूंगा कि क्या वाक़ई ख़ुदा माफ़ौक़ुल फ़ितरत है। ख़ुदा को माफ़ौक़ुल फ़ितरत(**Super Natural**) कहने का मतलब तो यह है कि ख़ुदा एक वस्तु है और प्रकृति एक दूसरी वस्तु जिस पर ख़ुदा महानता रखता है। लेकिन बात यह है कि क़ुरआन में बयान की हुई ख़ुदा की कल्पना के अनुसार ख़ुदा को माफ़ौक़ुल फ़ितरत नहीं कहना चाहिए। क्योंकि प्रकृति तो ख़ुदा की मख़्लूक़ (प्राणी) है। अल्लाह तआला पैदा करने वाला है जिस ने प्रकृति (प्राणी) को पैदा फ़रमाया। लिहाज़ा यह हो ही नहीं सकता कि प्रकृति कुछ कहे और ख़ुदा कुछ और कहे।

आपकी प्रकृति यानी इंसानी प्रकृति भी अल्लाह ही की पैदा की हुई है। अल्लाह तआला के ख़ूबसूरत नामों में से एक "फ़ातिर" भी है। यह क़ुरआन-ए-मजीद की 35वीं सूरः का नाम भी है। फ़ातिर शब्द फ़ितरत (प्रकृति) ही से निकला है। इसका अर्थ होता है पैदा करने वाला, बनाने वाला, प्रकृति देने वाला, प्राणियों की असल प्रकृति बनाने वाला।

इसी तरह रमज़ानुल मुबारक में हम मग़िरब के वक़्त रोज़ा इफ़्तार करते हैं यानी रोज़ा तोड़ते हैं। इफ़्तार का अर्थ है रोज़ा तोड़ना। फ़ातिर का अर्थ है ख़ालिक़। वस्तु को बनाने वाला, शक्ल व सूरत देने वाला, फ़ितरत अता (देना) करने वाला।

क़ुरआन लोगों से कहता है कि क़ुदरत के दृष्यों पर ध्यान दो, सूरज और चांद के घूमने पर ध्यान दो यह सब प्रकृति के नियमों का पालन करते हैं। उनमें से कोई अपने दायरे से बाहर नहीं जाता।

इसी तरह अल्लाह की कल्पना भी बिल्कुल प्रकृति के ख़िलाफ़ है। क़ुरआन-ए-मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है:

وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ه (الاحزاب:۶۲)

"और तुम अल्लाह की सुन्नत में कोई बदलाव नहीं पाओगे।"

इसी तरह का पैग़ाम कुरआन-ए-मजीद में एक और जगह पर भी दिया गया है। सूर:रोम में अल्लाह तआला का फ़रमान है:

فِطْرَتَ اللّٰهِ الَّتِيْ فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا لَا تَبْدِيْلَ لِخَلْقِ اللّٰهِ ه (الروم:۳۰)

"क़ायम हो जाओ इस फ़ितरत पर जिस पर अल्लाह तआला ने इंसानों को पैदा किया है, अल्लाह के बनाए हुए तरीक़े को बदला नहीं जा सकता।"

आज कौनटम फ़िज़िक्स और नवीन साइंस हमें बताती है कि किसी देखने वाले के बिना किसी वस्तु का वुजूद कोई अर्थ नहीं रखता। यह कायनात भी बेकार है अगर इस पर नज़र रखने वाला कोई नहीं है। और अल्लाह तआला का एक नाम अश-शहीद भी है यानी गवाह। यानी ख़ुदा माफ़ूकुल फ़ितरत नहीं है बल्कि फ़ितरी है। जहां तक सवाल के दूसरे हिस्से का सम्बंध है कि ख़ुदा अगर सब कुछ करने की शक्ति रखता है तो वह इंसानी सूरत क्यों इख़्तियार नहीं कर सकता?

इस बात को समझाने के लिए मैं ख़ुदा पर ईमान रखने वालों से एक सवाल किया करता हूं ताकि अल्लाह तआला की कल्पना उनके लिए स्पष्ट हो सके, में पूछता हूं के क्या ख़ुदा हर वस्तु को पैदा कर सकता है?

और उनका जवाब होता है कि हां अल्लाह तआला हर वस्तु पैदा कर सकता है।

फिर मैं पूछता हूं कि किया अल्लाह तआला हर वस्तु को फ़ना करने की शक्ति रखता है?

उनका जवाब होता है:

हां, अल्लाह तआला हर वस्तु को फ़ना कर सकता है।

मेरा तीसरा सवाल होता है:

किया अल्लाह तआला कोई ऐसी वस्तु बना सकता है जिसे वह फ़ना न कर सके?

और यहां वह फंस जाते हैं। अगर वह जवाब हां में देते हैं कि ख़ुदा कोई ऐसी वस्तु बना सकता है जिसे वह फ़ना न कर सके तो इसका मतलब है कि वह अपने दूसरे बयान को मना कर रहे हैं यानी यह कि अल्लाह तआला हर वस्तु को फ़ना कर सकता है। और अगर वह जवाब न में देते हैं, अगर वह कहते हैं यानी यह कि अल्लाह तआला ऐसी वस्तु नहीं बना सकता जिसे वह फ़ना न कर सके तो वह अपने पहले बयान का इन्कार करते हैं यानी यह कि अल्लाह हर वस्तु बना सकता है।

बहुत से काम ऐसे हैं जो अल्लाह नहीं कर सकता। अल्लाह तआला एक लम्बे क़द का छोटे क़द का आदमी नहीं बना सकता। आदमी या तो लम्बे क़द का होगा या छोटे क़द का, अल्लाह तआला छोटे क़द को लम्बा कर सकता है लेकिन फिर वह छोटा क़द नहीं रहेगा वह लम्बे क़द को छोटा क़द कर सकता है लेकिन फिर वह लम्बा क़द नहीं रहेगा या वह उसका क़द बीच का कर सकता है जो छोटा होगा न लम्बा लेकिन वह एक इंसान को लम्बे क़द का बोना नहीं बना सकता।

मैं ऐसे हज़ारो कामों की सूची बना सकता हूं जो अल्लाह तआला नहीं कर सकता।

अल्लाह तआला नाइंसाफ़ी नहीं कर सकता। अल्लाह तआला झूट नहीं बोल सकता। वह यह तमाम काम नहीं कर सकता क्योंकि ख़ुदा होने का अर्थ यही है कि वह यह सब काम नहीं कर सकता। वह भूल नहीं सकता, वह अत्याचार नहीं कर सकता।

पूरी कायनात अल्लाह तआला की है। अल्लाह तआला मुझे मार सकता है, फ़ना कर सकता है, ख़त्म कर सकता है लेकिन किसी ऐसी जगह नहीं भेज सकता जहां उसका हुक्म न चलता हो। वह मुझे फ़ना कर सकता है लेकिन अपनी ख़ुदाई से बाहर नहीं निकाल सकता। क्योंकि सब कुछ उसी का है सब कुछ उसकी ख़ुदाई में है।

क़ुरआन कहीं यह नहीं कहता कि अल्लाह सब कुछ कर सकता है। क़ुरआन कहता है:

اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ

"बेशक अल्लाह तआला हर वस्तु पर क़ुदरत रखता है।"

क़ुरआन बताता है कि अल्लाह हर वस्तु पर शक्ति रखता है, कोई वस्तु ऐसी नहीं जो उसकी क़ुदरत से बाहर हो। यह बात क़ुरआन में कई जगहों पर कही गई है, बार-बार दोहराई गई है, सूर:बक़राह में, सूर:आले इमरान में, सूर:फ़ातिर में और कई दूसरी आयात में फ़रमाया गया है:

اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ

कहीं भी यह नहीं फ़रमाया गया कि अल्लाह हर काम कर सकता है और दोनों बातों में कि "अल्लाह हर काम कर सकता है" और "अल्लाह हर वस्तु पर क़ुदरत रखता है"

ज़मीन व आसमान का फ़र्क़ है।

बल्कि क़ुरआन-ए-मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है:

فَعَّالٌ لِّمَا یُرِیْدُ (البروج:١٦)

"वह जो कुछ चाहे कर डालने वाला है।"

यानी वह जो कुछ चाहता है, जिस बात का इरादा करता है, वही करता है। वह इरादा किस काम का करता है अल्लाह, सिर्फ़ अल्लाह के ही कामों का इरादा करता है। ख़ुदाई काम ही करता है। ऐसे काम नहीं करता जो उसके मरतबे (शान) से बहुत नीचे हों।

जहां तक आप के बुनियादी सवाल का सम्बंध है, तो वह यह है कि अल्लाह तआला इंसानी सूरत क्यों इख़्तियार नहीं कर सकता?

ख़ुदा के इंसानी सूरत इख़्तियार करने का फ़लसफ़ा "हूलूल" (गुडमुड होना) कहलाता है और इस फ़लसफ़े के मानने वालों ने अपनी एक मुन्तिक़ (ग़लत-बात) बना रखी है और वह यह कि अल्लाह तआला इंसानों की हिदायत के लिए, उनके दुख दर्द और

समस्याओं को समझने के लिए इंसानी शक्ल इख़्तियार करता है ताकि वह जान सके कि जब आप दुखी होते हैं तो क्या महसूस करते हैं, जब आप ख़ुश होते हैं तो किया महसूस करते हैं? और इस तरह वह इंसानियत के लिए बेकार बातें पैदा करता है। यह अक़ीदा-ए-हूलूल है।

लेकिन अगर आप तजज़िया करें तो मालूम होता है कि यह बात बिल्कुल कमज़ोर है। मान लीजिए मैं किसी वस्तु का पैदा करने वाला हूं। मान लीजिए मैं एक टेप रिकार्ड या टेलीविज़न इजाद करता हूं। अब यह मालूम करने के लिए कि इस टेप रिकार्ड या टी.वी. के लिए किया अच्छा है और किया बुरा, मुझे ख़ुद टेप रिकार्ड या टी.वी. बनने की कोई ज़रूरत नहीं है।

मुझे सिर्फ़ यह करना होगा कि एक हिदायती किताबचा लिख दूं कि इस टेप रिकार्ड को इस्तेमाल करने का तरीक़ा यह है? इसमें कैसेट किस तरह डाली जाएगी और कौनसा बटन दबाने से यह चल पड़े गा? कौन सा बटन दबाने से रुक जाएगा। यह बटन दबाएं तो फ़ारवर्ड होगा, वह बटन दबाए तो रिवाइंड होगा।

इसी तरह इंसानों की हिदायत के लिए ख़ुदा को ख़ुद इंसान बनने की कोई ज़रूरत नहीं। इंसानों को उनका भला-बुरा बताने के लिए वह सिर्फ़ यह करता है कि उन्हीं में से एक व्यक्ति को चुनता है और उसके द्वारा उन्हें हिदायती किताबचा उपलब्ध कर देता है।

यह किताबचा किया है? क़ुरआन-ए-मजीद ही वह हिदायत नामा है जिसके द्वारा इंसानियत को बेकार बातों से बचने की जानकारी दी गई। उन्हें बता दिया गया है कि उनके हक़ में किया अच्छा है और किया बुरा? क़ुरआन के ज़रिए उन्हें पूरी हिदायत उपलब्ध कर दी गई है, लिहाज़ा अल्लाह तआला को इंसानी सूरत इख़्तियार करने की ज़रूरत नहीं है।

आप पूछते हैं:

"किया ख़ुदा इंसानी सूरत इख़्तियार कर सकता है?"

मैं कहता हूं, हां, कर सकता है लेकिन जिस वक़्त वह इंसानी सूरत में आएगा वह ख़ुदा नहीं रहेगा। क्योंकि इंसान फ़ानी (मिटने वाला) है और अल्लाह लाफ़ानी (कभी न ख़त्म होने वाला)। कोई एक साथ फ़ानी और लाफ़ानी किस तरह हो सकता है?

इसी तरह इंसानों की कुछ विशेषताएं होती हैं। मिसाल के तौर पर उन्हें खाने-पीने की ज़रूरत होती है और क़ुरआन में अल्लाह तआला फ़रमाता है:

قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَتَّخِذُ وَلِيًّافَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُ وَلَايُطْعَمُ ط (الانعام:١٤)

"कहो, अल्लाह को छोड़ कर किया मैं किसी और को अपना सरपरस्त बनालूं? उस ख़ुदा को छोड़कर जो ज़मीन व आसमान का मालिक है जो रोज़ी देता है, रोज़ी लेता नहीं है।"

रोज़ी और ख़ुराक की ज़रूरत तमाम इंसानों को होती है। किया अल्लाह तआला को उसकी ज़रूरत है? हरगिज़ नहीं।

इसी तरह इंसान को नींद की भी ज़रूरत होती है लेकिन क़ुरआन में फ़रमाया गया है:

اَللّٰهُ لَآاِلٰهَ اِلَّا هُوَاَلْحَیُّ الْقَيُّوْمُ لَاتَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَانَوْمٌ ط (البقرہ:٢٠٠)

"अल्लाह, वह ख़त्म न होने वाली हस्ती जो तमाम कायनात को संभाले हुए है, उसके सिवा कोई ख़ुदा नहीं है, वह न सोता है और न उसे ऊंघ आती है।"

इंसान को सोने की भी ज़रूरत पड़ती है और आराम की भी। उसे खाने की भी ज़रूरत होती है और पीने की भी। जिस वक़्त आप ख़ुदा के इंसानी सूरत में आने की या माफ़ूक़ुल फितरत होने की बात करते हैं तो गोया आप काफ़िर और देहरिये के हाथ में वह छड़ी दे देते हैं जिस से वह आपको पीट सकता है।

लिहाज़ा ख़ुदा माफ़ूक़ुल फितरत नहीं, बिल्कुल प्रकृतिक है और वह इंसानी सूरत इख़्तियार नहीं कर सकता।

उम्मीद है कि आप को अपने सवाल का जवाब मिल गया होगा।

प्र०-: मैं एक ईसाई हूं। मेरा सवाल यह है कि इस्लाम हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में यह मानता है कि उन्हें आसमान पर

उठा लिया गया था। जबकि हज़रत मुहम्मद(स.अ.व.) के बारे में ऐसा अक़ीदा (विश्वास) नहीं रखा जाता। इसी तरह मुसलमान यह भी मानते हैं कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम करिश्माई तौर पर बिना बाप के पैदा हुए थे। किया इससे यह पता नहीं चलता कि अगर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ख़ुदा नहीं हैं तो फिर वह हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) से अफ़ज़ल ज़रूर हैं। तो आप इस्लामी शिक्षा के साथ-साथ ईसा अलैहिस्सलाम की शिक्षा कयों पेश नहीं करते?

डॉ० ज़ाकिर नाइक...भाई ने एक बहुत अच्छा सवाल पूछा है। लेकिन इस क़िस्म के सवाल ज़्यादातर मिशनरियों की तरफ़ से, मसीही मुबल्लिग़ीन (धर्म प्रचारक) की तरफ़ से पूछे जाते हैं। मैं नहीं जानता कि यह भाई एक मुबल्लिग़ (धर्म प्रचारक) हैं या नहीं लेकिन इस क़िस्म के सवाल ज़्यादातर वही करते हैं। उन्होंने दो-तीन मिसाले दीं। मिसाल के तौर पर यह कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को ज़िन्दा आसमान पर उठा लिया गया था या यह कि उनका जन्म एक करिश्माई तौर पर बिना बाप के हुआ था। जबकि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (स.अ.व.) को आसमान पर भी नहीं उठाया गया। उनके पिता भी थे और मां भी।

इस क़िस्म के सवालात के बाद वह पूछते हैं कि अफ़ज़ल कौन है? ज़ाहिरी तौर पर यही मेहसूस होता है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम। इसी तरह पूछा जाता है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का ज़िक्र नाम लेकर क़ुरआन-मजीद में 25 बार किया गया है। जबकि हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) का सिर्फ़ पांच बार। तो अफ़ज़ल कौन है? और हमारे ख़याल में आता है कि इस तरह तो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ही अफ़ज़ल हैं।

तो भाई! आप चाहते हैं कि मैं हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के हवाले से बात करूं। तो बात यह है कि इस्लाम वह तन्हा ग़ैर-ईसाई धर्म है, जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की रिसालत को मानता है।

हमारे नज़दीक यह ईमान की शर्त है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की रिसालत को माना जाए। हम उनके बग़ैर बाप के जन्म पर भी यक़ीन रखते हैं हालांकि आज के दौर के बहुत से ईसाई भी इस बात पर ईमान नहीं रखते।

हम यह भी यक़ीन रखते हैं कि वह अल्लाह के हुक्म से मुर्दों को ज़िन्दा करते थे, अल्लाह के हुक्म से अन्धों को रौशनी दिया करते थे।

लेकिन यहां हमारी राहें अलग हो जाती हैं। हम हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को खुदा हरगिज़ नहीं समझते। और न ही हम उन्हें खुदा का बेटा समझते हैं। हम उन्हें अल्लाह तआला का पैग़म्बर मानते हैं।

अब हम आपके सवाल की तरफ़ आते हैं कि अगर क़ुरआन यह बताता है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को ज़िन्दा आसमान कर उठा लिया गया था जबकि हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) को आसमान पर नहीं उठाया गया तो फिर दोनों में से अफ़ज़ल कौन है?....

क़ुरआन में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के हवाले से अल्लाह तआला फ़रमाता है:

يَـٰٓأَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِىْ دِيْنِكُمْ وَلَا تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ إِلَّا الْحَقَّ
إِنَّمَا الْمَسِيْحُ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَسُوْلُ اللّٰهِ وَكَلِمَتُهٗ ط (النساء:١٧١)

"ए एहले किताब! अपने दीन में गुलू (हद से आगे बढ़ना) न करो और अल्लाह की तरफ़ हक़ के सिवा कोई बात न जोड़ो। मसीह ईसा इब्ने मरयम अलैहिस्सलाम उसके सिवा कुछ न था कि अल्लाह का एक रसूल था और एक फ़रमान था।"

इस पवित्र आयत में ग़ुलू (हद से आगे बढ़ना) से मना किया गया है? एक तरफ़ यहूद थे जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की रिसालत ही का इन्कार कर रहे थे और उन्हें झूटा कह रहे थे। जबकि ईसाई उन्हें खुदा क़रार दे रहे थे। दोनों तरफ़ इन्तिहा पसन्दी थी।

खुदा सिर्फ़ एक ही है। ईसाईयत पेश करने का सबब ग़लतफ़हमी पेश करना था। इनकी दोबारा आमद (आना) रसूल के तौर पर नहीं होगी। वह हमें नई शिक्षा देने के लिए नहीं आएंगे।

सूर:मायदा में अल्लाह तआला फ़रमाता है:

اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِىْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا ط (المائدہ:٣)

"आज मैं ने तुम्हारे दीन को तुम्हारे लिए पूरा कर दिया है और अपनी नेमत तुम पर तमाम कर दी है। और तुम्हारे लिए इस्लाम को तुम्हारे दीन की हैसियत से क़बूल कर लिया है।"

हम मुसलमान यह अकीदा (विश्वास) रखते हैं कि वह दोबार तशरीफ़ लाएंगे। लेकिन वह कोई नई शिक्षा नई शरीअत देने के लिए नहीं आएंगे। बल्कि वह ख़ुद फ़रमाएंगे:

"या बारी तआला, तू गवाह है कि मैंने इन लोगों को कभी अपनी इबादत (पूजा) करने का हुक्म नहीं दिया। मैंने उन्हें कभी नहीं कहा कि मुझे खुदा का बेटा समझें।"

हक़ीक़त में वह ईसाइयों ही के लिए तशरीफ़ लाऐंगे मुसलमानों के लिए नहीं।

दूसरी बात आप करते हैं कि उनके बग़ैर बाप के जन्म लेने के हवाले से। अगर आप उन्हें इस वजह से खुदा क़रार देते हैं कि वह बग़ैर बाप के पैदा हुए थे तो इस बात का जवाब क़ुरआन इन शब्दों में देता है:

اِنَّ مَثَلَ عِيْسٰى عِنْدَ اللّٰهِ كَمَثَلِ اٰدَمَ خَلَقَهٗ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ○ (آل عمران:٥٩)

"अल्लाह के नज़दीक ईसा की मिसाल आदम की सी है। कि अल्लाह ने उसे मिट्टी से बनाया और हुक्म दिया कि हो जा और वह हो गया।"

क्या हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का कोई बाप था?

नहीं। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का बाप नहीं था। बल्कि उनकी मां भी नहीं थी। अगर इस आधार पर आप हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को खुदा क़रार देते हैं तो फिर हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को उनसे बड़ा खुदा क़रार देना चाहिए (नऊज़ुबिल्लाह)

इंजील तो एक असाधारण इंसान King Malchisedec का भी ज़िक्र करती है, जिसकी न कोई शुरूआत थी और न ख़ात्मा।

जहां तक सवाल है क़ुरआन मजीद में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का ज़िक्र 25 बार होने का और हज़रत मुहम्मद रसूल अल्लाह (स.अ.व.) का ज़िक्र सिर्फ़ पांच बार होने का तो इसके कारण भी बिल्कुल स्पष्ट हैं। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर (यहूद की तरफ़ से) आरोप थे जब कि नबी करीम (स.अ.व.) पर कोई आरोप नहीं था जिसका जवाब दिया जाना ज़रूरी होता। जब क़ुरआन उतर रहा था तो हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) खुद वहां मौजूद थे। जो व्यक्ति आप के सामने मौजूद हो उसको बार-बार मुख़ातिब करने या उसका नाम लेने की ज़रूरत नहीं होती। लेकिन जो दोस्त मौजूद न हो उसका ज़िक्र आप हर बार नाम लेकर करेंगे।

लिहाज़ा हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम चूंकि उस वक़्त मौजदू नहीं थे, जब क़ुरआन उतर रहा था, लिहाज़ा उनका ज़िक्र हर बार नाम लेकर किया गया। और अगर यही मैयार है तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का ज़िक्र तो 132 बार किया गया है तो किया वह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) दोनों से अफ़ज़ल हैं? नहीं। बल्कि वजह सिर्फ़ यह है कि चूंकि वह मौजूद नहीं थे, इस लिए उनका ज़िक्र हर बार नाम लेकर किया जाना ज़रूरी था।

उम्मीद है आप को अपने सवाल का जवाब मिल गया होगा।

प्र०-: मेरा सवाल यह है कि क़ुरआन में फ़रमाया गया है कि अल्लाह के अलावा कोई भी नहीं जानता कि मां के पेट में लड़का है या लड़की? हालांकि आज ऐसे नए तरीक़े मालूम हो चुके हैं जिनकी मदद से आसानी के साथ बच्चे के लिंग की जानकारी हो सकती है। इस सूरत-ए-हाल में आप किया व्याख्या करेंगे?

डॉ०ज़ाकिर नाइक...बहन ने सवाल पूछा है कि क़ुरआन के अनुसार अल्लाह तआला के अलावा कोई नहीं जानता कि गर्भ में पलने वाले बच्चे का लिंग किया है? मैं उनकी बात से सहमती करता हूं कि आज ऐसे कई नए टेस्ट मालूम हो चुके है जिनकी मदद से बच्चे का लिंग मालूम हो सकता है। तो किया यह एक ग़लती है?

बहन क़ुरआन-ए-मजीद की जिस आयत की तरफ़ इशारा कर रही है वह सूर:लुक़मान की एक आयत है। इस आयत करीमा में अल्लाह तआला फ़रमाता है:

اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ وَيُنَزِّلُ الْغَيْثَ وَيَعْلَمُ مَا فِى الْاَرْحَامِ وَمَا تَدْرِىْ نَفْسٌ مَّاذَا تَكْسِبُ غَدًا وَمَا تَدْرِىْ نَفْسٌ بِاَىِّ اَرْضٍ تَمُوْتُ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ (لقمٰن:٣٤)

“उस घड़ी का (क़यामत) ज्ञान अल्लाह ही के पास है, वही बारिश बरसाता है, वही जानता है कि माओं के पेटों में किया पल रहा है। कोई जानदार यह नहीं जानता कि कल वह किया करने वाला है और न किसी व्यक्ति को यह ख़बर है कि किस जगह पर उसको मौत आनी है। अल्लाह ही सब कुछ जानने वाला और बाख़बर है।”

इस पवित्र आयत में बताया गया है इन पांच बातों का ज्ञान अल्लाह तआला के सिवा किसी को नहीं है। जहां तक बच्चे के लिंग के हवाले से आपके सवाल का सम्बंध है तो बात यह है यह सिर्फ़ ग़लतफ़हमी है जिसकी वजह अनुवाद मुख्य तौर पर कुछ उर्दू अनुवाद हैं। जिन में इस आयत का यह अनुवाद किया गया है कि सिवाए अल्लाह तआला के कोई बच्चे के लिंग के बारे में नहीं जानता। आयत में लिंग का ज़िक्र ही नहीं है। क़ुरआन यह कह रहा है कि सिवाए अल्लाह तआला के कोई नहीं जानता कि गर्भ में किया है? क़ुरआन बच्चे के लिंग के हवाले से बात नहीं कर रहा है बल्कि उस बच्चे के किरदार और शख़्सियत के हवाले से बात कर रहा है। किया वह बच्चा नेक होगा, ईमानदार होगा या बेईमान? वह समाज के लिए किया किरदार अदा करेगा? वह इंजीनियर बनेगा? डाक्टर बनेगा और यक़ीन कीजिए अपने तमाम चिकित्सा ज्ञान और साइंसी जानकारी के बाद भी यह बातें आज भी वक़्त से पहले कोई नहीं बता सकता। लिहाज़ा यह सिर्फ़ ग़लत अनुवाद से पैदा होने वाली ग़लत फ़हमी है। आप डिक्शनरी देख सकते हैं। ऐसी डिक्शनरी भी हैं जो ग़ैर-मुस्लिमों की हैं। उनमें से Lane Lexicon सब से ज़्यादा मशहूर है। आप इनकी मदद से ख़ुद देख सकते हैं कि इन पवित्र आयतों में लिंग का ज़िक्र मौजूद ही नहीं है।

इस आयत मे यह भी फ़रमाया है कि यह भी सिवाए अल्लाह तआला के किसी की जानकारी में नहीं हैं कि क़यामत कब आएगी। ऐसे लोग भी है जिन्होंने क़यामत आने की भविष्य वाणी कीं। मिसाल के तौर पर नवम्बर 1992ई० में **"Times of India"** में यह ख़बर आई कि कोरिया के किसी चर्च ने यह ऐलान किया कि दुनिया नवम्बर 1992ई० में ही ख़त्म हो जाएगी।

इस चर्च से जुड़े तमाम लोग ऊपर लिखी तारीख़ को इस चर्च में इकट्ठे हुए लेकिन हुआ किया? कुछ भी नहीं। दुनिया आज भी क़ायम है और क़यामत की भविष्य वाणी करने वाले लोगों के पैसे लेकर भाग गए।

लेकिन हो सकता है कुछ लोग कहे कि तरक़्क़ी याफ़्ता देशों जैसे अमेरिका में यह भविष्य वाणी ठीक होती है। चलिए हम उनकी बात मान लेते हैं। मान लीजिए कि वहां वाक़ई सूचनाएं सही होती हैं लेकिन किया आप जानते हैं कि मौसम-विभाग बारिश की भविष्य वाणी किस तरह करता है? इसके लिए बादलों की मौजूदगी का जायज़ा लिया जाता है। फिर हवा का रूख़ देखा जाता है और यह कोई बहुत बड़ी बात नहीं है क्योंकि इस अवस्था में बारिश तो बादलों में मौजूद होती है। सिर्फ़ बरसने का अंदाज़ा लगाना होता है।

यह तो ऐसी ही बात है जैसे कोई विद्यार्थी परिक्षा दे, जिसका नतीजा एक महीने बाद आना हो। तीन सप्ताह बाद वह उसताद जिसने परचे चेक किए हैं वह भविष्यवाणी करे कि वह विद्यार्थी अव्वल आएगा। इसमे कोई ख़ूबी नहीं क्योंकि परचे चेक करने की वजह से उसे वह जानकारी पहले ही हासिल हो गई है जो दूसरे लोगों को एक सप्ताह बाद हासिल होगी।

बात तो जब है कि मौसम-विभाग किसी ख़ास इलाक़े के बारे में बग़ैर बादलों को देखे यह बताए कि 200 साल बाद वहां बारिश होगी या नहीं? मैं चुनौती देता हूं कोई भी मौसम विभाग 200 साल की भविष्यवाणी करे कि दुनिया में कहां कितनी बारिश होगी और वह कभी ऐसा नहीं कर सकेंगे।

उसके बाद मौत का मुआमला आता है। कुछ लोग यह कहते हैं कि एक आत्माहत्या करने वाला यह बता सकता है कि वह कहां और किस वक़्त मरेगा लेकिन हम जानते हैं कि आत्माहत्या की कोशिश करने वालो की संख्या असफ़ल हो जाती है। दुनिया में कितने प्रतिशत लोग आत्माहत्या करने की कोशिश करते हैं? एक बहुत ही मामूली और न क़ाबिल-ए-ज़िक्र संख्या। और वह भी अपनी कोशिश में असफ़ल हो जाते हैं। कुछ लोग ज़हर खाते है फिर किसी को बता देते है। उन्हें अस्पताल पहुंचाया जाता है और उनकी जान बचा ली जाती है।

अगर आप कही से छलांग मारते हैं तो फिर यह ज़रूरी नहीं कि आप मरने में सफ़ल हो ही जाएंगे। अगर अल्लाह आपको बचाना चाहे तो फ़िर भी बचा सकता है और अगर आप मर जाते हैं तो फिर भी अपनी मर्ज़ी से नहीं बल्कि अल्लाह की मर्ज़ी से ही मरते हैं।

और जहां तक आख़िरी बात का सम्बंध है कि किसी को यह नहीं मालूम कि वह क्या कमाएगा तो उसके बारे में आप कह सकते हैं कि भाई ज़ाकिर मुझे पता है कि मैं 2000 रूपय कमाऊंगा। मेरी मासिक आमदनी 2000 रूपय है। तो किया क़ुरआन का बयान ग़लत है?

नहीं, क्योंकि क़ुरआन आप की आर्थिक आमदनी के बारे में बात नहीं कर रहा। दुनियावी कमाई का ज़िक्र नहीं कर रहा। यहां शब्द "तकसब" इसतेमाल हुआ है और इससे मुराद अच्छे बुरे आमाल भी होते हैं। और जहां तक नेक आमाल का सम्बंध है वह अगर आप करते भी हैं तो आप को यह जानकारी तो नहीं हो सकती कि आप कितना सवाब (पुन्य) कमा रहे हैं।?

इसी तरह अगर आप से कोई गुनाह हो जाता है तो फिर भी आप यह नहीं जानते कि इसकी आप को कितनी सज़ा मिलेगी। इन तमाम बातों का हिसाब अल्लाह ही के पास है।

मुझे उम्मीद है कि आप को अपने सवाल का जवाब मिल गया होगा।

प्र०-: अरुन शौरी ने इस्लाम के ख़िलाफ़ कई लेख और किताबें लिखी हैं। आप उन्हें चुनौती यानी सार्वजनिक बहस की चुनौती क्यों नहीं देते?

डॉ० ज़ाकिर नाइक.. सवाल पूछा गया है कि में अरुन शौरी को बहस की चुनौती क्यों नहीं देता, जिसने इस्लाम के ख़िलाफ़ किताबें लिखी हैं। बात यह है कि में यह किताबें पढ़ चुका हूं। उसके अधिकतर आर्टिकिल का सम्बंध दो बारिकियों से होता है। एक तो वह औरतों के हवाले से बात करता है कि इस्लाम औरतों को समान अधिकार नहीं देता और दूसरे वह यह कहता है कि इस्लाम एक देहशत गर्द धर्म है। यह एक बेरहम और ज़ालिम धर्म है। और उसके अलावा कुछ इधर-उधर की बातें जैसा कि एक भाई ने सवाल पूछा था कि क्या (नऊज़ूबिल्लाह) ख़ुदा रियाज़ी (गणित) नहीं जानता? हम इन बातों का तजज़िया कर सकते हैं और यक़ीन कीजिए इस की तमाम बातें शिक्षा को नज़र अन्दाज़ करके, ग़लत हवालों और ग़लत अनुवाद को बुनियाद बनाकर की गई हैं। मैं उन तमाम बातों की व्याख्या कर सकता हूं और कर रहा हूं।

अगर आप उसकी किताब **(World of Fatwas, Shariah in Action)** का जायज़ा लें जो कुछ दिन पहले बम्बई से प्रकाशित हुई है। उसके **Title** पर क़ुरआन-ए-मजीद की आयत दर्ज की गई है:

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗۤ اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَيْنَهُمْ ط (الفتح:٢٩)

"मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं और जो लोग उनके साथ हैं वह कुफ़्फ़ार पर सख़्त और आपस में रहीम हैं।"

यहां भी उसने वही काम किया कि इबारतों से अलग करके एक बात पेश कर दी है और यह असर पेश करना चाहा कि मुसलमान ग़ैर-मुस्लिमों के हक़ में बेरहम हैं। अगर आप इस आयत को सही पूरी इबारत में पढ़ना चाहें तो यह बात आयत नम्बर 25 से शुरू हो रही है। और फ़रमाया जा रहा है कि वह लोग, कुफ़्फ़ार जिन्होंने मुसलमानों को मस्जिद-ए-हराम में दाख़िल होने और क़ुरबानी करने से

रोका था, उनके हक़ में मुसलमान सख़्त हैं। यहां ज़िक्र उन कुफ़्फ़ार का हो रहा है जिन्होंने मुसलमानों को हज का फ़रीज़ा अदा करने से रोका था, आप ख़ुद बताईए कि अगर आज कोई ईसाईयों को वैटिकिन सिटी में दाख़िल होने से रोके तो ईसाई उसे अच्छा समझेंगे या बुरा?

या मान लीजिए कोई एक हिन्दू को बनारस में दाख़िल होने से रोक दे तो किया वह हिन्दू इस रोकने वाले को पसन्द करेगा?

क़ुदरती बात है कि वह उसे पसन्द नहीं करेगा। यहां भी अगर आप इबारतों का बहुत ध्यान से अध्ययन करें तो यही बात की जा रही है कि वह लोग जिन्होंने मुसलमानों को मक्का मुकर्रमा में दाख़िल होने और हज का फ़र्ज़ अदा करने से रोका है मुसलमानों को उनके हक़ में सख़्त और आपस में अच्छा बरताव करना चाहिए।

इस किताब के पृष्ठ 571 और 572 पर वह अपनी पसंदीदा आयत का हवाला देता है। यह सूर:तोबा की पांचवीं आयत है, जिसका हवाला वह बार-बार देता है:

فَاِذَا انْسَلَخَ الْاَشْهُرُ الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ
وَخُذُوْهُمْ وَاحْصُرُوْهُمْ وَاقْعُدُوْا لَهُمْ كُلَّ مَرْصَدٍ فَاِنْ تَابُوْا وَاَقَامُوا
الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَخَلُّوْا سَبِيْلَهُمْ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ٥ (التوبہ:٥)

"पस जब हराम महीने गुज़र जाएं तो मुशिरकीन (जो अल्लाह को न माने) को क़त्ल करो, जहां पाओ और उन्हें पकड़ो और घेरो और हर घात में उनकी ख़बर लेने के लिए बैठो। फिर अगर वह तोबा कर लें और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात दें तो उन्हें छोड़ दो। अल्लाह नज़र अंदाज़ करने वाला और रहम फ़रमाने वाला है।"

यहां भी वही मुआमला है कि बात इबारतों से अलग करके की जा रही है। यहां बात सूर:तोबा की पहली आयत से शूरू हो रही है। और उन मक्के के मुशिरकीन का ज़िक्र किया जा रहा है जिन्होंने मुसलमानों से एक अमन का समझोता किया था और फिर एक तरफ़ा तौर पर समझोते को तोड़ दिया। समझोते की ख़िलाफ़वरज़ी की। इस लिए यहां अल्लाह तआला की तरफ़ से उन्हें स्पष्ट रूप से ख़बरदार

कर दिया गया कि या तो चार माह के दौरान मुआमलात सीधे कर लो और या जंग के लिए तैयार हो जाओ। और मुसलमानों को कहा गया कि जंग के दौरान उन्हें जहां पाओ क़त्ल कर दो।

मान लीजिए अमरीका और वेतनाम की लड़ाई के दौरान अमरीका का सदर अपने फ़ौजियों को कहता है कि जंग के दौरान दुश्मनों को जहां पाओ क़त्ल कर दो और मैं आज यह बात आप के सामने इस तरह करता हूं कि;

"अमरीकी सदर कहता है कि वेतनामियों को जहां पाओ क़त्ल कर दो।"

तो यक़ीनन अमरीका का सदर आप को क़साई ही लगेगा। लेकिन जंग में कोई भी जरनेल या सरबराह हुकूमत यही कहेगा कि डरो मत और अपने दुश्मनों को क़त्ल करो। वह इसी तरह उनका होसला बुलंद रख सकता है। फिर पांचवी आयत के बाद वह सीधा सातवीं और आठवीं आयत पर पहुंच जाता है। छटी आयत को नज़र अंदाज़ कर देता है, क्यों?

इस लिए कि इस आयत में उसके ऐतराज़ का जवाब मौजूद है। इस आयत में फ़रमाया गया है कि अगर कोई तुम से पनाह मांगे तो उसको पनाह दो। और फिर उसे सुरक्षित जगह पहुंचा दो। अगर वह इस्लाम क़ुबूल न भी करें, फिर भी जिस मुश्रिक (अल्लाह का इन्कार करने वाला) ने पनाह मांगी है, उसे अमन की जगह तक पहुंचाओ।

आज कौन सा जरनेल अपने फ़ौजियों को यह आदेश दे सकता है कि अगर दुश्मन पनाह मांगे तो उसे सुरक्षित स्थान पर पहुंचा कर भी आओ। सिर्फ़ माफ़ करने या छोड़ देने की बात भी नहीं हो रही बल्कि सुरक्षित स्थान पर अमन के साथ पहुंचाने का हुक्म दिया जा रहा है।

मैं पूछना चाहता हूं कि आज कौन सी फ़ौज, कौन सा जरनेल यह हुक्म दे सकता है?

लेकिन क़ुरआन यही हुक्म दे रहा है।

लेकिन अपने प्यारे विषय यानी मुसलमानो को ज़ालिम साबित करने के लिए अरुन शौरी इसी तरह इबारतों से हट कर हवाले पेश करता है।

उसका दूसरा पसंदीदा विषय "औरतों के हुक़ूक़"* है और यहां भी आयात के हवाले देता है। और यह वही आयात हैं जिनका हवाला तस्लीमा नसरीन जैसे लोग देते हैं।

आप मुझ से पूछते हैं कि मैं अरुन शौरी से बहस क्यों नहीं करता?

मैंने एक बार तस्लीमा नसरीन के हवाले से होने वाली एक बहस में शिर्कत की थी जिसका आयोजन "बम्बई यूनियन ऑफ़ जरनलिस्ट" ने किया था। जब मैंने इस बहस की वीडियों रिकार्डिंग की इजाज़त मांगी तो मुझे नहीं दी गई। हालांकि इस बहस का विषय था:

"किया धार्मिक कट्टरपन आज़ादी के इज़हार की राह में रुकावट है?"

यानी विषय तो आज़ादी का इज़हार है लेकिन मुझे वह बातचीत रिकार्ड करने की इजाज़त नहीं दी गई, क्या यह मुनाफ़िक़त (जिसके दिल में कुछ हो और ज़बान पर कुछ) नहीं है? मैंने उन्हें कहा कि वह भी इस रिकार्डिंग की कापी रख सकते हैं लेकिन फिर भी वह इजाज़त नहीं देना चाहते थे। आख़िरकार काफ़ी बहस के बाद मुझे इस बहस को रिकार्ड करने की इजाज़त मिली और आप जानते हैं किया हुआ?

हुआ यह कि अल्लाह तआला की मेहरबानी से मैं बहुत सफ़ल रहा। वह लोग इस्लाम को क़ुरबानी का बकरा बनाना चाहते थे, ज़ाकिर नाइक को क़ुरबानी का बकरा बनाना चाहते थे लेकिन अल्लाह तआला की मेहरबानी से बहस बहुत सफ़ल रही। इसमें मेरी ज़ाती योग्यता का कोई दख़ल नहीं था सिर्फ़ अल्लाह का करम था कि मैं

---

*उर्दू अनुवाद **"इस्लाम में ख़्वातीन के हुक़ूक़"** के नाम से **अल-हसनात** बुक्स प्रा० लि० से प्रकाशित किया जा चुका है

सफ़ल रहा और इतना सफ़ल रहा कि किसी एक अख़्बार ने भी इस बहस की ख़बर नहीं लगाई।

ईसाईयों की तरफ़ से इस बहस पर फ़ादर परेरा मौजूद थे हिन्दुओं का प्रतिनिधित्व डॉ० वेद व्यास कर रहे थे। मुसलमानों की तरफ़ से मैं था और तस्लीमा नसरीन की किताब का मराठी अनुवाद करने वाले अशोक साहब भी बहस में शरीक थे। अगर इस बहस की रिकार्डिंग न की जाती तो भला किस को इस बारे में पता चलता? लेकिन आज सिर्फ़ बम्बई में नहीं बल्कि पूरी दुनिया में लाखों लोग यह रिकार्डिंग देख चुके हैं।

और अरुन शौरी के इस हवाले से सारे ऐतराज़ात के उत्तर भी एक कैसेट में मौजूद हैं। इस कैसेट के दो हिस्से हैं। पहले हिस्से में मेरी बातचीत है और दूसरे हिस्से में सवालात के जवाबात हैं। (1) और इनमें वह सवालात भी शामिल हैं जो अरुन शौरी उठाता है।

रहा सवाल अरुन शौरी के साथ बहस का, तो किया वह इस क़ाबिल है कि उसके साथ बहस की जाए? वह हरगिज़ इस क़ाबिल नहीं है। लेकिन मैं उसके साथ किसी भी वक़्त बहस करने के लिए तैयार हूं। वह आए............

शर्त यही होगी यह बहस सरेआम होगी, लोगों के सामने होगी, बन्द कमरे में नहीं और इसकी सीधे रिकार्डिंग भी होगी।

बहुत बहुत शुक्रिया

☆☆☆